# ব্যাকরণকৌমুদী

# ঐ ঈশ্বচন্দ্র বিদ্যাসাগর প্র গীত।

----

চতুৰ্থ ভাগ।

नवम मः ऋत्।

# কলিকাতা

সংস্কৃত ধন্ত্ৰ।

मर्व९ > व हुए।

PUBLISHE -- HE CALCUTTA LIBRARY, No. 25, Sookeab' Street. Calcutta. 1888.

# বিজ্ঞাপন

ব্যাকরণকৌমুদীর শেষভাগ প্রচারিত হইল। এই ভাগে মৃতন প্রণালী অবলম্বিত হইয়াছে। অনেকে, ব্যাকরণকৌমুদীতে সংস্কৃত স্থত্র দিবার নিমিত্ত, সবিশেষ অমুরোধ করেন। ঐ অনু-রোধের তাৎপর্য্য এই যে, বাঙ্গালা ভাষায় সঙ্ক-লিত স্থূত্র অপেক্ষা অপেক্ষাক্বত অপ্পাক্ষরে গ্রাথিত সংস্কৃত <del>স্থ</del>ত্র অনায়াসে কণ্ঠস্থ করা ও স্মৃতিপথে রাখা যাইতে পারে। তাঁহাদের অন্পরোধ যুক্তি-যুক্ত বোধ হওয়াতে, এই ভাগে সংস্কৃত স্থ্ৰ সন্নিবেশিত হইল, এবং, ঐ হেতু বশতঃ, পূর্ব তিন,ক্রাগেও, ক্রমে ক্রমে, এই প্রণালী অব-লম্বিত হইবেক। সকল স্থুত্র মূতন সঙ্কলিত নছে; অনেক স্থলে, পাণিনিপ্রণীত সূত্র অবিকল উদ্ধৃত হইয়াছে।

# এীঈশ্বরচক্র শর্মা

কলিকাতা। সংবৎ ১৯১৮। ২০এ মাঘ।

# मृष्ठी

			शृ <mark>ष</mark> ्ठे			পংক্তি
বিভক্তিনির্ণয়	ſ					
বিভক্তিলক্ষণ			>			ર
বিভক্তিবিভা	গ		2		•••	۲
প্রথমা			2	•••	•••	77
<b>দিভী</b> য়া			ર		•••	78
ভূভীয়া			৩		• • •	70
চতৃৰ্থী	•••	•••	à			9
পঞ্মী			9		•••	>
য <b>ন্ত্ৰী</b>		•••	৯		•••	. 70
সপ্তমী		•••	78		•••	৯
কারক						
কারকলক্ষণ			2 9	•••	•••	à
কারকবিভাগ			29		•••	9
অপাদান	•••	•••	39	•••	•••	۵
সম্প্রদান			79		•••	<b>?•</b>
করণ	,	•••	٤5			2
অধিকরণ	<b>.</b>	•••	٤5		•••	9
কৰ্ম	•••	•••	<b>3 2</b>	• • •	•••	71-
ক <b>ৰ্দ্ত</b> 1	•••	• * *	₹8	• 0 •	···	8

			পৃষ্ঠ			গংক্তি
তদ্ধিত						
<b>অ</b> কৃ	•••		b-0		•••	<b>\$</b> &
<b>অ</b> ত্	•••	• • • •	90	•••	•••	39
<b>অ</b> তস্থ		•••	<b>৮</b> 9	•••	•••	અ
<b>অ</b> সি	•••	•••	<b>&gt;</b> 9	•••	•••	₹•
<b>অ</b> ন্তাত্	•••	•••	৮৬	•••	•••	٥٥
অ†কিনি	•••	•••	<b>b</b> -0	•••		25
<b>আ</b> ত্	•••	•	b- 9	•••	•••	71-
আতি	•••	•••	b-9	•••	••	7.7
আমিন্			90	•••	•••	8
আলু	•••	•••	90	• • •	•••	9
আহি		•••	<b>b</b> 9	•••	•••	72
हेक्	•••		<b>b</b> 0	•••	•••	۵۵
ইত	•••	•••	43	•••	•••	٤5
ইথুক্	***	•••	<b>৬</b> 8	•••		25
ं हेन्	•••		<b>৬</b> 9	•••	•••	>
<b>हे</b> नि		•••	92			৬
ইমনি	•••	•••	<b>a</b> 9	•••	•••	59
<b>ट</b> ेब्र	•••	•••	৩৬	•••	•••	75
ইল'	•••	•••	46	•••	•••	71-
रेर्डन	•••	•••	92	,		72
क्रेब्रन्थ्न	•••		10	•••	•••	2
উর	`	•••	42	•••	•••	৩
ATA		•••	re		•••	9

201					7	
			र्भव			পংক্তি
এনপ্	•••		<b>►</b> 9	•••		26
কণ্	•••	•••	৩৬		•••	>5
कन्			8/9	•••		7,2
कन्	•••	•••	<b>⊳</b> o <sup>6</sup>	•••	•••	२७
কল্প	•••	• • •	90		•••	२२
কাণ্ড	•••	•••	৩৮	•••	•••	25
কিন্			90	•••	•••	٥ د
কু <b>ত্ত</b> ত্	•••	•••	939	•••	•••	75-
<b>শ</b> শু		•••	৩৮	•••	•••	ック
চণ	***	•••	۵۵	•••	•••	20
চভমাম	•••	•••	90	•••	•••	25
চভরাম্	•••	•••	94	•••	•••	75
চন	•••	•••	۴۵	•••	•••	۲
চরট্	•••	•••	<b>▶</b> 0	•••	•••	a
চশস্	•••	•••	99	•••	•••	59
চিত্	•••	***	<b>₽</b> ∂	•••	•••	፟
চ্	•••	•••	49	•••	•••	20
<b>∑</b> ₩	•••	•••	۵۵	•••	•••	2 @
<b>জা</b> তীয়		•••	95	•••		১৩
জাহ	•••	•••	95	•••	••••	>5
ş		•••	45,	•••	•••	৩
ড	•••	•••	<i>જ</i> ર	***	•••	8
<b>७</b> च्	****	•••	ઝર	***	•••	\$8
ডভম	•••	• - •	90	•••	•••	8

			পৃষ্ঠ			প <b>ংক্তি</b>
ডভর			98	•••		২৩
ডভি			<i>∞</i> ,2	•••	•••	22
ভয়ট্		•••	৬,	***		२०
ডাচ্		•••	27			20
ডামহ		•••	95	•••	•••	२७
ডিম	•••	•••	<b>b</b> b	•••	•••	76-
ডুল		•••	95	•••		>>
ডুতুপ্	•••	•••	৬৬	•••		۵
ডুলপ্		•••	৬৯	•••	•••	75
नीन्	•••		৩৬	•••	•••	>5
ভনষ্	• • •	,	<b>৮</b> 9		•••	२२
তমট্	•••	•••	৬৩	•••		2 0
ভমপ্	•••	•••	92		•••	>>
তয়ট্		•••	৩৯	•••		20
ভরট্	•••		৮২	• • •	•••	9
তরপ্	***	•••	90	•••	•••	7
তল্		•••	৩৮	•••	•••	72
ভল্	•••	•••	<b>4</b> 9	•••	•••	*
ভসিল্,		•••	৮২	•••	•••	7.7
তি '	•••	•••	92	***	•••	20
তিকন্		1	82	• 💸	• • •	5
ভিপুক্	<b>`</b>	••••	৬৪	•••	* ***	9
ভৈলন্	•••	•••	95	***	•••	₽-
ত্ত্	•••	***	المُ الم	••	•••	२२

			<b>शृ</b> हे			পংক্তি
<b>€</b> J			누৯		• • • •	8
ভাৰ্	•••	•••	F-3	•••		2
ত্রল্	•••	•••	৮৩		•••	৬
ত্রাচ্	••		٠ ده	•••		7 •
ৰ		***	æ 9		•••	৬
<b>পা</b> ল্	•••	•••	Fa	•••	•••	٤5
<b>म प्र</b> ष्ट्	•••	•••	৬০	•••	•••	>9
न	•••		<b>6-8</b>		•••	9
<b>कानी</b> म्	•••	•••	₽8	•••		२०
দেশীয়	•••	•••	90			25
দেখা	•••	• • •	90	• • •	•••	2 2
দয়সট্	•••	•••	•	•••	•••	39
ধাচ্	•••	•••	99	•••	•••	>>
<b>ধ</b> াচ্		•••	92			25
<b>েখ</b> য়	•••	•••	86	•••	•••	२७
নণ্	•••		80	•••		2
পাশ্	•••	•••	٥٠	•••	•••	2
ভ	•••	•••	9•		• • •	>8
মট্	•••	•••	<b>૭</b> ૨	•••	•••	71-
মতুপ্	•••	•••	∾ 8	•••		>€
মন্		•••	<b>b-b-</b>			78
<b>ম</b> য়ট্	·V·	<b>,</b>	96-		•••	8
<u> মাত্ট</u>	•••		٥.	•••	•••	39
ষ	•••	•••	<b>હ</b> ર		•••	7

			পৃষ			পং জ্বি
<b>ৰ্</b>	•••	•••	9 •		***	<b>२</b> २
র			৬৯			<b>5</b>
র	•••		٤٠			૭
<b>রূ</b> প	•••		90	•••		21-
রূপ্য		•••	٥٠	•••		৯
ল			৬৮		•••	٥٥
ব	,		৬৯	•••	•••	२२
বতিচ্	•••	• • •	60		•••	8
বভূপ্		•••	৬০	•••	•••	2 @
বল	•••	•••	৬৯	•••	•••	36
বিনি	•••	•••	યુષ્	•••	•••	28
ব্য	•••	•••	95	•••	•••	>>
m.l	•••	•••	৬৮	•••		2.5
ষণ্	•••	•••	۲۵	•••	•••	2 •
<u>ৰায়নণ্</u>	•••	•••	೨೦	•••	•••	٥ د
विक्न्	•••	•••	૭૭	•••		30
<b>ৰিণ্</b>	••.	•••	२৯	•••	•••	35
ষীকণ্	•••	•••	૭૭		•••	>>
ষীয়ণ্	•••	•••	૭	•••	•••	ь
বেয়ণ্	•••		૭ર	•••	•••	\$2
ষ্যণ্	•••	,···	90	•••		२०
<b>শাভি</b> চ্	•••	•••	90	· ·	•••	>5
স্থচ্	•••	•••	95	•••	•••	₹9
স্থান	•••	•••	98		•••	۵

	স্থা।						
				পৃষ্			পংক্তি
	স্থানীয়			93		•••	5
	হ	•••	•••	৮৩			52
	<b>र्ह</b> न्		•••	₽8		•••	> 8
প্র	প্রত্যয়						
	আপ্	•••	•••	৯৩	•••	•••	2.2
	<b>ब्र</b> ेश्	•••	•••	28	•••	•••	Œ
	উপ্	•••		2 0 8			20
স	মাস						
	সমাস <b>লক্ষ</b> ণ		•••	300		•••	2 0
	<b>অ</b> ব্যয়ীভাব	ī	•••	209	•••	***	৬
	ভ <b>ভ্পু</b> ক্ষ			275	•••	•••	2
	কর্ম্মধ†রয়			<b>১</b> २७	•••		৯
	দিগু	•••		ऽ१७	•••	•••	Œ
	ত <b>ভ্পু</b> রুষস	মাসাস্ত 1	বিধি	25 9	•••	•••	70
	ব <b>ছ</b> ত্ৰীহি	•••	•••	<i>५७</i> २	•••	•••	•
	षम्ब		•••	787		•••	>5
	<b>শ</b> ৰ্কাসমাস	নাধারণ (	বিধি	786	•••	•••	٧%
	व्यनूक् नम	াস		268	•••		٥٥
	মধ্যপদলে	াপী সমা	म	20F	•••	•••	•
	পূৰ্কনিপা	ত		<i>&gt;%</i>	•••	•••	2
	<u> বৰ্ক</u> দশাস	শেষ	•	১৯৩	i		79
	<b>তদ্ধিত</b> পরি	वेशिष्ट		700		•••	₹•

# ব্যাকরণকৌমুদী

# বিভক্তিনির্ণয়।

#### मंख्याकारकवोधियती विभक्ति:।

যাহা দ্বারা দংখ্যা ও কারকের প্রতীতি জন্মে, তাহাকে বিশুক্তি বলে। যথা, ঘटা, ঘতা, ঘটা, ঘটা:। এ দ্বলে ঘটশাকে প্রথমা বিশুক্তির যোগ থাকাতে, এক ঘট, দুই ঘট, বন্থ ঘট, এই দংখ্যার প্রতীতি জন্মিতেছে। चन्द्रं पद्यति, এ দ্বলে চল্লে দিতীয়া বিশু-ক্তির যোগ থাকাতে, চন্দ্র কর্মা কারক বলিয়া প্রতীতি জন্মিতেছে।

#### १। विभक्तयः सप्त।

প্রথমা, বিতীয়া, তৃতীয়া, চতুথী, পঞ্চমী, ষষ্ঠী, সপ্তমী, এই সাত বিশুক্তি।

#### প্রথমা।

#### ७। समिधेयमाते प्रथमा।

যে স্থলে ক্রিয়াপদ প্রভৃতি না থাকে, কেবল অভিধেয় (১) বুঝাই-বার নিমিত্ত, শব্দ প্রয়েশ্স করা যায়; দে খুলে দেই শব্দের উত্তর প্রথমা বিভক্তি হঁয়। যথা, হল্কঃ, তুরা, গুল্মম্, শিহিঃ, নহী,

(১) যে শব্দে যাহা বুঝায়, উহা সেই শব্দের অভিধেয়।

जनम्, रामः, सीता, सत्त्वायः, एकः, ही, अयः, ट्रीयः, खारी, प्रस्यः।

#### 8। वर्त्तीर।

কর্তারকে প্রথম বিভক্তি হয়। যথা, মিয়ু: ক্রীভ্রি, নী: মুক্তাবন, দিয়া নর্কানি।

#### ৫। सबोधने।

मरश्राधान প্रथमा विভक्ति रहा। यथा, हे पितः, हे आतारी, हे प्रचाः।

#### ७। प्रव्यवयोगे च।

के अञ्चिकिष्णित व्यात मान्यत त्याता, अर्थमा विक्रकि इत । यथा, व्यवोध्यानगरे दशरण इति ख्यातो कातिरासीत्; पापा-त्यनां सङ्गः परित्यक्तं सास्यतस् ; विषद्वचोऽपि संवर्षा खयं केनुस् व्यसास्यतस् ।

#### षिতীয়া।

# १। नर्भाषा दितीया।

कर्म कांद्रक विजीश विचक्ति इत। यथा, पुत्रमं चिनोति, असं सुङ्क्ते, जर्जं पिपति।

#### । कियाविधोषणो च।

क्रियांत विरागवत्य विजीया विजिक्त हम । अक्वार्ट्स ଓ क्रीविनास्त्र है श्रीरमार्ग हहेया थारक । यथा, सत्त्य धावति, द्वृतं पत्तायते, सह हसति, साधु भाषते ।

#### २। र्यंध्वनालाभ्यामत्यन्तसंयोगे।

অতাত্ত সংযোগ অর্থাৎ ব্যাপ্তি বুঝাইলে, অধ্ববাচক ও কালবাচক শব্দের উত্তর ছিতীয়া বিশুক্তি হয়। যথা, অধ্ববাচক—ক্রীয়া गिरिः स्थितः, योजनं श्वत्वेनातुगतः ; कानरांध्क-दिवससुप-वसति, मासमधीते। क्रोषं योजनं दिवसं मासं व्याप्येत्वर्थः।

# ১०। सभिपरिसर्वीभयेससनी:।

তস্প্রত্যরাম্ভ অভি, পরি, নর্মা, উভয়, এই কয় শব্দের যোগে, দিতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, আদদদিনঃ, ফর্ট দহিনঃ ভত্তান মর্ত্রনঃ, নহীন্তদযনঃ।

#### ५० प्रत्यनुधिङ्निकषान्तरान्तरेण्याविद्धः ।

প্রতি, অনু, ধিক্, নিক্ষা, অন্তর! (२), অন্তরেণ (১), যাবং, এই কয় শব্দের ঘোগে, ছিতীয়া বিভক্তি ৼয়। যথা, दीमं प्रति दया, राममञ्ज जातो बच्चायः, क्रमयां धिक्, यामं निक्षा नदी, स तां मां च खनरा उपविष्टः, श्रममन्तरेय विद्या न भवति, वनं यावदन्तस्रति।

#### ভূতীয়া।

#### ১२। हतीया करणे।

कर्त्व कांद्रक ज्ञोता विचिक्त रया। यथा, इस्तेन म्ट्याति, चन्नुषा पम्यति, कर्येन म्ह्योति।

#### ५७। सहार्थे:।

महार्थ निर्मात व्यारा, जुजीहा विकक्ति हह। यथी, रामः, सीतवा सन्द्रायोन च सह वनं नगाम, केनापि सार्द्ध विरोधो न कर्त्तव्यः। महार्थ निर्मात अञ्चरहार्राश्च जुजीहा हह। यथी पिता प्रस्त्रेया मच्चति, प्रस्नेया संकृत्यर्थः।

<sup>(</sup>২) যধ্য অর্থে।

#### **১८। जनवारणप्रयोजनार्थें**स्र।

উনার্থ, বারণার্থ, ও প্ররোজনার্থ শব্দের যোগে, তৃতীয়া বিভক্তি । যথা, উনার্থ—एकोन জনः, বিহারা দ্বীনः, ऋडद्वारेख শুন্তা। বারণার্থ—অভা বিবাইন, করন্থন কিন্। প্রয়োজনার্থ— ঘনিন দ্বীজন্ম, কীর্গ্রু: ফরন্থন।

#### ১৫। पध्वनालाभ्यामपवर्गे।

অপবর্গ অর্থাৎ ক্রিয়াসমাপ্তি ও ফলপ্রাপ্তি বুঝাইলে, অধ্ববাচক ও কালবাচক শব্দের উত্তর তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, অধ্ববাচক— ক্রীমীনান্তবাকীয়েখীন:। কালবাচক—ক্রিমিনন্তীমি: ক্রনম্, মান্তিন আক্রেমেখীনম্। মান্ত আক্রেমেখীন ন র জ্জুর্নি, এ স্থলে অধ্যয়নের ফলপ্রাপ্তি বুঝাইতেছে না, এজন্য মাস শব্দের উত্তর তৃতীয়া বিভক্তি হইল না।

# ১७। येनाङ्गेनाङ्गिनो विकार:।

যে অঙ্গ বিকৃত হওরাতে, অঞ্চীর বিকার লক্ষিত হয়, দেই আঙ্গর বাচক শব্দের উত্তর তৃতীয়া বিশুক্তি হয়। যথা, चसुषा काखाः, দাইন অঞ্লঃ, कर्षोन विधरः, एष्टेन कुखाः।

#### ५१। बच्चात्।

ষে লক্ষণ অর্থাৎ চিক্ক ছারা কোনও ব্যক্তি সূচিত হয়, সেই লক্ষণের বোধক শব্দের উত্তর তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, জতাদিঃ বাদমদাধ্যাদ, भूषाभिः মিশ্বদেহম্দ, ক্রনীয়া ক্রাক্সদার্থা ।

#### ५৮। प्रक्रत्यादिभ्यस्।

শ্বলবিশেষে, প্রকৃতি প্রভৃতি শদ্দের উত্তর তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, দলন্তা বাহঃ, জ্বদাবিদ বহরঃ, আজনা স্তুল্বং, জান্যা সাস্ক্রায়ঃ, गोलेश মাজিল্ফঃ, দালা বীদহারঃ, দাবীয়া হুঃজ্বিদঃ, वेगेन गच्छति, त्वरवा धावति, यह्नेन लिखति, सुखेन खपिति. दुःखेन याति, क्लेग्रेन बदति।

#### চতুর্থী।

#### ১৯। चतुर्थी सम्प्रदाने।

मम्भुमान कांत्रक ठजूशी विख्ङि इस । यथी, दरिद्राय धनं ददाति, भिच्चवे भिच्चां ददाति ।

#### २०। तादर्थे।

তामर्थ तूसारेल अर्था थान करा किया गारीत निमित्त अजिल्या क्यारेत निमित्त अजिल्या हारा करा करा क्यारे क्यारे

# २)। निरुत्ती निवर्त्तनीयात्।

निर्वि त्यारेल निर्वनीतात छेवत प्रवृथी विख्ण रत। यथा, मधकाय धूमः, मधकनिवत्तये इत्यथः; आतपाय क्रम्म, आतप-निवत्तये इत्यथः; पिपासाये जनम्, पिपासानिवत्तये इत्यथः; तापाय खानम्, तापनिवत्तये इत्यथः; रोगाय खोषधम्, रोग-निवत्तये इत्यथः; पापाय पायश्चित्तम्, पापनिवत्तये इत्यथः।

#### २२। सम्बद्यमानात् कृषादेः।

क>ि প্রভৃতি ধাতুর প্রয়োগে, সম্পদামানের উত্তর চতুর্থী বিভক্তি হয়। যথা, भितृषानीय कट्यते, ज्ञानं सुखाय सम्पद्धते, धन्धं स्वर्गीय मनति, स्वधन्धं नरकाय भवति।

#### २७। हितसुखनमोभिः।

হিত, সুখ, ও নমস্ শব্বের হোগে, চতুর্থী বিশুক্তি হয়। ষথা,

हितं पुच्नाय, सुखं भिष्याय, नमो गुरवे। क्रिशांकांकां दिकाल्य। यथी, गुरवे नमकास, गुर्व नमकास।

#### **२8। खिल्लाहाखधावषष्**भि:।

त्रस्ति, स्रांश, श्वथा, ও रष्टे मास्तित श्वारण, ठठुवी विख्यि ६त । यथा, ख्वस्ति प्रजाभ्यः, खाङा खम्बये, खधा पित्रभ्यः, इन्द्राय वषट्।

# २৫। समर्थायकैस।

সমর্থার্থক শব্দের যোগে, চতুর্থী বিভক্তি হয়। যথা, समधी मह्ना मह्नाय, खर्च मह्नो मह्नाय, घत्नो मह्नो मह्नाय, प्रभुमेह्नो मह्नाय। সমর্থার্থক ক্রিরার যোগেও চতুর্থী বিভক্তি হয়। যথা, प्रभवति मह्नो मह्नाय, घत्नोति मह्नो मह्नाय।

#### २७। मन्यकर्माखनादरे विभाषा।

অবজা বুঝাইলে, निर्वामिशनीय मन शंजूत অবজ্ঞাবোধক কর্মে বিকল্পে চতুর্থী বিভক্তি হয়। যথা, स त्यां स्याय मन्यते, नासं तां जुक्कुराय मन्ये। পক্তে दिजीया। मृशालानि (८) कर्म्य इय ना। यथा, त्यामकं स्ट्रगालं मन्ये।

# २१। वा गत्ययंक्तर्याण चेष्टायाम्।

চেক্টা বুঝাইলে, গতার্থ ধাতুর কর্মে বিকশে চতুর্থী বিভক্তি হয়।
যথা, অনায গক্ষনি, বজায বজানি। পক্ষে ছিতীয়া। চেকটা
না বুঝাইলে হয় না। যথা, দলয়া দল্মনা গক্ষনি। অধ্ববাচক
শব্দ কর্ম হইলে হয় না। যথা, ক্ষান্তা গক্ষনি, দল্মান গক্ষনি।

<sup>( 8 )</sup> শুগাল, কাক, শুক, নৌ, অন।

#### পঞ্চমী।

#### ५४। अपादाने पश्चमौ।

অপাদান কারকে পঞ্চমী বিভক্তি হয়। যথা, অস্থান্ দরিন:, ফলোস্ব্ভিন:, লভাত্তিলে:।

#### २ । त्यनोपे कर्मास्यधिकरणे च।

লাপ্প্রতায়ান্ত পদের অপ্রয়োগে, কর্মে ও অধিকরণে পঞ্চমী বিভক্তি হয়। যথা, प्रासादात् प्रेचते, प्रासादमाक् ह्या इत्सर्थः ; আম্বাदেव जोकयति, खासने उपविषय इत्सर्थः ।

#### ७०। कालाध्वनोरवधेः।

कालभित्रमां ७ अक्षभित्रमां तूकारेल, अविधितांधक मास्त्र उठित भक्षमी विक्रिक रहा। यथः, कालभित्रमां — सप्तावसात् पञ्च मासाः, माघात् हतीये मासि, विवाद्वात् सप्तमे दिने। अक्ष-भित्रमां — पाटि सिद्धात् यतं कोषाः, प्रवागात् विष्यत् कोषाः, सर्वे मात् द्य योजनानि।

# ७)। निस्तरा देकोत्कर्षे।

मूरे वा वक्षत्र मध्या अक्षत्र छेश्कर्घ वृक्षारेल, निकृत्केत छेडत् शक्ष्मी विक्रिक रत्र। यथा, धनात् विद्या गरीयसी, चेली मैलात् बसीयान्, मासुराः पाटनियुक्तनेश्य खाखतराः।

#### ७२। मर्खादाभिविध्योरायोगे।

गर्यामा ও अञ्चिति त्रूबाहेल, आ अहे अतार्थ गरकत त्यार्थ शक्ष्मी द्विञ्चित है है । यथी, गर्यामा—स्मा जन्मनः, स्मा में मानत्, स्मा ससदात्, स्मा ससदात्, स्मा सस्तात् । अञ्चिति सि—स्मा मनात् इप्पो हैनः, वनं व्यास्म इत्यर्थः ; स्मा सस्तात् बस्ता, सक्त व्यास्म इत्यर्थः ।

#### ७७। चन्यार्थै:।

अनार्थ गत्यत् त्याता, शक्ष्मी विङक्ति रहा। यथा, मिलादन्यः कः परिलातुं समर्थः, घटः पटादितरः, इदमसाङ्गित्रम्। अनार्थ क्रियात त्याता रहा । यथा, स्त्रीं रस्ताङ्गिदाते।

#### ७८। दिन्देशकालवाचिभि:।

मिश्री हक, प्रभावीहक, अ कोलवीहक मास्त्र शिक्षा, श्रक्ष्मी विख्कि इत । यथा, मिश्रीहक—पूज्यों चामात्, उत्तरी व्हहात् । प्रभावीहक-चैत्रो मेत्रात् पूर्व्वदेशे । कोलवीहक—चैत्रात् पूर्वः फाम्सुनः, भीज-नात् प्राक्, श्यनात् पूर्वम्, ख्यानात् प्रतः, प्रखानादनन्तस् ।

#### ७৫। विचरारात्मस्रतिभि:।

विश्नि, आतां , अ প্রভৃতি শব্দের যোগে, পঞ্চমী বিভক্তি ইয়।
यथा, च्यात् विद्याः, चामात् विद्यः (५), चारात् वनात्, खारात् उद्यानात्, जन्मनः प्रस्ति, भैभवात् पश्चति ।

#### ७७। चा चाहिभ्याञ्च।

वा अ व्याहि श्रेष्ठाशास गाम्बत व्याहा, श्रक्षमी विकक्ति इहा। यथा, जद्यानादुत्तरा ग्टइस्, ग्टइहादुत्तराहि सरः, हिसास्यात् दिविषा भारतवर्षस्, प्रयागात् दिविषाहि विन्थः।

#### ७१। ऋतेयोगे हितीया च।

ঞ্জেশদ্ধের যোগে, পঞ্চমী ও ছিডীয়া বিশুক্তি হয়। যথা, স্মানা-তুরি, স্মানুষ্কর।

#### ৩৮। **ঘথন্দিনাম্মা দ্বিনীযান্তনী দি ।** পৃথক্ ও বিন<sup>ু</sup> শদ্ধের যোগে, পঞ্চমী এবং বিভীয়া ও ভৃতীয়া

<sup>(</sup> ६) ক্রমদীরর, বহি:শব্দের যোগে, পঞ্চমী ও গ্রী, উভয় বিভক্তিরই বিধান করিয়াছেন।

विङ्क्ति रत्। यथाः चैतात् प्रयक् चैतं प्रयक् चैत्रेण प्रयक्; व्यक्षात् विना, व्यक्षं विना, व्यक्षेण विना।

# ৩৯। स्तोनसञ्चात्यनतिपयेभ्यस्तृतीया च।

रद्वाक, कृष्ट्, जन्म, किल्पत्र निर्मत खेटत श्रक्ष्मी ও ज्जीता विच्टिन इत्। यथी, स्तोकान्युक्तः, स्त्रीकेन सक्तः; कच्छान्युक्तः, कच्छेण सक्तः; चल्पान्युक्तः, चल्पेन सक्तः, कितप्यान्युक्तः, कित-पयेन सक्तः। विद्यायम इदेल इत् मा। यथी, स्त्रोकः पाकः, स्त्रोकं पचित्।

#### 80। हेतीच।

रिष्ठ तूकारित, जाहाधक गामत खेतत शिक्षती अ ज्जीता विस्रक्षित । यथी, धनात् कुलम्, धनेन कुलम् ; भयात् कम्पः, भयेन कम्पः ; इषीत् कास्पति, इषीय कास्पति ; दृःखात् रोदिति, दृःखेन रोदिति ।

#### 85। षष्टी सम्बन्धे।

ममुक्त रही विञ्कि रहा। यथी, मम पिता, तव पुत्तः, तस्य भाता, महिषस्य ऋङ्गम्, गोर्दुग्धम्, नद्या जनम्, रजस्य ह्याया, खम्नेः शिखा, वायोर्षेगः, जनस्य प्रवाद्यः।

# 82। कर्नृकर्माणोः स्रति।

कृष्यं उत्तर श्राह्म कर्ता उत्तर्भ वर्षे विश्व हिन् रहा। यथा, कर्ता आक्राः चयनम्, स्वश्वस्य गितः, तव पिपाद्वा, मम नुमुत्ता। क्रां अस्त स्वाह्म पातः, पयसः पानम्, सुखस्य भोगः, धनस्य दाता, दक्तस्य केदकः।

#### ৪৩। **তথ্যসামী নন্মব্যি।** কর্ত্তা ও কর্ম উভয়ত্ত প্রাপ্তিসম্ভাবনা হইলে, কেবল কর্মে বন্ধী

विङक्षि व्य । यथा, गयां दोस्रो गोपेन, प्रयसः पानं शिशुना, धनस्य दानं ऋषेण, जनस्य ग्रोषणं स्वर्येण, अर्थस स्टर्णं चौरेण।

#### 88। कचिहिभाषा कत्तरि।

(कान ७ कोन ७ चूटन, कर्डा इ विक त्थि विश्व कि इत्र । यथी, घटस्य कृतिः कुम्मकारेण कुम्मकारस्य वा, चन्द्रस्य दिहस्या नवा सम वा, शिक्यस्य प्रयंता सुरुषा स्रोवी, शब्दानामस्यासनम् स्वाचार्येण स्वाचार्यस्य वा।

#### ८८। न घता देः।

गण्, मान्, कमू, कान्ण, माण्, अ मार्यान প্रভावत श्रिवाल, विश्विक श्रु ना । यथी, गण्नावहं मच्चन्, जलं पिवन् (७)। मान्य — बलं भुञ्जानः, व्याकरणमधीयानः । कमू — कोदनं पेविवानः, यामं लिक्यानान् । कान्य — सुकं ववन्दानः, श्रास्तं सुश्च वाणः । माण् — व्यकं गिम्यान्, वेदं पिष्टिच्यन् । मार्यान — सुकं विविद्यमाणः, धनं दाख्यमानः ।

#### ८७। न तुसुनाहेः।

जूर्न, क्नी, लाभ्, अ १ मून् প्रजास्त श्रेसारित, यक्नी विस्तिक इस ना। यथा, जूर्न्—स्ट गन्तम्, चन्द्रं द्रह्म्। क्नी—कसंपीता, फलं स्ट्होताः लाभ्—व्याकर्यमधीत्म, स्ट्हमागन्य। १ मूल्— सुक् सेव सेवम्, प्रास्त्रं स्नावं स्नावम्।

#### ८१। नोदन्तस्य।

উकातास्त्रकृष्धि अध्यास्त्र श्राह्माता, वश्री विकति इत्र न। यथा, जावं पिपाद्यः, रिपृतृ जिल्ल्ः, मिवां चित्रः, विषयं निराकरिल्लुः, फावं यहवानुः,।

<sup>(</sup>७) दिवो विभाषा। विष्धांजूद विकाला। यथा, सरं दिवन् सरस्य दिवन्।

#### ८৮। नोकघीलत्नभिवयणिनाम्।

উक, मीलार्थ ज्न, ও ভবিষাদর্থ দিন্প্রভাষের প্রায়েগ, বজী বিভক্তি হয় না। যথা, উক— कहाँ गासका, जलं वधुका, मान् घातका (१)। मीलार्थ ज्न-धनं दाता, खन्नं भोता, विषर्षा निराकक्ती। ভবিষাদর্শিন্— धनंदाको, छतं भोजी, कहाँ गामी।

# ८৯। न खलर्थानाम्।

थनर्थ প্রতায়ের প্রয়োগে (৮), यशी বিভক্তি হয় না। यथी, नेतत् सुकरं सवता, नैतह्म्करं तेन, सर्वमीयत्करं सुधिया, सया सुन-वंगाः सन्नः, त्वया दृःसामनो रिप्तः।

#### ৫०। न निष्ठायाः।

निषां প্रতারের প্রয়োগে, यशी विष्ठकि হয় না। यथा, क-तेन व्याकरणमधीतम्, मया जनं पीतम्, त्यया चन्ट्रो इष्टः। कवजू-स स्टन्तं गतवान्, चन्नं चन्द्रं इष्टवान्, त्यं वेदमधीतवान्।

#### ৫১। ऋख वर्त्तमाने।

বর্ত্তমান কালে বিহিত ক্রপ্রতায়ের প্রয়োগে, ষষ্ঠী বিভক্তি হয়। যথা, হার্না মন:, হাজনির্দান্যনি হুলেছ:; ঘরা দুজিন:, ঘর্ত্তি: দুজ্যন হুলার্ছ:।

#### (२। अधिकरणवाचिनच।

অধিকরণ কারকে বিহিত ক্রপ্রতায়ের প্রয়োগে, ষষ্ঠী বিশুক্তি হয়। যথা, মুহনীয়া ম্যোলন্দ্র, एतहेषामाधितस्।

#### ৫७। विभाषा भावे।

- (4) कांगुकनात्मत् প्राप्तारं इत्र । यथा, धनस्य कासकः ।
- (৮) সু, দুরু, ও ঈষৎ শব্দের ধোগে, ধাতুর উত্তর যে অ ও অন হয়, উহাদিগকে খলর্থ প্রতার বলে।

ভাববাচাবিহিত कथ्राह्म श्रीहित श्रीहित है । विकास स्थान स्था

#### **৫8। ऋत्यानां कर्त्तरि।**

কৃত্যপ্রতায়ের প্ররোগে, কর্তায় বিকল্পে ষতী বিভক্তি হয়। যথা, पुत्तकं तव पाक्यम्, चन्द्रो मम द्रष्टव्यः, गुरुत्तस्थार्त्वनीयः। পক্ষে তৃতীয়া।

(१ वस्त्रीय जासि पिष् निप्रह्नां हिंसायास ।

हि॰ मा अर्थ दूबांहेल, जामि, लिष्, এद॰ नि उ প্र পূर्वक हन्धांजूद

क्ट्या वर्षी विज्ञक्ति हत्न । यथा, चौरस्य उच्जासयित, मलोः पिन हि।

नि उ श्र वाह्य, ममह्य, उ विश्वयाह्य जाद्य थोकित्नउ हत्न । यथा,

निहन्नि प्रहन्ति निप्रहन्ति प्रयाहन्ति वा चौरस्य ।

# ৫७। वा स्टल्ययद्येशां नमाणि।

म्बर्तनार्थ, मग्न, ७ देन थांडूत कर्क्स विकल्भ वकी विकल्प इत्र । वथा, प्रची मातः सारति, दाता दिर्द्रस्य दयते, पिता प्रचस्य रूंटे । शक्त विकीया ।

### **৫१। त्रप्रायोनां विमाषा कर्यो।**

जुश्चार्थ थांजूत कत्वकात्रक विकल्म यथी विख्य हरः। यथा, नाम्निस्यति कानानाम्; खपां क्लिस्याय न वारिधारा खादः सुमन्दिः, खदते तथारा। शक्क जुजीशः।

#### ৫৮ चिस्तादस्रात्यतस्रभि:।

अहां , अनि, आणि, अ अजमू প्रजातित स्थारित, यशी विक्ति रह। यथा, अहां रे—'पुरसादिद्यानस्य, उपरिचात् मञ्जस्य। अनि—पुरो नगरस्य, स्थो हस्य। आणि—उत्तरात् ससद्स्य, दिस्यात् सिमाबिक्सः। अजमू—दिस्याते यामस्य, उत्तराते व्हस्य।

#### ৫৯। इत्वसुसुचोः कालाधिकरणे।

कृष्यम् ७ मूष् প्रजास्त्र श्रास्ति, कानवाक्क नाम्ब अधिकत्रव विश्व (२) रत्र। यथा, कृष्यमू—पञ्च ततो दिनस्थाधीते, सप्त-कतो दिनस्थानच्यति ; मूष्—दिदिनस्थ भुङ्क्ते, तिर्दिनस्थ स्विति।

#### ७०। एनपा द्वितीया च।

এনপ্প্রত্যয়ান্ত শব্দের যোগে, ষষ্ঠী ও দ্বিতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, दिचार्येन दृच्चवाटिकायाः सरः, दिचार्येन दृच्चवाटिकां सरः।

# ७८। तुल्यार्थेसृतीया च।

जून्तार्थि শব্দের যোগে, यशी ও তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, सस , तुल्यः, सया तुल्यः ; तव ससः, त्या समः; तस्य सहग्रः, तेन सहग्रः।

#### ७२। आधिष कुप्रलादिभित्रतुर्थी च।

आमिक्सिम यूक्षेहित, कूमन প्रकृष्ठ (>•) मास्त्र श्वारित, वश्ची छ छुक्षी विश्वक्ति हत । यथा, क्षमनं देवदत्तस्य भूयात्, कुमनं देव-दत्ताय भूयात् ; निरामयं देवदत्तस्य भूयात्, निरामयं देवदत्ताय भूयात् ; सुखं देवदत्तस्य भूयात् , सुखं देवदत्तस्य भूयात् ।

#### ७७। दूरान्तिकार्थै: पञ्चमी च।

म्तार्थ ७ अविकार्थ माम्बत याता, यही ७ शक्ष्मी विकति इत । यथा, दूरं यामस्, दूरं यामात्; अनिकं नगरस्य, अनिक नगरात्।

<sup>` (</sup> a ) वां शाम व & क्रमनीचात्र या विकालि Þ

<sup>(</sup>১০) কুশল, নিরাময়, হিত, সুখ, অর্থ, আয়ুষ্য ও এতদর্থক শব।

#### ७८। निमित्ताचेतुप्रयोगे।

(रजुगत्वत প্রয়োগ থাকিলে, নিমিন্তবোধক শব্দের উত্তর ষষ্ঠা বিভক্তি হয় (১১)। যথা, অন্নয় ইনীর্ষধনি, অন্যয় ইনীর্জ हात्तमिक्कन्।

# ७৫। सर्वनामस्रातीया च।

হেতুশব্দের প্রয়োগ থাকিলে, নিমিত্তবোধক সর্বানাম শব্দের উত্তর ষষ্ঠী ও তৃতীয়া বিভক্তি হয় (১২)। বথা, কল্ম স্থিনীঃ দ আদানঃ, কিন উল্লেশ আদানঃ।

#### मश्रमी।

#### ७७। सप्तस्यधिकरणे।

अधिकत्र भकांत्र कि अधि विकक्ति हा। यथी, स्टेंड्रे ति छति, श्रयायां शेते, नद्यां स्नाति।

#### ७१। यस च भावेन भावलत्त्रणम्।

यमीत क्रितांत कांन हाता अनामीत क्रितांत कांन निह्निण हत जारांत खेळत मध्यी दिख्कि रत। यथी, दवावलं गते गतः, दवेदलागमनसमकालं गत इत्यर्थः; विधावृद्दिते समागतः, विधू दयसमकालं समागत इत्यर्थः; दजन्यां प्रभातायां प्रस्थितः, दजनीप्रभातसमकालं प्रस्थित इत्यर्थः।

<sup>(</sup>১১) বোপদেব ও ভট্টোজিদীক্ষিত এই স্থলে তৃতীয়াদি পাঁচ বিভক্তির বিধান করিয়াছেন।

<sup>(</sup>১২) বোপদেব, ক্রমদীম্বর, ও ভট্টোজিদীক্ষিত প্রথমা প্রভৃতি পাত বিভক্তিরই বিধান করিয়াছেন।

#### ७৮। साधुनिपुणास्यामचीयाम्।

প্রশংসা বুঝাইলে, সাধু ও নিপুণ শব্দের ঘোগে, সপ্তমী বিভক্তি হব। যথা, অ্যাকটে নাধু:, বান্থিনী বিষয়া: (১৩)।

# ७৯। तस्य सहेनिना कर्माण् ।

ইনিসহিত কপ্রতায়ের প্রয়োগে, কর্মে সপ্তমী বিভক্তি হয়। যথা, অধীনদলন অধীনী আলমতে, অবদীর্ঘদলন অবদীর্ঘী রবৈ।

#### १०। स्थानो व्यवधी प्रथमा च।

रादधान यूकारेल, अध्वराहक गल्बत छेडत मध्यी ७ श्र्थमा विक्कि रत। यथी, चामी बनात् पञ्चस क्रीमेषु पञ्च क्रोमा बा, पञ्चकोमव्यवधाने विद्यते इत्यर्थः; प्रयागः पाटि ब्रिज्ञात् दमसः ■ योजनेषु दम योजनानि वा, दमयोजनव्यवधाने विद्यते इत्यर्थः।

# १५। प्रसितोत्सुकाभ्यां हतीया च।

প্রদিত ও উৎসুক শব্দের যোগে, সপ্তমী ও তৃতীয়া বিভক্তি হয়। যথা, घनेषु प्रसितः, धनैः प्रसितः; विद्यायास्त्रसुकः, विद्ययोग्नुकः।

#### १२। कियामध्येऽध्वकालाभ्यां पञ्चमी च।

দুই ক্রিয়ার যধাবতী অধ্ববাচক ও কালবাচক শব্দের উত্তর সপ্তমী ও পঞ্চমী বিভক্তি হয়। যথা, অধ্ববাচক—অবসিদ্ধ বিশ্বের জীয়ী জীয়াল্লা অক্লা বিচ্ফার; কালবাচক—অবসহা শুক্লা ভাই ভাসালা ধীক্লা।

90 । दूरान्तिकार्थियो हितीयाहतीयापश्चम्यश्च मृतार्थ ७ व्यक्तिर्थ मार्कत डेत्त मथ्यी वर विजीया, ज्जीया, ७ পঞ্চমी विज्ञक्ति रया। यथा, दूरे चामस्य, दूरं चामस्य, दूरेग्य

<sup>(</sup>২৩) বোপদেবমতে ষষ্ঠী সপ্তমী উভয়ই হয় !

पामस, दूरात् पामस्यः चिनिको ग्टहस्य, चिनिकं ग्टहस्य, चिनिकोन ग्टइस्य, चिनिकात् ग्टइस्य। दिश्विव श्रेटल श्रे मी। यथी, दूरो पामः, दूरः पन्याः।

#### १८। षष्ठी चानादरे।

किया चाता व्यवका तूसांश्रेतन, व्यवक्तात्वत् उत्वत् मश्रेभी ए यश्री विष्ठिक श्व । यथा, क्ट्रि चिच्चौ जगाम, क्ट्रतः ग्रिमोर्जगाम ; क्ट्रनं ग्रिमुमनाहास्त्रेत्वर्षः ।

#### १৫। साचित्रस्तिभिय।

माकिन, প্রতিভূ, কুশল, স্বামিন, ঈগর, অধিপতি, প্রমৃত, আযুক্ত, দারাদ, এই সকল শব্দের যোগে, সপ্তমী ও ষষ্ঠী বিভক্তি হয়।
यथी, विवादे साची, विवादस्य साची; व्यवहारे प्रतिभूः, व्यवहारस्य प्रतिभूः; मीमांसायां कुश्चः, मीमांसायाः कुश्चः;
स्तियां प्रसूतः, स्तियाः प्रसूतः।

#### १७। यतस निर्द्वीरणम्।

कार्जि, श्रेण, क्रिया, व्यथवा मर्जा हाता, ममूमय मक्रांजीय हरेट करत य शृथककत्म, जाहांक निर्मात्म करहा यांचा हरेट कि कि करा यांवा, जाहांत जेहत मश्रेमी अ वर्षी विचिक्त हरा। यथा, कार्जि हाता—मत्तकोषु वान्त्रिया मत्तकोए, मत्तकायां विच्या मुद्दाः श्रेण हाता—मत्तकोषु वान्त्रिया मत्तकोए।, यगां काष्णा वद्धवीराः शिक्षां विद्या—अध्यमेषु धावन्तः मीत्रगामिनः, अध्यमानां धावनः मीत्रगामिनः, अध्यमानां धावनः मीत्रगामिनः, स्थानां भावनः मीत्रगामिनः, स्थानां धावनः मीत्रगामिनः, स्थानां स्थानां स्थानाः मित्रः प्रवीषः।

#### 99 । निमित्तात् कम्मसमवाये विभाषा । কর্মের সুহিত সমুদ্ধ থাকিলে, নিমিত্রবোধক শব্দের উত্তর বিকণ্ণে

मथ्यो हरा। यथी, चर्माणि दोपिनं इन्ति, दन्तयोर्द्धनि क्रुझरम्, केमेषु चमरीं इन्ति, सीस्त्रि प्रष्यक्को इतः। श्राःक प्रजूषीं। यथी, स्रुताफवाय करियं इरियां प्रवाय द्रत्यादि (১৪)।

### কারক।

#### १४। क्रियान्वयि कारकम्।

ক্রিরার সহিত যাহার অন্ধর হর, তাহাকে কারক বলে।

#### १ । षट्कारकाणि।

অপাদান, সম্পুদান, করণ, অধিকরণ, কর্ম, কর্ডা, এই ছর কারক।

#### অপাদান।

#### ५०। यतो विश्वेषोऽपादानम्।

যাহা হইতে বিশ্লেষ হয়, তাহাকে অপাদান কারক বলে। যথা, অস্থান্ দনিন:, স্থলাল্ল্ড:, জব্যত্তবিষ্ণা:, ফ্রেল্ড দিব্যেন:, বিইমান্ দন্যানন:।

#### by । भीतार्थानां भयहेतु: ।

छत्रार्थ ও जानार्थ धाजुद श्रद्धात्म, छत्रद्द्यू व्यभानांन रह । यथा, छत्रार्थ—व्याचाहिमेति, महिषात् सस्यति ; जानार्थ—व्यातपात् सायते, मह्मकाद्वाति ।

# - ४२। हेतुबत्यत्ते:।

উৎপত্তির কারণ অপাদান হয়। यथा, बीजादङ्करी जायते, पिदः

· (১৪) বৈয়াকরণেরা কেবল সপ্তমী বিধান করিয়ী, स्ताफ्ताव करियां हरियां प्रसाव, ইত্যাদিকে অপপ্রয়োগ বলেন। पुत्रों जायते, दुग्धात् ध्रतस्त्यस्यते, धन्मीत् सुखं भवति, ख्रध-न्मीत् दुःखसुद्गरति ।

#### bo। **या**विभवनस्रभवः।

ভূধাতুর প্রয়োগে, আবিভাবভূমি অর্থাৎ প্রকাশস্থান অপাদান হয়। যথা, ভ্রিনবনী गঙ্কা দেশবনি, বল্লীকান্দান্ দদবনি ঘর:-खर्डमाखर्डिच्छ ; আবিদ্বনীন্দর্য:।

#### ৮8। विरामार्थीनां यतो विरति:।

যাহা হইতে বিরঙি হয়, বিরামার্থক ধাতুর প্রয়োগে, উহা অপা-দান হয়। যথা, অধ্যয়বাদিকদানি, করস্কানিবর্ননী।

#### ৮৫। पराजेरसञ्चम्।

পরাপূর্বক জিধাতুর প্রয়োগে, অসম বিষয় অপাদান হয়। যথা, অध्ययनात् पराजयते, पापात् पराजयते; अध्ययनं पापञ्च सोदुमसमर्घ द्रव्योष्टः।

#### **৮७। यस्याद्यनमिक्कति।**

यांशत जानर्गन, जर्था ९ व्य प्रशिष्ठ ना शांत এই देखा करत, जेश जशांनान दत । यथा, गुरोरनधंते, पितुर्निचीयते, दखोनुकायते, गुरुः पिता दखुर्ग न मां पखोदिति चज्जया भयेन ना तद्धान-पथादपसरतीलाथेः ।

# ৮१। यतो जुगुपा तद्यीनाम्।

যাহাতে জুপ্রপ্না জক্মে, জুপ্রপ্নার্থক ধাতুর প্রয়োগে, উহা অপাদান হয়। যথা দাদাক্রবায়েন, নহকার বীনন্তান :

#### ৮৮। त्रपार्थीनां यतस्त्रपा।

যাহার নিকট লভিজত হয়, লজ্জার্থক ধাতুর প্রয়োগে, উহা অপা ' দান হর। যথা, যথৌর্ভকান, দিল্লেদান, দান্তলিন্দ্রীন।

#### ৮৯। अधीत्यर्थानामध्यापयिता।

अधारतार्थक धांजूद প্রয়োগে, অधांপरिका অপাদান হয়। यथा, उपाध्यायादधीते, गुरोः पठति।

#### ৯०। वारणार्थानामीश्वित:।

वांत्रवार्थक थांकृत श्राहारण, निवार्श्यमार्थत न्नेश्विष्ठ अश्राहान इह । यथा, खन्नेम्यः काकं वार्यति, यवेभ्यम्द्वागं निषेधति, व्यसनात् युच्चं निवारयति ।

#### ৯১। ऋत्यर्थीनां ऋवियता।

व्यवनार्थक थांजूद श्रद्धारम, व्यावशिका ज्यलामान एत । यथा, सरीः यास्त्रं म्हणोति, नटाद्वोतिमानर्णयिति, नस्मात् श्वतं भवता, मया श्वतमिदं तातात् ।

#### ৯২। ग्रहणप्राप्त्रयानां तत्स्यानम् ।

গ্রহণার্থক ও প্রাপ্তার্থক ধাতুর প্রয়োগে, গ্রহণস্থান ও প্রাপ্তিস্থান অপাদান হয়। যথা, গ্রহণার্থক—আবাফারিদইন্য सङ्घाति, দলাথা কদোহন ; প্রাপ্তার্থক—ভঘাধ্যাযাহিত্যা দানানি, ধ্যবির্ঘান কমেন।

# ৯৩। प्रमादार्थीनां यत: प्रमाद: ।

व বিষয়ে প্রমাদ হয়, প্রমাদার্থক ধাতুর প্রয়োগে, উহা অপাদান হয়। যথা, ঘল্মার দলাত্তানি, অध्ययनাदनवधानम्।

#### मख्यमान।

# 28। यसी दानं, सम्प्रदानम्।

यांशांक कानल विक मिल्या यांग्न, जांशांक मिल्यांन कांत्रक वरन। यथा, दरिद्राय धनं ददाति, भिन्नने भिन्नां ददाति, सन्नेसं स्टाने दद्यात्।

#### ৯৫। बचर्यानां प्रीयमाणः।

ক্তার্থক ধাতুর প্রয়োগে, প্রীয়মাণ সম্পুদান হয়। য়থা, मोदकः शिशने रोचते, इहं महां खटते।

# ৯७। सुहेरीश्वत:।

मপৃথিধাতুর প্রয়োগে, কর্তার ঈপ্সিত সম্পুদান হয়। যথা, धनाय खुद्दयति, प्रद्रोभ्यः स्पृद्धयति ।

#### २१। धारेबत्तमर्गः।

धारिधां वृद প্ররোগে, উত্তমণ मन्त्रुमान इत। यथा, स तस्यं सतं धारयति, तं महां सहस्यं धारयसि।

### ৯৮। कियया यसभिष्रेति।

ক্রিয়া দ্বারা যাহাকে অভিপ্রেড করে, অর্থাৎ যাহার প্রীতিজন-নাদির উদ্দেশে, ক্রিরার অনুষ্ঠান করে, উহা সম্পুদান হয়। যথা, মিমন ক্রীভ্ননদান্যান, যুবে द্বিষ্মাদাস্থানি, যুদ্ধায় বন্দ্র হর্মযানি।

> तत्त्रहुम्मिपतिः पत्नेत्र टर्घवन् प्रियद्र्यनः। व्यपि लङ्क्तिमध्यानं बुबुधे न बुधीपमः॥

# ৯৯। कोधद्रोहिष्यंस्यार्थानां तदुहेश्य:। ক্রোধার্থক, দ্যোহার্থক, দ্বাহার্থক, ও অসুয়ার্থক ধাতুর প্রয়োগে,

द्धार्थाथक, द्भाराथक, अधार्थक, उ अनुशायक वाशूत आहाराज, द्धार्थाकित जेत्कमा मन्त्रुमान रहा। यथा, स्टत्याय आध्यति, यत्नवे द्रश्चाति, पतिवेशिने रेखेति, पतिदन्तिने अस्यति।

#### ১००। प्रत्याङ्भ्यां ऋवः प्रवत्तकः।

প্রতি পূর্বক ও আঙ্ পূর্বক জ্বধাতুর প্রয়োগে; প্রবর্তক দম্পুদান

हत्त । यथी, दरिद्राब धनं प्रतिष्ट्योति, खाष्ट्योति वा, दरिदेख मह्यं धनं देहीति प्रवित्तिः प्रतिज्ञानीते इत्सर्यः ।

#### করণ।

#### ५०५। साधकतमं करणम्।

किशंनिक्ष्मविद (य मर्खश्रधान छेशांत, छाशांत्र कदन कांद्रक रात । यथा, चचुषा पद्धति, कार्येन द्वयोति, इस्तेन स्ट्ह्णाति, दावेण नुनाति, यश्चा प्रहर्रात, यरेण विध्यति, खश्चेन सञ्चरते, वस्त्रेण खास्कादयति ।

#### অধিকরণ।

# ১०२। आधारोऽधिकरणम्।

कर्त्वा ଓ कर्ब्यात य आधात, जांशांक अधिकृत्य कांत्रक रात्त ।
आधात जितिथ ; अकानिनक, रित्रशिक, अञ्जितांश्रक । यथा,
केकानिनक—वने वस्ति, वने करेंगे इत्ययः ; नद्यां स्वाति, नद्या
एकरेंगे इत्ययः ; ग्टहे स्विति, ग्टहैं करेंगे इत्ययः ; ग्रयायां
शिगुं शाययित, श्योकरेंगे इत्ययः । रित्रशिक—जले इच्छा,
अस्तिवये इत्यर्थः । विद्यायामस्त्रागः, विद्याविषये इत्यर्थः ।
अञ्जितांश्रक—दुग्धे माधुर्यमिन, दुग्धस सम्मीनवयवान् व्याख्येत्ययः ;
वस्त्री दाहिका शिकारिस, वस्त्रेः सर्वानवयवान् व्याख्येत्ययः ।

### কর্ম।

# ১०७। किययाकान्तं कमा।

कर्त्तीत क्रिता घाता यारा आक्रांख रत, जाशांक कर्य कांत्रक राता । यथा, स्टर्च प्रविधाति, चन्द्रं प्रस्तित, यामं गच्छति, खन्नं सुङ्क्ते, स्नानं पिनति, पुष्पं चिनोति, बच्चं दराति, बेदमधीते, दृज्यम् खारोहति, शाखां क्रिनसि, कांग्रं मिनसि ।

### ५०८। चिधाीस्थासामधिकरणम्।

অধি পূর্বকে শী, স্থা, আগ্ ধাতুর অধিকরণ কারক কর্মসংজ্ঞা প্রাপ্ত হয়। যথা, ম্যুলাদ্যিমীন, ফল্লেদ্যিনিস্থানি, আসম্যান্ত্রী।

### ५०६। उपान्वधाङ् वसः।

উপ, অনু, অধি, আঙ্ পূর্বক বস্ধাতুর অধিকরণ কারক কর্ম-সৎজ্ঞা প্রাপ্ত হয়। যথা, আমন্ত্রমবদনি (১৫), ফল্পন্তবন্ধনি, নসমেদিবন্ধনি, যুহাহাত্ত্যমাৰ্শনি।

#### ५०७। समिनिविशो विभाषा।

অভি পূর্বক ও নি পূর্বক বিশ্ ধাতুর অধিকরণ কারক বিকম্পে কর্মসৎজ্ঞা প্রাপ্ত হয়। যথা, धर्म्ममधिनिविद्यते, धर्म्मोऽभिनिविद्यते।

# ५०१। नुधद्भुष्ठोरूपसृष्टयोः सम्प्रदानम् ।

উপদর্গ পূর্বক কুধ্ও ক্রহ্ ধাতৃর সম্পূদান কারক কর্মদৎজ্ঞ। প্রাপ্ত হয়। যথা, ফলেদদিলুগুমনি, মানুদদিদুল্পনি।

#### ১०৮। विभाषा दिवः करणम्।

দিব্ধাতুর করণ কারক বিকল্পে কর্মসংজা প্রাপ্ত হয়। যথা, অবানু হীঅনি, স্বাতীংশীনি।

# ५००। हे कर्मणी दुचादे:।

দুহ্, যাচ্ (১৬), চি, প্রচ্ছ, নী, মদ্ প্রভৃতি কতকণ্ডলি ধাতুর দুই কর্ম থাকে, একের নাম প্রধান, অপরের নাম অপ্রধান। ক্রিয়ার সহিত প্রধান ভাবে যাহার অন্তর্হয়, ভাহাকে প্রধান কর্ম, আর অপ্রধান ভাবে যাহার অন্তর্হয়, ভাহাকে অপ্রধান কর্ম

<sup>(</sup>১৫) উপবাস অর্থে হয় না। यथा, उपवस्ति वने।

<sup>(</sup>১৬) যাচঞার্থ অর্থ, নাথ, ভিক্ষ প্রভৃতি।

वतन। यथी, गोपो गां इन्धं दोन्धि, दिद्दो राजानं धनं याचते, मानाकारो दृष्टं प्रमं चिनोति, यिख्यो गुरुं धन्धं प्रच्छित, पिता पुत्तं ग्टहं नयित, देना जनधिमन्दतं ममन्युः। ध इतन मूछ, धन, शूक्ष, धर्म, शून, अगृष्ठ श्रधान कर्म्म; आंत त्या, तांजा, रृक्ष, धर्म, गृह, जनिध अश्रधान कर्म्म। धरे अश्रधान कर्मात्करे क्रक्षिण ও अदिविक्तं कर्म्म वतन; अर्थाः उत्यात् स्था यादाष्ठ कांत्रकांखत् श्रदृद्धित मस्थावना थात्क, अथा वक्तांत्र श्रदृद्धः दत्तर वन्याः, त्म मकन कांत्रक श्रदृद्ध ना दरेशा, कर्म्मकांत्रक श्रदृद्धः दत्तर, जादात्करे अक्थिज, अदिविक्तंज, उ अश्रधान कर्म्म वतन। शृद्धांक जेमाद्रवन्तम्बूद्धः त्या श्रद्धांकतं कर्मम् कां दरेशाः हिक्छ दिवक्तः थांकित्न, गोद्धेन्धं प्रच्छित, प्रचं क्टेंहेनयित, जन्नधेरच्यतं ममन्युः; धरे कृत्य, यथांमस्रव, अश्रामानािक कांत्रक श्रदृद्ध हरेष्ठ शादा।

### ১১०। कर्माणि वाच्ये प्रथमा।

कर्म्मदोठाপ্রয়োগে, কর্মকারকে প্রথমা বিভক্তি হয়। যথা, यामो गम्यते, चन्द्रो दृष्यते, दृच चारुह्यते, ग्रमुरभिद्वह्यते।

### ५५५। न्यादेः प्रधाने।

কর্মবাচ্যপ্ররোগে, নী প্রভৃতি (১৭) ধাতুর প্রধান কর্মে প্রথমা বিভক্তি হয়। যথা, गौर्यामं नीयते, দ্বিयते, জञ्चते, ভল্লার বা।

# **५५२। दुहादेरप्रधाने।**

কর্মবাচ্প্রোগে দুহ্ প্রভৃতি (১৮) ধাতুর অপ্রধান কর্মে প্রথমা

<sup>(</sup>১৭) নী, ছ, কৃষ্ বহ্। চারি ধাতৃই প্রায় অকার্থবোধক।

<sup>(</sup>১৮) দুহ্, যাচ্, পঢ়, দঙ্, কথ্, প্রছ্, চি, জ, (কথনার্থ কথ, বচ্, বদ্, ভাষ্প্রভৃতি ), শাস্, জি, মন্, মুব্।

विस्त हिंहा । वर्षा, मोई क्षं दुह्यते, राजा धनं बाच्यते, चौरः धतं टराड्यते, गुर्व धन्सं एच्ड्यते, दृजः पुष्पं चीयते, धिव्यो धर्मा-मतुशिव्यते, जनधिरन्दतं ममन्ये।

#### কর্ত্তা।

#### **550। कियासम्पादक: कत्ती।**

यांशत श्रयां किया मान्न श्रयः, जांशांक कर्ज्कातक राता। यथा, मिश्वः क्रीज़ित, गौः यद्यायते, मेघो गर्जात, गोपो दुग्धं दोग्धि, माजाकारः प्रस्रं चिनोति, वानरो हज्जमारोहति, राजा प्रजाः पाजयति।

১১৪। **দথা জনস্ব।**যে প্রযোজক অর্থাৎ অন্যকে ক্রিয়ায় প্রবর্ত্তিত করে, তাহাকেও
কর্ত্তকারক বলে।

#### ५५৫। त्वतीया प्रयोज्ये।

ক্রিয়ার অণিজন্ত অবস্থার কর্তাকে ণিজন্ত অবস্থার প্রযোজ্য বলে।
প্রযোজ্য কর্ত্তার বিভক্তি হয়। যথা, ইবইন আইন দবনি,
বার্রনা ইবইন আইন দাব্যনি। এ স্থলে, দেবদত পচনক্রিয়ার অণিজন্ত অবস্থার কর্ত্তা ছিল, ণিজন্ত অবস্থার তাহার
প্রযোজ্য সংজ্ঞাও তাহাতে তৃতীয়া বিভক্তি হইল; আরু, যজ্জদত
দেবদত্তকে পচনক্রিয়ার প্রবর্ত্তিত করিতেছে, এজনা দে প্রযোজক,
তাহার কর্ত্ব্যংজ্ঞাও তাহাতে প্রথমা বিভক্তি হইল।

# **५५७ । गत्यर्थानां कर्मासंज्ञा प्रयोज्यस्य ।**

গমনার্থ ধাতুর প্রয়োগে, প্রযোজ্য কর্ত্তার কর্মদ জ্জা হয়। য়থা, देवदत्ती ग्टहं गच्छति, यद्यदत्ती देवदत्तं ग्टहं गमयति।

#### ५५१। ज्ञानाधनाधीनाञ्च।

জানার্থ ও অশনার্থ (১৯) ধাতুর প্রয়োগে, প্রয়োজ্য কর্তার কর্ম-সৎজা হয়। যথা, জানার্থ—ছিজ্ঞা धन्में बुध्यते, गुरूः ছিল্ফা धन्में बोधयति; ভোজনার্থ—पुच्चोऽद्यमञ्चाति, माता पुच्चमद्यम् আছ্মযানি।

# **১১৮। यन्द्रकमानाणामकमानाणाञ्च**।

শন্ধ (২০) কর্মক (২১) ও অকর্মক ধাতুর প্রয়োগে, প্রয়োজ্য কর্তার কর্মসংজ্ঞা হয়। যথা, শনকর্মক—ঘিত্মা बेटमधीते, गुन्हः घिত্य बेटमध्यापयति । অকর্মক—धिन्दाः घेते, माता धिन्नं गाययति ।

### ১১৯। विभाषा चुजुराजो:।

क म ् ७ कृष्ण्याजूद প्रवाहित, श्राह्मण कर्छाद विकल्ण कर्मान्छ। रहा यथी, खल्यो भारं हरति, प्रमुकृत्यं खल्येन वा भारं हार-यति ; कुम्मकारो घटं करोति, यज्ञदत्तः कुम्मकारं कुम्मकारेख वा घटं कारयति।

# **১२०। कर्मभावयोस्**नृतीया।

कर्म्मवीछ ও ভাববাछ প্রয়োগে, कर्डा इ ज्ञीश विश्वक्ति इह । यथी, कर्म्मवीछ—गोपेन इन्धं इ हाते, माजाकारेग एष्मं चीयते, राजा धनं दीयते ; ভাববাछ—शिशुना कदाते, यूना इ खते, हद्देन सम्बते ।

- (১৯) অদ্, থাদ্, ভক্ ভিন্ন।
- (২০) শব্দাত্মক বিষয় পদ, বাক্য, গ্রন্থ, উপদেশ, তিরস্কার, প্রশংসা প্রভৃতি।
- (২১) ছো, ক্লেন্, শৰায়, জম্পু, ভাষ্, লপ্, জা, বিজ্ঞা, উপ-লভ ভিন্ন।

# >>>। कर्मासंज्ञायां प्रयोज्यकर्माणोः प्रथमादितीये कर्माणाः।

य स्त श्रीयांका कर्डात कर्मन । इस, उथास, कर्मयां हाश्रीयांता, श्रीयांका कर्डात श्रीयां विक्रक आंत्र कर्म्म विक्रीस विक्रक स्त्र । यथा, शिक्येचा वेदोऽधीयते, सुस्चा शिक्यो वेदमध्यास्तते । अ स्त्रत, श्रीयांका कर्डा शिखा श्रीयां विक्रक आंत्र कर्म व्यक्ति । विक्रक स्टेन । उद्यक्त स्वत्नेन खोदनं पच्चते, यज्ञदन्तेन देवदन्तेन खोदनं पाच्चते ।

# **५२२। निरुत्तौ च प्रष्टित्तवत् कियाया:**।

क्रियां श्रेतृहिद्याल रे उत्तर कांत्रा क्रियां में रे विष्ठ क्रियां श्रेतृहिद्याल रे अधितार उत्तर क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां विष्ठां विश्वां क्रियां विष्ठां विश्वां विष्ठां विश्वां विष्ठां विश्वां विष्ठां विष

### ১২৩५ विवचावधात् कारकाणि।

य चल य कांत्रक विश्वि इहेन, विवक्ता त्गाजः, अशीर रक्तात्र हेन्द्रा अनुप्रादि, जांशीत अन्याधान्य निकिष्ठ इहेन्ना थोटक। घथा, बहुतं गक्ति, बहुदे गक्कितः, बहुतं प्रविधितः, बहुदे प्रविधितः; प्रक्षेत्र्यः स्पृह्यति, प्रक्षाणि स्पृह्यति ; प्रक्षेत्र्यः स्पृह्या, प्रक्षेत्र सुहा; चर्य क्राव्यति, चरौ क्राव्यति; गा दुग्धं टोग्धि, गोश्यो दुग्धं टोग्धि; न्दर्णं घनं याचते, न्द्रणाद्वनं याचते; धर्चं प्रधं चिनोति, द्यात् प्रधं चिनोति; प्रसं स्टहं नयति, प्रसं स्टिहं नयति; जनधिमन्द्रतं भमन्युः, जनधेरन्द्रत ममन्युः; शिक्याय विद्यां नितर्रति, शिक्ये विद्यां वितर्रति; हिमवतो गङ्गा प्रभ-वित, हिमवित गङ्गा प्रभवित ।

# তদ্ধিত।

#### ১। तिष्ठतः।

এই প্রকরণে বে দকল প্রভাব বিহিত হইতেছে, ভাহাদের নাম ভক্ষিত।

#### २। णिति रिद्विराद्यस्य।

মূর্দ্ধন্য ৭ ইৎ যাব এরূপ তদ্ধিতপ্রতাষ হইলে, প্রাতিপদিকের আদ্য স্বরের বৃদ্ধি হয়।

### ७। सुभगादेवभयो:।

মুন্ডগা, দুর্ভগা, অধিদেব, অবিভূত, পরলোক, মর্কলোক, অনুশল, পরব্রী প্রভৃতি প্রাতিপদিকের অন্তর্গত উভয় পদের আদ্য স্বরের কৃষ্ণি হয়।

# 8 । **सुपञ्चाला दे**हितीयस्य ।

মুপঞ্চাল, অর্দ্ধপঞ্চাল, অগ্নিদেবতা, পিড়দেবতা, দ্বিবর্ষ, ত্রিবর্ষ, চতুর্বর্ষ, পঞ্চবর্ষ, প্রভৃতি প্রাতিপদিকের অন্তর্গত বিভীয় পদের আদ্যাধ্বরের বৃদ্ধি হব।

# १। न णिलायं सर्वत ।

মুর্দ্ধন্য ৭ ইতের আদ্যম্বরবৃদ্ধিরূপ যে কার্য্য বিহিত ছইল, তাহা সর্ব্যত হয় না।

# ७। लोपोऽवसँवसयोयस्वरयोः।

ভদ্ধিতপ্রতায়ের য ও স্বর্রণ পরে থাকিলে, প্রাতিপদিকের অন্ত-স্থিত অরণ ও ইরণের লোগ হয়।

# १। सुषा उवर्णस्य।

তদ্ধিতপ্রতায়ের য ও ম্বরবর্ণ পরে থাকিলে, প্রাতিপদিকের অস্তু-স্থিত উবর্ণের গুণ হয়।

# ४। ऋदोदौद्ग्रो यः स्वरवत्।

থকার, ওকার ও ঔকারের পরস্থিত তদ্ধিতপ্রতায়ের য শ্বরকার্য্য নির্বাহ করে।

### ৯। टेर्नीपो डिति।

ডকারেৎ ভদ্ধিভপ্রভায় পরে থাকিলে, প্রাতিপদিকের টির (২২) লোপ হয়।

# ১०। तेविद्यते:।

বিৎশতিশবের তি এই ভাগের লোপ হয়।

# इयुवी यवयोराद्यचः पदान्ते णिति ।

ণকারেৎ 'ভব্বিতপ্রতার হইলে, পদের ক্রাক্তবিত আদাস্বস্থান জাত যস্থানে ইর, বস্থানে উব, হয়।

# **১२। हारादीनाञ्च**।

( ২২ ) অস্তা স্বর ও তদরধি বর্ণকে টি বলে।

দ্বারা প্রভৃতি (২৩) প্রাতিপদিকের আবাদ্য য ও ব স্থানে ইয় ও উব হয়।

# ५७। न खागतादीनाम्।

ষাগত প্রভৃতি (১৪) প্রাতিপদিকের আদায়ও ব স্থানে ইয় ও উব হেরনা।

# **১८। वा खापदन्यङ्को:।**

খাপদ, ন্যক্ষু, এই দুই প্রাতিপদিকের বিকম্পে।

#### ५८। अव्यवासितः।

থে সমস্ক ভদ্ধিভপ্রভারের চ ইৎ যায়, ভদস্ক শব্দ সকল অব্যব হয়।

#### ५७। अपत्ये।

বক্ষ্যমাণ প্রভার দকল অপত্য অর্থে বিহিত হয়।

# ५१। स्रदन्तात् विण्।

অপতা অর্থে, অকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ষিণ্ হয়, য় ৽ ইৎ,

के থাকে। বথা, न्यूएखापत्यं गौरिः, दमरचखापत्यं दामरिः,
द्रोणखापत्यं द्रोणिः, गनलाणखापत्यं गानलाणिः, युधिन्तरखापत्य यौधिनिरः, चार्क्त्तसापत्यं चार्क्क्तिः, विकर्णखापत्यं
वैकार्णः, क्रवीतकसापत्यं कौषीतिकः, मच्छुकखापत्यं माच्छुकिः,
क्रवाखापत्यं कार्व्णः, प्रदानस्थापत्यं पादान्तः।

### **५०। बाह्यादिभ्यस्थ।**

অপতা অর্থে, বাহু প্রভূতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিণ্ছয়। যথা,

<sup>(</sup>২৩) ছার, ব্রুর, হাধ্যায়, ব্যক্তদ, হৃদ্ধি, হ্র, সফাকৃত, হাদুমূদু, খস্, খন্, হা।

<sup>(</sup>২৪) স্থাগত, স্বধ্বর, স্থক, ব্যঙ্গ, ব্যাত্র, ব্যবহার, স্থপতি।

बाह्रोरपत्सं बाह्रविः, उपवाह्रोरपत्सम् श्रीपवाह्रविः, उपविन्द्रोः स्रपत्सम् श्रीपविन्द्रविः, दृषल्या स्रपत्सं वार्षेतिः, दृषत्वाया स्रपत्सं वार्केतिः, स्रगनाया स्रपत्सं स्रागतिः, स्रुमित्नाया स्रपत्सं स्रोमितिः, दृन्धिताया स्रपत्सं दौन्धितिः, उदस्रोरपत्सम् स्रोदस्विः।

#### ১৯। डको व्यासस्यातोः पिणि।

ষিণ্প্রতার হইলে, ব্যাস, সুধাড়, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর ডক হর, ড ইৎ অক থাকে। যথা, আর্ম্বাদন্ত বীআরদিনঃ, স্কুষান্তঃ অদন্ত মীধানকিঃ।

### २०। नड़ाद्स्यः षायनण्।

अलं अवर्थ, नष् श्रम् श्री शिलिमिक्त केंद्र यात्रन् रह, य न दे बाहन थांक। यथा, नष्ट्यापत्नं नाष्ट्रायनः, चरस्यापत्नं चारायणः, सञ्जस्यापत्नं मौज्ञायनः, सप्ततस्यापत्नं साप्ततायनः, नरस्यापत्नं नारायणः, दासस्यापत्नं दासायनः, काततस्यापत्नं कातनस्यापत्नं काततस्यापत्नं कातनस्यापत्नं कातन्यनः, कातनायनः, यन्यस्यापत्नं द्रीणायनः, पर्वतस्यापत्नं पार्वतायनः, युग्यस्थापत्नं योग्यस्यायणः, चय्नस्थापत्नम् बायनायनः, वदस्यापत्नं नादरायणः, चदुन्वरस्थापत्मम् बोदुन्वरायणः, दक्षसापत्नं दाज्ञायणः।

### २५) गर्गीद्भ्यः ष्यण्।

क्रभा कार्य, नर्भ প्राकृषि श्रीष्ठिलिन कित केत सान् हत, सन हर, सन् हर

मक्होरपत्यं माण्डव्यः, मधोरपत्यं माधव्यः, जिगीषोरपत्यं जैगीषव्यः, कृषिङ्ग्या खपत्यं कौण्डिन्यः, यज्ञवल्कस्यापत्यं याज्ञ-वल्क्यः, प्रविख्वस्यापत्यं प्राविख्वः, चणकस्यापत्यं चाणकाः, चुन्कस्यापत्यं चौनुकाः, सङ्ग्र स्थापत्यं मौह्नस्यः, जमदम्बेरपत्यं जामदम्बाः, पराग्यस्थापत्यं पास्प्रप्यः, जाद्वकणस्यापत्यं जात्रकणस्यः, चल्कास्यापत्यं पौति-माष्यः, उज्जकस्यापत्यम् स्थीन् क्याः, स्विमावस्थापत्यम् स्थीन् क्याः, दितरपत्यं देत्यः, स्वितरपत्यम् स्थादित्यः, प्रजापतरपत्यं प्राज्ञापत्यः।

### **२२। शिवादिभ्यः पण्।**

অপতা অর্থে, निर প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ষণ্ হয়, য । ইং, অ থাকে। यथा, णिवस्यापत्यं घेवः, कक्तरस्यसापत्यं काकृत्स्यः, कहोद्स्यापत्यं काकृत्स्यः, कहोद्स्यापत्यं काहोद्ः, कृपिञ्चवस्यापत्यं कौपिञ्चवः, विश्ववस्यस्य स्वपत्यं वैश्ववसः, रवसस्यापत्यं रावसः, जर्मनामस्यापत्यम् सौर्यनामः, प्रयाया स्वपत्यं पार्थः, यस्त्रस्यापत्यं यास्तः, द्वृह्यस्यापत्यं दौद्धाः, वह्यस्यापत्यं वाह्यः, स्वयःस्वस्यापत्यम् स्वायः-स्वाः, ह्वाःस्यापत्यं वाह्यः, स्वयःस्वस्यापत्यम् स्वायः-स्वाः, ह्वाःस्यापत्यं वाह्यः, स्वयःस्वस्यापत्यः।

#### २७। विदादे:।

अश्रा अर्थ, विन अञ्ि श्रीष्ठिशिन दिव उत्तर वर्ष हत । यथा, विद्यापत्य बेटः, उर्बुखापत्यम् खौर्नः, कद्यपद्यापत्य काद्यपः, न्द्रा बद्यापत्य कौर्यकः, भरद्दा बद्यापत्य भारद्दा जः, उपमन्योः खपत्यम् खौपमन्यवः, विश्वान रद्यापत्य वेश्वान रः, स्टिषेण् द्य खपत्यम् खोपमन्यवः, प्रदिवोऽपत्य घारद्दतः, अगुनक्यापत्य चौनकः, खर्कवृष्यापत्यम् खार्कवृषः, प्रनर्भा खपत्य पौनभवः, प्रश्वापत्य पौनभवः, प्रश्वापत्य पौनभवः, प्रश्वापत्य पौनभवः, प्रश्वापत्य पौनभवः, प्रश्वापत्य पौनभवः, प्रश्वापत्य पौन्नः, दृष्ट्व द्यायः दौष्टितः।

#### २८। सम्बादेख।

खन्न खर्श, ज्ध श्रेज् श्रीजिनित्वत छेटत वन् रत्। यथा, धर्मोरपत्यं भागवा, मरोचेरपत्यं मारोचः, विश्व खापत्यं वाशिष्ठः, कृत्यखापत्यं कौताः, गोतमखापत्यं गौतमः, खिक्किरस्थापत्यं कौताः, गोतमखापत्यं गौतमः, खिकिरस्थापत्यं कौताः, धतराष्ट्र-रसोऽपत्यस् खाक्किरसः, विश्वामित्वस्थापत्यं वश्वामितः, धतराष्ट्र-खापत्यं धार्त्तराष्ट्रः, पार्खोरपत्यं पार्खवः, वसुदेवखापत्यं वासुदेवः, वदोरपत्यं यादवः, परोरपत्यं पौरवः, रघोरपत्यं राघवः, करोरपत्यं कौरवः, मनोरपत्यं मानवः, द्वपदस्थापत्यं द्रौपदः, पर्वतस्थापत्यं पार्वतः।

# २৫। ऐच्हाककौरव्यमनुष्यमानुषा:।

अक्नांक, कोत्रवा, मनुषा, मानुष, এই চারি শব্দ নিপাতনে দিন্ধ হয়। यथा, दक्काकोरपत्यम् ऐक्काकः, कुरोरपत्यं कौरव्यः, मनोरपत्यं मसुष्यः मातुषः।

# २७। मातुर्हुर् संख्यायाः।

ষণ্ প্রত্যায় হইলে, সংখ্যাবাচক শব্দের পরবন্তী মাতৃশব্দের উত্তর ভুর্হয়, ড ইৎ, উর্থাকে। যথা, द्वयोमीलोरपत्य देनाहरः, षखां मात्यामपत्य पाण्याहरः (२१)।

### २१। कन्यायाः कनीनः।

ষণ্প্ৰতায় পৰে, কন্যাশ দস্থানে কনীন হয় ৷ যথা, কন্যায়া অসমেই কালীল: ৷

# २४। स्तीस्यः षेयण्।

অপতা অর্থে, ব্রীপ্রতারাম্ব প্রাতিপদিকের উত্তর বেরণ্ হর, ষ ণ

(২৫) সম্ ও ভদু শব্দের পূর থাকিলেও হয়। যথা, **सान्धा**-तुरः माद्रमातुरः।

# २ । गौधरगौधारी।

गोधाया अपत्यस्, এই অর্থে, गौधर ও गौधार এই দুই শব্দ নিপাতনে সিদ্ধ হয়।

#### ७०। ग्रुस्त्राद्भ्यस् ।

चल्छा चर्ल, चुचु প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বেয়ণ্ হয়। यथी, गुम्बस्यापत्यं गौभीयः, खत्रेरपत्यम् चात्रेयः, विमात्ररपत्यं वेमान्त्रेयः, मन्तेरपत्यं मान्तनेयः, मतनस्यापत्यं गाननेयः, इतरस्यापत्यं गितरेयः (

# ७५। लोपः षेयख्वर्णस्य ।

ষেয়ণ্ প্রতায় হইলে, প্রাতিপদিকের অন্তত্তিত উবর্ণের লোপ হয়।
যথা, स्टनग्रहोरपत्य मार्कग्रहेयः, कमग्रहस्वा अपत्यं कामग्रह वेयः।

# ७२। न पार्व्हकद्रोः।

ें निष् अ कक गरमत जिरार्गत लाभ शत्र ना। यथा, पावडीरपत्यं पावडनेयः, कट्टा अपत्यं काट्रवेयः।

### ७७। सुभगादेरिन् षेयाणा।

ষেয়ণ্ প্রতায় হইলে, সুভগা প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ইন্ হয়।

यथा, सुमगाया चपत्वं सीमागिनेयः, दुर्भगाया चपत्वं दौर्भा-गिनेयः, बस्वक्या चपत्वं बास्यिकेनयः, किनष्टाया चपत्वं कानिष्ठिनेयः, मध्यमाया चपत्वं माध्यमिनेयः, परिस्त्रया चपत्वं पारस्त्रैयोयः

#### ७८। कुलटाया ना।

কুলাটাশব্দের (২৬) উত্তর বিকম্পে। যথা, **জুল্তাযা অদ**ন্ত্র' নীর্তাহনিয়া, নীল্টয়া।

# ७६। सम्बादिभ्यः बीयण्।

অপত্য অর্থে, স্বস্ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ধীয়ণ্ হয়, ব ণ ইং ঈয় থাকে। যথা, ভারু দেয়া ভার্রীয়া।

### ७७। पित्रमात्रष्यस्रो: षेयण् वा ऋनोपस्र ।

পিতৃষুসৃ ও মাতৃষুসৃ শব্দের উত্তর বিকল্পে ষেয়ণ্ছয়, ষেয়ণ্ছইলে शकादের লোপ ২য়। যথা, पित्रव्यसुरपत्यं पेत्रव्यसेयः, पेत्रव्य-स्त्रीयः; मात्रव्यसुरपत्यं मात्रव्यसेयः, मात्रव्यस्त्रीयः।

# ७१। रेवत्यादिभ्यः विकाण्।

অপতা অর্থে, রেবতী প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিকণ্ হয়, ষণ ইং ইক থাকে। যথা, देवत्या खपत्यं रैवतिकः, खश्चपाल्या खपत्यम् खाश्चपालिकः, कर्णचाह्यापत्यं कार्णचाहिकः, द्रण्ड-चाह्यापत्यं दाण्डचाहिकः।

# ७৮'। लोपो गर्गा देव द्ववचने ।

বছবচনে গর্গাদির উত্তর বিহিত অপতাপ্রতায়ের লোপ হয়। ষথা,

(১৬) এছলে কুলটাশবে সতা ভিকোপজীবিনী স্ত্রী বুঝার, ব্যভিচারিণী নহে; ব্যভিচারিণী অর্থে কীন্তবৈঃ কীন্তবৈঃ এই দুই শব্দ হয়। गर्भस्थापत्थानि गर्गाः, वत्यस्थापत्थानि वत्थाः, श्वगस्तेरपत्थानि स्वगस्तयः, विश्वावसीरपत्थानि विश्वावसवः, बस्तोरपत्थानि वस्तवः, सङ्गस्यापत्थानि सङ्गनाः, जसदग्नरपत्थानि जसदग्नयः, जात्र-कर्णस्थापत्थानि जात्रकर्णाः, पृतिमाषस्थापत्थानि पृतिमाषाः।

#### ७৯। यस्कादेः।

वक्ष्यम्य यक्षामित छेत्र विश्वि अभे अशास्त्र ताभ इत्। यथी, यक्षस्यापत्यानि यक्षाः, बह्यस्यापत्यानि वह्याः, द्रह्य-स्यापत्यानि द्रह्याः, त्यकर्णस्यापत्यानि त्यक्षणाः, जङ्गा-रयस्यापत्यानि जङ्गारयाः।

### ८०। विदादे:।

वक्ष्यकार विमानित उठत विश्वि अभाग श्राह्य जाभ हा।
यथी, विद्यापत्यानि विदाः, उर्वेखापत्यानि उर्वोः, कथ्यपद्य
खपत्यानि कथ्यपाः, कृष्यिकद्यापत्यानि कृष्यिकाः, भरद्वाजस्य
खपत्यानि भरद्वाजाः, उपमन्योरपत्यानि उपमन्यवः, विश्वानरस्य
खपत्यानि विश्वानराः, ऋतभागस्यापत्यानि ऋतभागाः, स्थस्थापत्यानि हथेश्वाः, शरदतीऽपत्यानि शरदतः, शुनकस्य
खपत्यानि श्रानकाः।

#### 85। अत्यादेश।

वक्ट्रात व्यक्तांनित छेत्र दिश्कि व्यथा श्रेकारम्य (लाल हम । यथा, व्यत्रेरपत्यानि व्यत्वयः, क्योरपत्यानि क्यावः, कृत्वस्य व्यत्यानि क्षत्याः, विशवस्थापत्यानि विश्वष्टाः, गोतमस्योपत्यानि गोतमाः, व्यक्तिरसोऽपत्यानि व्यक्तिरसः।

### 82। राजसंज्ञाभ्यो विभाषा।

বছবচনে রাজদৎজা প্রাতিপদিকের উত্তর বিধিত অপত্য প্রতায়ের

विकल्ल लाल रहा। यथा, रघोरपत्यानि रघवः, राघवाः, ब्रारोः स्वपत्यानि बुरवः, कौरवाः; यदोरपत्यानि यदवः, यादवाः; इत्त्वाकोरपत्यानि इत्त्वाकवः, ऐत्त्वाकाः; हक्षेरपत्यानि हक्ष्यः, वार्षोयाः; निमेरपत्यानि निमयः, नैमेयाः।

### 80। न स्त्रियाम्।

ब्रोलिक अथा প্রতারের লোপ इत न। यथा, यक्कस्यापत्यानि क्लियः याक्करः, विदस्यापत्यानि क्लियः वैद्यः, खलेरपत्यानि क्लियः क्यालेखः, रघोरपत्यानि क्लियः राघवः।

### 88। अधिविशेषे चापत्यानि।

অপতা অর্থে যে সকল প্রতার বিহিত হইল, তৎসমুদর অর্থ-বিশেষেও হইরা থাকে।

### 8৫। द्रय क्या गीन वीकग्यः।

অর্থবিশেষে ইয়, কণ্, গীন, ষীকণ্, এই সকল প্রত্যায়ও যথাসম্ভব হইয়া থাকে। কণের গ ইৎ ক থাকে, গীনের গ ইৎ ঈন থাকে, ষীকণের য গ ইৎ ঈক থাকে।

#### ८७। तद्वेत्ति तद्धीते।

तत् वेस्ति, तत् खधीते, এই मूरे व्यर्थ, श्रींजिनिमित्वत उठत, यथान्म अत्त, उठत श्रांति क्षेत्र अकल वता यथा, तक वेस्ति खधीते वा तार्किकः, न्यायं वेस्ति खधीते वा नैयायिकः, वेदान्तं वेस्ति खधीते वा वैदार्त्तिकः, प्रराणं वेस्ति खधीते वा पौराणिकः, वेद वेस्ति खधीते वा वैद्यक्तः, चलक्कारं वेस्ति खधीते वा चलक्कारिकः, ज्योतिषं वेस्ति खधीते वा ज्योतिषिकः, व्याकरणं वेस्ति खधीते वा वैयाकरणः, क्रमं वेस्ति खधीते वा क्रमकः, एदं वेस्ति खधीते वा पदकः।

### ८१। इस्रोज्य: धिचादे:।

শিক্ষা প্রভৃতি প্রাতিপদিকের অন্তা হর হুত্ব হয়। যথা, মিকা नेत्ति অংঘীत বামিকাকঃ, দীদানা নিত্রি অংঘীর বাদীদানকঃ।

### ८৮। तेन प्रोक्तम्।

तेन प्रोक्तम्, এই অर्थः, श्रीजिशिनित्वतं उठतः, यथानस्त्रं, उठक श्रीजा नकत रहा। यथा, ऋषिया प्रोक्तम् आषम्, मसुना प्रोक्तं माननं मानवीयम्, विष्णुना प्रोक्तं वैष्णवम्, पतञ्जनिना प्रोक्तं पाता-ञ्जनम्, क्यादेन प्रोक्तं कायादम्, पाणिनिनः प्रोक्तं पाणिनीयम्, जैमिनिना प्रोक्तं जैमिनीयम्, खिल्या प्रोक्तम् आलेयम्, उपनया प्रोक्तम् औपनसम्, खिल्या प्रोक्तम् आलेयम्, पराप्रयेष् प्रोक्तं पाराप्यरं पाराप्यरीयम्, दक्तस्यितमा प्रोक्तं वाद्याक्रीयम्, नारदेन प्रोक्तं नारदीयम्, वाद्यीकिना प्रोक्तं वाद्यीकीयम्, वीधायनेन प्रोक्तं वीधायनीयम्।

#### 8a। तेन **स्रतम्**।

तेन क्रतम्, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामस्रव, উক্ত প্রভাষ সকল হয়। यथा, कायेन क्रतं कायिकम्, खङ्गेन क्रतम् खाङ्गिकम्, ग्रारिण क्रतं ग्रारीरिकम्, नाचा क्रतं वाचिकम्, नचनेन क्रतं वाचिनकम्, मनसा क्रतं मानसिकम्, सहसा क्रतं साहसिकम्, प्रवृषेण क्रतं गौक्षेयम्, मिक्काभिः क्रतं माजि-कृम्, खुद्राभिः क्रतं खौद्रम्।

### ৫०। तेन रक्तम्।

तेन रक्तम्, बरे व्यर्थ श्रीडिशिष्टिकत् छेवत्, यथानस्त्र, छेकः श्रीडात्र मकल रत्र। यथी, कवायेषा रक्तं कावायम्, क्रवसीन रक्तं कौछनाम्, नीव्या रक्तं नीवम्, इरिद्रया रक्तं हारिद्रम्, मञ्जिष्या रक्तं माञ्जिष्म्, जाचया रक्तं जाचिकम्, रोचनया रक्तं रोचनिकम्, पीतेन रक्तं पीतकम्।

#### ৫১। साख देवता।

सा चस्य देवता, अरे व्यर्थ, श्रीिजिशितिकत छेवत यथीमस्वत, छेक श्रुष्ठात्र मकल इत । यथी, यिवीऽस्य देवता यैवः, विक्युरस्य देवता वैक्युवः, यित्तरस्य देवता याकः, गवापितरस्य देवता गावापत्यः, प्रजापितरस्य देवता प्राजापत्यः, वायुरस्य देवता वायव्यः, स्विक्तरस्य देवता स्वाक्तेयः, सोसीऽस्य देवता सौन्यः, द्यावाष्ट्रिय्यौ स्वस्य देवते द्यावाष्ट्रियवीयं द्यावाष्ट्रिय्यम्, स्वन्नीयोमावस्य देवते स्वन्नोयोमीयम् स्वन्नीयोन्यम्।

#### ৫२। तस्य सम्बद्धः।

तस्य समूहः, अरे अर्थ, श्रीिशिवित्तं छेहत्, यथामञ्जत्, छेक् श्रुवातं मक्त रत्न । यथा, भिचाणां समूहः भेचाम्, अङ्गराणां समूहः खाङ्गारम्, मय्राणां ममूहः मायूरम्, धेनूनां समूहः धें तस्म, कचापानां समूहः काचापकम्, राजन्यानां समूहः राजन्यकम्, राजप्रचाणां समूहः राजपुच्चकम्, मतुष्याणां समूहः मातुष्यकम्, अपूपानां समूहः खापूपिकम्, गणिकानां समूहः गाणिकाम्, मास्तुणानां समूहः बास्तुष्यम्।

#### ৫७। सम्बन्धे खर्ख कार्य ततः।

मबूह व्यर्थि, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामञ्जर, थण, काण, ও তর্ল্ প্রতায় হয়। यथा, कामजानां समूहः क्षेमख्याख्यम्, क्षास्तानां समूहः क्षियख्याख्यम्, क्षास्तानां समूहः क्षायख्याख्यम्, क्षाय्यां समूहः दूष्णीकाख्यम्, कर्मायां समूहः क्षायां क्षाय्यां समूहः क्षायां क्षाय्यां समूहः क्षायां क्षाय्यां समूहः क्षायां क्षाय्यां समूहः क्षायां, क्षायां समूहः क्षायां, क्षायां समूहः क्षायां, क्षायां समूहः क्षायां, क्षायां समूहः क्षायां।

#### ৫८। तत भवः।

নম ধবঃ, (২৭) এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উক্ত প্রতায় সকল হয়। यथी, मधुरायां भनः माधुरः, कविक्के भनः कालिक्सः, यामे भवः यास्यः यामीणः, नगरे भवः नागरिकः, वर्षासु भवः वार्षिकः, श्राट्ट भवः श्राट्टः, वसने भवः वासन्तिकः, हेमने भवः हैमनिकः हैमनः, ससुद्रे भवः सासुद्रिकः, द्वीपे भवः हैपायनः हैप्यः, खकाले भवः खाकालिकः, ग्रश्चद्भवः ग्राश्चितिकः, कुछे भवः कुछीनः, दुष्कुछे भवः दौष्कुछेयः दुष्कुछीनः, प्राचि भवं प्राच्यम्, दिश्चि भवं दिश्यम्, वर्गे भवं वर्ग्यम्, कखे भवं कख्यम्, दन्ते भवं दन्त्यम्, ताली भवं तालव्यम्, खोडे भवम् खीड्राम्, जिङ्गामू वे भवं जिङ्गामू बीयम् खन्तरे भवम् खान्तरिकम्, मनसि भवं मानसं मानसिकम्, ग्ररीरे भवं ग्रारीरं ग्रारीरिकम्, खरस्ये भवः खारच्यको मतुष्यः चारच्यः पग्नुः, कोघे भवं कौधेयम्, दक्त भवस् ऐक्तिस्, लोके भवं लौकिकस्, भूमी भवः भौनः, दिवि भवः दिखः, खये भवम् खयाम्, खाटौ भवम् खाद्यम्, चन्ते भवम् अन्यम्, वेग्रे भवा वेग्या, सर्व्वकाछे भवं सार्व्वकालिकम्, कदाविद्भवं कादाचित्कम्, सस्प्रति भवं सास्प्रतिकम्, ऋध्यात्सं भवस् खाध्यात्सिकम्, खिधभूतं भवम् खाधिभौतिकम्, खिधदेवं भवम् चाधिदैविकम्, मध्यन्दिने भवं माध्यन्दिनम्।

#### **৫৫। टिलोपोऽकसाहश्चिोः।**

অকন্মাং, বহিস্, এই দুই প্রাতিপদিকের টির লোপ হর । যথা, অকল্মান্ত্রন্ আক্লিকেন্, বস্থিন্দ্বাল্লাবাড়ীকন্।

(২৭) এ ছলে ভবশবে জাত, ছিত, সংক্রান্ত, আবির্ভূত প্রভৃতি অনেক অর্থ বুঝায়।

# **৫७। स्त्रीपुंसाभ्यां नग्**।

ব্রী ও পুষ্ দৃশকের উত্তর ভব প্রভৃতি অর্থে নণ্ছর, গ ইৎ, ন থাকে। যথা, ক্লীয়ু মর্ল ক্রীয়ার্ম, দুঁৱা মর্দী ব্রুষ্।

# ৫१। हैमन घौवस्तिक पौन:पुनिका:।

टेश्यन, भोविखिक, ও পৌनःश्रुनिक निशालन निष्क हत। यथा, हेमचे भवं हैमनम्, श्वो भवं शौविख्यकम्, प्रनःप्रनर्भवं पौनः-प्रनिकम्।

### **৫৮। प्रतीचोदीचातरश्रीनाः।**

প্রতীচ্য, উদীচ্য, তিরুক্টান, এই তিন শব্দ নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, प्रतीचि भवं प्रतीच्यम्, छहीचि भवम् छहोच्यम्, तिरस्थि भवं तिरस्थीनम्।

#### ৫৯। तत साधुः।

तत्म साधुः, এই অर्थि, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामञ्जर, উক্ত প্রতায় সকল হয়। यथा, सभायां साधुः सभ्यः, समाजे साधुः सामाजिकः, खितयौ साधुः खातियेयः, नेदे साधुः वैदिकः, संयामे साधुः सांयामिकः, संयुगे साधुः सांयुगीनः, वित्रक्डायां साधुः वैत-क्छिकः, संकथायां साधुः सांकथिकः, संयहे साधुः सांयहिकः।

### ७०। देये कालादवस्यन्यावे।

च्या महाय तुवाहरत, प्रत च्यर्थ, कालवाहक श्रीिक पित्रिक है है त, यथा महाये हैं के श्रिष्ठा मकल हत । यथा, मासे देवं मासिक मृ, विके देवं वार्षिक मृ, च्यंदे देवम् च्याब्दिक मृ, धंवत्सरे देवं सांवत्सरि-कम्, च्या चाल्या देवम् च्याय चाविक मृ, चाविसे देवं चाव-विकम्।

#### ७५। निर्हे च।

निर्वृत कार्थि रहा। यथा, दिनेन निर्द्धसं दैनिकम्, मासेन निर्द्धसं मासिकम्, वर्षेण निर्द्धसं वार्षिकम्, संबद्धारेण निर्द्धसं सांबद्धारीयं सांबद्धारिकम्।

### ७२। यङ्गोऽङ्ग:।

অংন্শক্রানে অক হর। यथा, खहाँ निवृत्तम् खाह्निसम्।

### ७७। याप्ती च।

गांधि अपर्थं इत्र । यथां, दिनं व्याघा स्थितं दैनिकम्, मासं व्याघ्य स्थितं मासिकम्, वर्षे व्याघ्य स्थितं वार्षिकम्, चत्ररी मासान् व्याघ्य स्थितं चातुर्भोस्यम् ।

#### ७८। वयसि च।

त्राम् व्यर्थि इत्र । यथा, हे वर्षे स्वस्त वयः दिवर्षीताः, दिवर्षीयः, दिवर्षीयः, दिवर्षीयः, पश्च-वर्षीयः, पश्च-वर्षीयः, पश्च-वर्षीयः, पश्चवर्षाः । वर्षीयः, पश्चवर्षाः । वर्षीयः, पश्चवर्षः । वर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षीयः, वोङ्ग्रवर्षेः ।

#### ७८। तत घागतः।

तत खागतः, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामञ्जर, উठ्ड প্রভার দকল হয়। যথা, मधुराया खागतः माधुरः, नगरादागतः नागरिकः, खापणादागतः खापणिकः, छपाध्यायादागतम् खोपाध्यायकम्, पितामञ्चादागतं पैतामञ्चकम्, माद्धरागतम् मात्ककम्, चित्रद्वरागतं सावितम्, खाद्धरागतं भात्ककम्, पितु-रागतं पेत्वकं पित्राम्, स्त्रिया खागतं स्त्रेखम्, पुंषे खागतं पेरासम्।

# ७७। तदहित।

तत् चहति, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসভব, উক্ত প্রত্যয় সকল হয়। যথা, ম্বলছনি ম্বিলঃ, বছল্লসভনি बाहिस्ताः, क्रेट्सर्हति क्रेटाः, भेट्सर्हति भेटाः, ट्याडमर्हति टयाड्यः, सर्धेमर्हति सम्बः, बधमर्हति बध्यः, बत्तमर्हति यत्तियः, ट्रांस्यामर्हति ट्रांस्यायेयः ट्रांस्यायः।

### ७१। तस्रादनपेतम्।

तस्मात् स्वनमेतम्, এই अर्थ्न, श्रीजिशिवित्वत् जेवत्, यथीमस्वत्, जेक श्रजाय मकल रयः। यथी, धन्मोदनमेतं धन्मेत्रम्, न्यायादन-मेतं न्यायम्, सर्घोदनमेतं सर्घम्, पथोऽनमेतं पथ्यम्, शास्त्रा-दनमेतं शास्त्रीयम्, विधेदनमेतं वैधम्।

#### ७৮। तस्येदम्।

तस्य द्रदम, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উচ্চ প্রতার সকল হয়। यथी, विक्लोरिट्टं वैक्लावस्, चिवस्थेदं धैवस्, अनपदस्थेदं जानपदम्, तस्थेदं तदीयम्, एतस्थेदम् एतदीयम्, देवकेंटं दैवम्, खसुरस्थेदम् खासुरम्, सम्राज इटं साम्राज्यम्, इन्द्रखेदम् ऐन्द्रम्, महेन्द्रखेदं माहेन्द्रम्, मनस इदं मानसम्, यरीर खेदं यारीरम्, पित्ररिटं पित्रत्रम्, गोरिदं गळाम्, मिहन-स्केटं माहिषम्, वेणोरिटं वैषावम्, पनासस्वेदं पानासम्, खदिर-खेदं खादिरम्, विल्लखेदं वैल्लम्, सञ्जानामिदं मौञ्जम्, स्लिया दरं स्त्रेयम्, पुंस दरं पाँच्छम्, गङ्गाया दरं गाडुम्, स्त्रिमनत दरं है नवतम्, पशुपतेरिटं पाशुपतम्, शङ्करखेटं शाङ्करम्, स्तरस्रेदं, सौरम्, चन्द्रस्रेदं चान्द्रम्, वेदस्रेदं वैदिकम्, उपनिषद द्रदम् खौपनिषदम्, प्रथिव्या दृदं पार्थिवम्, जनसेदं जनीयम्, तेजस दृदं तेजसम्, वायोरिदं वायवीयस्, श्रवोरिदं शावनस्, रुरोरिटं रहेरनम्, त्रङ्कोरिटं नैयङ्कनं त्राङ्कनम्, श्वापदस्थेटं गौनापटं श्वापदम्, भरतस्थेदं भारतम्, भारतवर्षस्थेदं भारत-वर्षीयम्, युद्धाकिमदं युद्धदीयम्, अस्ताकिमदम् अस्तिदीयम्।

#### ७२। त्वादावेकवचने।

এकराज्य सूक्षान्यार्ने व्यम् ७ व्यम्मान्यार्ने मन् रहे । यथी, तव इटं तदीयम्, मम इटं मदीयम् ।

### १०। युद्धाकास्त्राको यीनवयोः।

ণীন ও ষণ্প্ৰতায় পরে, যুজ্জাদ্স্থানে যুক্জাক ও অক্সদ্স্থানে অক্সাক হয়। যথা, স্তৃত্মাননিত্তী স্থানী নাকান্য আন্ধাননিত্ন আন্ধাননিন্তানোকান্।

#### १५। तवकममकावेकवचने।

अक्वाप्टन अवक अ समक इत्र । यथा, तव इदं तावकीनं तावकाम्, मम इदं नामकीनं नामकाम् ।

### १२। परादेः कन् षौयणि।

ষীয়ণ্প্রতায় হইলে, পর, ঋ, রাজন্প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর কন্হয়, ন ইৎ, ক থাকে। যথা, परखोदं परकीयस्। স্থাকের উত্তর বিকল্পে। যথা, खखोदं खकीयं खीयस्।

# १७। सौर सारव खायमावा:।

(मोत, मात्रव, ও यांश्युव निभाजन मिक्क रह। यथी, स्वर्यखेटं सौरं दिनम्, सरव्या इटं सारवं जनम्, खयम्भोरिटं खायम्भवं धाम।

### १८। भवदीयान्यदीयौ।

खतनी इ. ८ अना नो इ. निशाज्य निष्क रहा। यथा, भवत इ.ट्रं भव-दीयम्, स्त्रन्य स्टेटम् स्त्रन्यदीयम्।

#### १८। तस्य विकारः।

तस्य विकारः, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসমূত, উক্ত

প্रভाग मकत रत। यथा, सुवर्णस्य विकारः सीवर्णः, रजतस्य विकारः राजतः, सीवस्य विकारः सैसः, द्रभ्योविकारः दारवः, देवदारोविकारः दैवदारवः, पयसां विकारः पायसः, खन्नेः विकारः खान्नेयः, सृद्ध विकारः मौद्वः, रुचोविकारः ऐचवः, राज्य विकारः गौजः, श्रिस विकारः विकारः वैवः, तिलस्य विकारः वैवः, विकारः वैवः, विकारः वैवः, विकारः वैवः, विकारः वैवः,

#### १७। तदस्य पण्यम्।

तत् खस्य पर्याम्, अरे अर्थः, श्रीिजिभिनित्तत् उठतः, यथीमस्वतः, उद्यामस्य पर्या नाविष्यः, तेनमस्य पर्या तैनिकः, सपूपा अस्य पर्यामस्य पर्या नाविष्यः, तर्वादुनमस्य पर्या तैनिकः, सोदका खस्य पर्या मौदिककः, स्थीरमस्य पर्याम् वीशिकः, ताब्बुनमस्य पर्या नौदिककः, स्थीरमस्य पर्याम् सीशिकः, ताब्बुनमस्य पर्या ताब्बुनिकः।

#### ११। तदस्य प्रसर्णम्।

तत् खख पहरणम्, धरे व्यर्थ, श्रीजिशिष्टित् उहत्, यथामस्त्र, उक श्रेजित मकल हत् । यथा, धत्रस्य पहरणं धातुक्कः, व्यक्तिः चस्य पहरणम् व्यक्तिः, पानोऽस्य पहरणं पासिकः, परश्वधम् चस्य पहरणं पारश्विकः, परश्वरस्य पहरणं पारश्विकः, तरवारिरस्य पहरणं तारवारिकः, श्रित्रस्य पहरणं श्राक्तीकः, विषय् पहरणं वाष्टीकः।

### १४ । तदस्य प्रयोजनम् ।

तत् चस प्रयोजनम्, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामञ्जव, উক্ত প্রভায় সকল হয়। यथा, खुगः प्रयोजनमञ्ज खार्यम्, यशः प्रयोजनमञ्ज वश्यस्, खायुः प्रयोजनमञ्ज खायुष्यम्, कामः प्रयो-जनमञ्ज कास्यम्, स्ट हप्रवेशनं प्रयोजनमञ्ज स्ट हप्रवेशनीयम्, खडु- प्रवचनं प्रयोजनमस्य खतुप्रवचनीयम्, संवेग्ननं प्रयोजनमस्य संवेग-नीयम्।

# १३। तदस्य घीलम्।

तत् चस घोचम्, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উক্ত প্রতার সকল হর। যথা, तपोऽस घोनं तापसः, गुरोः दोषाणामावरणं क्रचम् क्रचमस घोनं क्राचः, घिचास घोनं घैचः, प्ररोहोऽस घीनं प्रारोहः, सुरा सस घोनं चौरः।

### ৮०। तदस्य प्राप्तं कालात्।

तत् खस्य माप्तम्, এই অর্থে, कः निर्दाहक প্রতিপদিকের উত্তর, यथामखर, উক্ত প্রতায় সকল হয়। यथा, समयोऽस्य माप्तः साम-यिकः, कालोऽस्य प्राप्तः कालिकः, दिष्टोऽस्य प्राप्तः देष्टिकः, ऋत्रस्य प्राप्तः स्वार्त्तवः।

### **५**५। अधिकत्य कृतं ग्रन्थे।

शुक्र तूथांदेल, खिधकत्य कतम्, अदे अर्थ, श्रीिठ भिरित्त छे हत्, यथां महात्र छे छे श्री महात्र कतम् यथां महात्र कतम् सामायसम्, भगवन्तमधिकत्य कतं भागवतम्, भरतानिधिकत्य कतं भागवतम्, भरतानिधिकत्य कतं भागवतम्, परवानिधिकत्य कतं भारतम्, वाक्यं पद्श्वाधिकत्य कतं वाक्यपदीयम्, राघवान् पास्त वां साधिकत्य कतं राघवपास्त वीयम्, किरातमञ्जूनश्वाधिकत्य कतं किराताञ्जुनीयम्, खतुशासनमधिकत्य कतम् बास्त सासनिकम्, अश्वमेधमधिकत्य कतम् वासनिकम्, अश्वमेधमधिकत्य कतम् वासनिकत्य कतं मौषवम्, महामस्यानमधिकत्य कतं सोषवम्, महामस्यानमधिकत्य कतं मौषवम्, सामामस्यानमधिकत्य कतं सहामस्यानिकम्, खुगीरोहस्म स्थानस्य कतं स्वारोहस्यान् स्थानसम्, खुगीरोहस्म स्थानस्य कतं स्वर्गरोहस्यान् स्थानस्य कतं स्वर्गरोहस्यान् स्थानस्य कतं स्वर्गरोहस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्गरोहस्य स्वर्गस्य स्वर्यस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्गस्य स्वर्यस्य स्वर्गस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्यस्य स्वर्यस्यस्य स्वर्यस्यस्य स्वर्यस्यस्य स्वर्य

### **४२। तस्त्रे प्रभवति।**

तसी प्रभवति. এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উক্ত প্রভাগ সকল হয়। যথা, सन्तापाय प्रभवति सान्तापिकः, सन्ना-हाय प्रभवति सान्नाहिकः, संयामाय प्रभवति सांयामिकः, संघाताय प्रभवति सांघातिकः, उत्थानाय प्रभवति खौत्यातिकः।

# ৮৩। कार्मुकं धनुषि।

ধনু অর্থে, কার্ম্কশকনিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, कर्माणे प्रभवति काम्यकं धतुः।

# **৮**8। तसी हितम्।

तस्त्रे हितम्, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর, যথাসম্ভব, উক্ত প্রভাৱ সকল হয়। যথা, यञ्चाय हितं यञ्चियम्, अध्यराय हितम् अध्यरीयाम्, बच्चायो हितं ब्राच्चाययम्, विश्वजनेस्यो हितं विश्वजनीनम्, सर्वजनेस्यो हितम् सार्वजनीनम्।

#### ৮৫। काले नचतात्तद्योगे।

काल ए नक्षज्यां व्याह्यां, नक्षज्यां के श्री छिपिनिएक छेवत, यथां मह्य , छेक श्रेणात मकल रहा। यथां, विशाखया नक्षलेण युक्तो मासः वैशाखः, राधया नक्षलेण युक्तो मासः राधः, ज्येष्ठया नक्षलेण युक्तो मासः व्याह्या नक्षलेण युक्तो मासः व्याह्या नक्षलेण युक्तो मासः व्याह्या नक्षलेण युक्तो मासः भादः, भद्रपद्या नक्षलेण युक्तो मासः भादः, भद्रपद्या नक्षलेण युक्तो मासः भादः, भद्रपद्या नक्षलेण युक्तो मासः प्रोष्टपदः, व्याह्यया नक्षलेण युक्तो मासः प्रोष्टपदः, व्याह्यया नक्षलेण युक्तो मासः कार्त्विकः, क्षत्रया नक्षलेण युक्तो मासः कार्त्विकः, कार्त्विकः, क्षयहायण्या नक्षलेण युक्तो मासः व्याह्ययणः व्यावहायणः व्यावहायणः नक्षलेण युक्तो मासः व्याह्ययणः व्यावहायणः व्यावहायणः नक्षलेण युक्तो मासः मार्ग्वोणं, न्यग्विकः, न्याविकः, न्यग्विकः, न्याविकः, न्याविकः, न्याविकः, न्यग्विकः, न्याविकः, न्

नचलेय युक्तो भासः मार्गिश्ररसः, मघया नचलेय युक्तो मासः माघः, फस्युत्या तचलेय युक्तो मासः फास्युनः फास्युनिकः, चिलया नचलेय युक्तो मासः चैलः चैलिकः।

#### ৮७। यत्तोपिस्तिष्यपुष्ययो:।

िष्ठा ७ পूषा मस्त्र घ लाभ रत्न । घर्षी, तिच्छेण नचलेण युक्तो मासः तैषः, पुच्छेण नचलेण युक्तो मासः पौषः।

#### ५१। तद्वहति।

तत् वहति, এই অर्थि, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामञ्जर, উক্ত প্রত্যর দকল হব। यथा, धुरं वहति धुर्यः धौरेयः, सर्वधुरां वहति सर्वधुरीयः, चत्रधुरां वहति चत्रधुरीयः, इन्हं वहति हासिकः, सीरं वहति सैरिकः, रषं वहति रथः, युगं वहति युग्यः, सकटं वहति साकटः।

#### **४४। तेन जीवति।**

तेन जीवति, এই অर्थि, প্রাতিপদিকের উত্তর, यथामसुत, উক্ত প্রতায় সকল হয়। यथा, वेतनेन जीवति वैतिनकः, वास्त्रेन जीवति वास्त्रिकः, जावेन जीवति जाविकः, उपदेशेन जीवति चौपदेशिकः। धनुषा जीवति धानुष्किः, क्रयविक्रयाम्यां जीवति क्रयविक्रयिकः, खायुधेन जीवति चायुधिकः खायुधीयः, वागुर्या जीवति वागुरिकः, नावा जीवति नाविकः, व्यव-स्रारेण जीवति व्यवस्थारिकः।

# • ৮৯। तद्**खिन्** दीयते।

तत् स्वित्तान् दीयते, अर्थे अर्थः, श्रीिजिशिनिरुत उँवतः यथीमस्वतः, উक श्रेजात्र मकन रत्र । यथीः, द्वाविस्तान् द्विः न्कायः सामः स्वस्तान् उपदा वा दीयते द्विकं स्वतम्, तिकं स्वतम्, चढ्यकं स्वतम्, पञ्चकं स्वतम् । तृक्षि श्रेजृष्ठित्र मानस्लारे रहेता थीकि ।

### २०। ताइच्ये।

जामर्था तूसारेल, श्रीजिशिमित्व छेवत, यथामस्त्र छेक श्रजास मकल रस । यथा, पादाधसदकं पादाम्, खर्षाधमुटकम् खर्यम्, बस्ये द्वदं बावेयम्, खितयये द्वदम् खातिष्यम्, खिनदेवताये द्वदम् खम्बिदैवसम्, पितदेवताये द्वदं पिस्टैवसम्।

#### ৯১। खार्थे।

चार्थ, श्रीजिलिंदिक छेडत, रथांमखर, छेड श्रात मकल रहा।
श्रीजाह रहेता श्रीजिलिंदिक वर्धित दिनक्षण घरि मा, श्रीक वर्धि वरिक्ठ थीरि । यथा, बम्होरेन बाम्नवः, चोर एव चौरः, चम्हान एव चाम्हानः, मन एव मानसम्, देवतेव दैवतम्, पद्म एव प्राचः, स्नतमेव कौतक्षम्, कृतहन्नमेव कौतहन्नम्, महदेव माहतः, एक एव राज्यः, भेवजमेव मेषज्यम्, द्वाहि येतिन्द्यम्, त्रिगुणा एव त्रेगुण्यम्, कर्णा एव काह्यस्म, द्विगुणावेव देगुण्यम्, त्रिगुणा एव त्रेगुण्यम्, चह्राणा एव चाह्रगुण्यम्, चतारो वर्णा एव चाह्रविश्वम्, सेना एव सेन्यम्, सिद्धिये वादिध्यम्, सेनीपमेव सामीध्यम्, उपमा एव श्रीपय्यम्, सुखमेव वादिध्यम्, सोटर एव सोद्धः, एक एव एककः, स्नत्य एव खाल्य-िकः, स्तर एव स्वर्धः, मर्च एव मर्चः, समानमेव सामान्यम्, वाव एव वावकः, वान एव मर्चः, समानमेव सामान्यम्, वाव एव वावकः, वान एव वानकः, नौरेव नौका, नवभेव नव्यम्

# ৯२। देवात्तल्।

স্বার্থে দেবশব্দের উত্তর তল্প্রতায় হয়। যথা, देन एव देवता।

### ৯৩। श्वाग इप नामस्यो धेय:।

ষার্থে ভাগ, রূপ, নামন্, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর ধেয় প্রত্যয় হয়। যথা, মান एব মান্দীয়া, নামীব নাম্পরম্।

#### ৯৪। ध्दस्तिमन्।

बार्थि, प्रृम्मस्वत् উत्तत् जिकन् প্रजात दत्त। यथा, न्दरेव स्वतिका ।

# ৯৫। संसी प्रयंशायाम्।

প্রশংসা বুঝাইলে, স্বার্থে, মৃদ্শন্তের উত্তর স ও র প্রভার হয়। যথা, দল্মন্তা অত্ করো, করেন্তা।

# ৯७। नूबनूतनी।

नुष्त ଓ नृष्य निशाष्ट्रात निक रह । यथा, नृवसेव नूतां, नूतनम् ।

### २१। भौपविक्य ।

ঔপয়িক নিপাতনে সিদ্ধ হয়। ঘথা, ভদায় एव चौपविकः।

### ab। सोऽख निवासोऽभिजनो वा।

यः षस निवासः (२४), सः ससाधिकनः (२०), अरे हुरे सार्थ, श्रीिष्ठ मित्र से उद्युत, यथानस्यत, उक श्री स्व मकत इत् । वथा, मयुरा सस निवासः मायुरः, मिथिवा सस निवासः मेथितः, कस्म्रोरोऽस्य निवासः कास्म्रोरः, कस्म्रोरोऽस्य निवासः कालिकः, कस्म्रोरोऽस्य निवासः कालिकः, उक्तवोऽस्य निवासः कालिकः, सिम्युर्स निवासः सम्म्रदः, तच्च-रिवासः निवासः वाचितिः, विदेहोऽस्य निवासः वेदेषः, प्रमुखात्रेश्च निवासः पाञ्चातः, मगधोऽस्य निवासः मागधः, प्रमुखात्रेश्च निवासः मागधः, प्रमुखात्रेश्च निवासः मागधः, प्रमुखात्रेश्च निवासः माग्रः, स्क्रोऽस्य निवासः माग्रः, स्क्रोऽस्य निवासः माग्रः, स्क्रोऽस्य निवासः माग्रः, स्क्रोऽस्य निवासः वाकः। अलिकन सर्थः अरेशः स्वारः स्थाः, ग्रम्थाः स्वारः हेणाति ।

<sup>(</sup>२५) निवासी नाम यत सस्प्रत्युक्यते।

<sup>(</sup>२०) व्यक्तिनाने नाम यह्न पूर्व्ये दिवतस्।

### ৯৯। लोपो बद्धवचने।

वक् वक्रां किवान श किवान कार्थ विश्वित श्रेणास्त लाल एत । यथा, खड़ एवां निवासः खड़ाः, बड़्ड्ड एवां निवासः बड़्डाः, कांब्ड्ड एवां निवासः विदेशाः, उत्कर्ण एवां निवासः कांब्र्डाः, प्रस्तीतः एवां निवासः कांब्राः, मगभ एवां निवासः मगभाः, पञ्चात्र एवां निवासः पञ्चाताः, कांब्रीर एवां निवासः कांब्रीराः।

# ५००। न स्नियाम्।

खीलिए इस ना। यथा, मगध खासां निरासः मांगध्यः, पश्चास खासां निर्वासः पाञ्चीस्यः विदेश खासां निरासः वैदेशः, कविक्र-खासां निरासः कार्सिक्राक्षेत्राः तार्ष्टीका

# **५०५। सीरस्य राजेत्वेवम्**।

वः चस्र राजा, वरे चर्थि अरेक्ष्ण; वर्षाय, सोऽस्य निवासः, सोऽस्याभिक्षनः, वरे पूरे वर्ष्ण रा প্রভায় ও कार्या रह, सोऽस्य राजा, এरे व्यर्थि मिरेक्ष्ण रहा। यथी, बाक्कीरस्य राजा कार्क्षीरः, कविकृत्य राजा कार्तिकः, विदेशस्य राजा पश्चात्रः, नगधस्य राजा भागधः, निवधस्य राजा नैवधः। वस्त्राट्टा—कश्कीराः, कविकृतः, विदेशः, पश्चाताः, नगधाः, निवधाः।

#### ५०२ । तस्य भाव:।

तस्य भावः, अहे व्यर्थः, श्राञिशिक्षित्वतं छेत्वतं, वर्णामञ्चरः, छेजः श्रेष्ठात्र मकल हत् । वर्णाः, ज्ञासारस्य भावः कौमारस्, शिक्षोभावः श्रेष्यक्तम्, स्वविदस्य भावः स्वाविदस्, ग्रदोः भावः मौरवस्, वघोभावः साधवस्, सुनु भावः सौन्यस्, स्वोः भावः सार्ववस्, स्दोभावः सार्ववस्, स्टोभावः पाटवस्, सुर्भेः

भावः वीरमम्, रमणीवस्य मावः एवं को यक्तम्, वक्तिवस्य भावः विक्रम्, स्थित्स्य भावः सर्वे कृत् भवः स्थित्स्य भावः वास्त्रीम् कृष्ट भावः सर्वे कृत् भावः वास्त्रम्, कृष्ट भावः वास्त्रम्, कृष्ट भावः वास्त्रम्, कृष्ट भावः वास्त्रम्, व्यास्त्र भावः वीभाग्यम्, इर्थस्य भावः दीभाग्यम्, मधुरस्य भावः वास्त्रम्, वास्त्रम्त्रम्, वास्त्रम्, वास्त्रम्, वास्त्रम्यम्, वास्त्रम्, वास्त्रम्, वास्त्रम्यम्, वास्त्रम्, वास्त्रम्यम्यम्, वास्त्रम्, वास्त्रम्यम्यम्यम्यम्यम्, वास्त्रम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्

### ১०७। तस्य भावः नर्मा च।

तस्य भावः, तस्य कर्न्या, अरे पूरे कार्थ, श्रीिक निर्देश छेठत, यथीमें उत् छेठ श्री में में में में स्वाद्य भावः कर्न्या वा बास्त्राख्यम्, चीरस्य भावः कर्न्या वा चीर्यम्, श्रवसस्य भावः कर्न्या वा खाकस्यम्, सेनापतेभीवः कर्न्या वा सेनापत्यम्, स्विधिपतेभीवः कर्न्या वा खाधिपत्यम्, संस्त्रुभीवः कर्न्या वा सस्यम्, मूर्द्धं भावः कर्म्य वा सौर्यम्, वीरस्य भावः कर्न्य वा बीर्यम्, द्रतस्य भावः कर्म्य वा द्रत्यं दर्गेत्वम्, प्ररोहितस्य भावः कर्म्य वा चौरो-हित्तम् सहितस्य भावः कर्म्य वा सौर्वहित्यम्, सारक्रियाम्, नाक्षिकस्य भावः कर्म्य वा साहितस्य भावः कर्म्य वा खास्तिक्यम्, नाक्षिकस्य भावः कर्म्य वा साहितस्यम्, प्रस्कृतस्य भावः कर्म्या वा पारिक्रसम् विषानो भावः कर्म्य वा वाणिक्यम्, ग्रुवेभीवः कर्म्य वा ग्रीवम्, व्यग्नेविषः कर्म्य वा व्यश्नेवम्, स्रवेभीवः कर्म्य वा ग्रीवम्, व्यव्यवस्य भावः कर्म्य वा व्याकीश्वन्, व्यव्यवस्य भावः कर्म्य वा व्याकीश्वन्, व्यव्यवस्य भावः कर्म्य वा ग्रातिकृत्यम्, प्रवृत्वस्य भावः कर्म्य वा ग्रीव्यवम्, प्रश्चात्रभीवः कर्म्य वा ग्रीव्यवम्, प्रश्चात्रभीवः कर्म्य वा ग्रीव्यवम्, प्रश्चात्रभीवः कर्म्य वा ग्रीव्यवस्य भावः कर्म्य वा व्यवस्य भावः कर्म्य वा व्यवस्य भावः कर्म्य वा नेपुच्यं वा वावस्य भावः कर्म्य वा नेपुच्यं वेपुच्यः विश्वनस्य भावः कर्म्य वा नेपुच्यं वेपुच्यः विश्वनस्य भावः कर्म्य वा वाद्यं वा वाद्यं वा वाह्यं वाह्यवक्रम्, व्यवस्य भावः कर्म्य वा वाद्यं वाह्यवस्य भावः वाह्यवस्य वाह्यवस्य भावः वाह्यवस्य वाह्यवस्य वाह्यवस्य भावः वाह्यवस्य वाह्यव

#### ५०८। इतरेव्यपि दखनो।

विष् श्रेण्ठि श्रेण्या मकन व्यथ्ण श्रेण्ठि य मकन व्यर्थ मर्निष्

इहेन, उद्यित नाना व्यर्थ मिथिए श्रीश्री यात्र । क्रिश्त स्टन

छेनारत मिण्ड रहेएउट । यथी, धन्धे चरित धान्धिकः,
वयं गतः वयाः, प्रविध्या रैन्नरः पाधिवः, सर्वभूमेरीन्वरः सार्वभौमः, चन्नवा व्यञ्चते चानुषं कृपम्, त्रवयेन व्यञ्चते त्राव्यः

यद्यः, रसनवा व्यञ्चते रासनो रसः, त्रचा व्यञ्चते त्याचः स्वयः,
चन्नवा निष्पसं चानुषं प्रत्यचम्, त्रवयेन निष्पसं त्राव्यम्,
रसनवा निष्पसं रासनम् त्रचा निष्पसं त्राव्यम्,
परानवा निष्पसं रासनम् त्रचा निष्पसं त्राव्यम्,
पारं गतवान्

पारीवः, पारावारं गतवान् पारावारीयः, स्वर्धेन क्रीतः व्यार्थः,
विद्यावा वर्षे वैद्यम्, विद्यावां कृष्यः वैद्यः, स्त्रिवा नितः

स्त्रीयः, हारे नियुक्तः सीवारिकः, साय्हागारे नियुक्तः भाव्हावार्मिकः, स्वयवः प्रभवति कृष्ठवते गङ्गा, विदूरात् प्रभवति

वेद्रव्यी मणिः, रथेन सञ्चरते र्शयकः, अक्षेन सञ्चरते वास्त्रिकः, श्वनीन हन्ति शावनिकः, शक्वनानु हन्ति शावनिकः, सहसा वर्त्तते साहतिकश्चौरः, जलेन वर्त्तते जलीयो मत्यः, धातुकुलं वर्तते आतुकू लिकः, प्रतिकृतं वर्त्तते प्रातिकृत्तिकः, नावा तार्ट्या नाव्या नदी, वयसा तुल्यः वयस्यः, तुल्या सिमातं तुल्यम, ग्टह-पतिना संयक्तः गार्र्सपत्योधिनः, समाने तीर्थे गुरौ वसति सतीर्थः, ममाने उदरे प्रयितः समानोदर्थः अये दीयते खियस, जोते विदितः खौकिकः, सर्वेलोके विदितः सार्वेखौकिकः, नित्यं क्रियते टीयते वा नैत्यं नैत्यकं नेत्यिक्स, निमित्तेन क्रियते टीयते का नैमित्तिलम्, प्रवेशने दीयते प्रावेशनं प्रावेशनिकम्, सर्व्याद्वानि व्याप्तीति सर्वाङ्गीनस्ताप , चापपदं प्राप्तीति स्नापपदीनः पटः, चतुपदं बद्धा चतुपदीना उपानत्, चान्यमिलं सन्यक् गच्छति चक्यमित्रीयाः, सप्तामः पट्रवाष्ट्रते साम्रपदीनं सख्यम्, इन्द्रस्य चालनो विक्रम् इन्द्रियम्, कुमायमिन कुमायीया बुद्धिः ; काक-तालमित (७०) काकता<del>ड़ी</del> बस्, प्राक्**रक्यू**तः प्राचीनः, द्यवाक् सम्भृतः अवाचीनः, सुस्तातं प्रकृति सौसातिकः, सुख्यावन प्रकृति मौखशायनिकः, परटारान् गक्कति पारदारिकः, याचितेन निर्दृत्तं याचितकम्, खर्थे स्टक्काृति खार्थिकः, खांपणस्य धनीत्रम् चापणिकम्, नर्दश्च धनीत्री नीरी, वातस्य समनं कीपनं वा वातिकाम्, पित्तस्य ग्रमनं कोपनं वा पैत्तिकाम्, सञ्चिपातस्य ग्रमनं कोपनं वा साद्विपातिकम् अस्ति परलोक इति मतिर्यस चा-सिकः, नास्ति परनोक इति मतिर्थस्य नास्तिकः, चस्ति दिष्टमिति मतिर्यस दैष्टिकः, अपनिक्याः फलम् सामलकम्, बदयोः फलं वदरम्, अञ्चलकः फनम् आञ्चलम्, न्ययोषस्य फलं नैवयोधम्।

<sup>(</sup>७०) काकाममनमिन तालपतनमिन काकतालम्।

#### **५०৫। खोप: कचित् प्रत्यवस्य।**

## ५०७। जब्बा विभाषा।

अनुगरकत छेतत विकरण्य। यथा, ज्ञस्याः फतम् जस्तु, आस्वन्स्।

# **५०१। हैयद्भवीनाद्यक्षीनी**।

रेश्त्रक्रवीन अ अमाधीन निशांज्यन मिक्क श्रः। यथा, ह्यो गोदोस्तात् सद्भवति, स्रेयक्कवीनम्, सद्य सो वा घटते सद्यसीनं मरणम्, सद्यसीनो वियोगः, सद्य सो वा मस्तते सद्यसीना स्ती।

# ১०৮। पान्यसाजिवार्षु विकाः।

পाइ, नाकिन्, ও दाई विक निপांत्र निष्क इत। यथा, पवि कुश्चलः पान्यः, साधात् इष्टवान् साधी, उद्या जीवति वार्षेषिकः।

# ১০৯। पासुश्चिकासुष्यायणी।

বিকণ্ ও বারনণ্ প্রভার সহিত অদস্শক্ষানে আযুক্ষিক ও আযুব্যারণ, এই দুই শব্দ নিপাতনে দিল্ক হর। যথা, আর্ত্তিরন্ ( परकोषी) हितन् আর্ত্তিকন্, আর্ত্ত (स्तस्य) पुत्तः আর্ত্তা-ব্যাঃ।

### **५५०। पोन:पुन्यम्**।

পৌন:পুন্য নিপাতনে निश्च इत्र। यथी, पुनः पुनरहरानं सङ्घटनं ना मौनःपुन्यम्।

#### ५५५। नस्य कोपोऽन्यस्य।

#### **১১२। नानन्तस्य पणि।**

यण् श्रात श्रह्मात्र व्यवस्थात्र श्री श्रिष्ट विकास विद्या स्थान स्थान

# ১১७। ये च भावकमावस्त्रे।

उद्घि उत् व भरत थां किरल, ध्वन् छां शां श्व श्वी जिभिनितकत नकारतत्त्र लांभ रत्न ना । यथी, सामिन साधुः सामन्यः, ब्रह्माया साधुः ब्रह्मायाः, ध्वच्चिन साधुः ध्वच्चन्यः, राखनि साधुः राजन्यः, क्रक्कायो प्रभवति कर्म्माय्यः, मूर्जिभवः सूर्वन्यः। कर्म ଓ छार ध्वर्थि नकारत्त्व लांभ रत्न । यथी, राज्ञो भावः कर्म्मा वा राज्यम्।

# ५५८। नाध्वासनोपानि।

भीनश्रेष्ठात्र रहेरम, अध्वत्, आंक्रात्, और मूरे श्रीष्ठिनिक्तित् नकारत्त् लान रत्न ना। यथी, आस्त्रिम साम्नुः अर्ध्वनीनः, आसाने सितम् आसानीनम्।

#### ५५८। सनन्तस्यापत्यषित्र ।

অপত্যার্থে বিহিত বন্প্রতায় পরে, থাকিলে, মন্তাগান্ধ প্রাতি-পার্দীকের নকারের লোপ হয়। যথা, স্তুষান্ধীরদান বীষানা, বুর্ঘান্ধীরদান বীর্ঘানা, ক্রনান্ধীরদান নানা।

#### **५५७। वा हितनामः**।

হিতনামন্, এই প্রাতিপদিকের বিকম্পে। যথা, দ্বিননানীরেদন্ত हैतनामः हैतनामनः।

## **३**५१ । हेमाध्यनोविकारे।

বিকারার্থবিহিত বণ্প্রতার পরে, হেমন্, অশ্নন্, এই দুই প্রতিপদিকের নকারের লোপ হয়। যথা, ऐस्तो विकारः हैनः, অফ্রনী বিকাरः আফ্রনা

## ১১৮। चर्माणः कोषे।

কোষ অর্থে, চর্মনের নকারের লোপ হয়। যথা, च**র্দ্ধাথা** বিকাহ: चार्म्सः कोषः।

## ५५५। ब्रह्मणोऽनाती।

क्रांठि जिन्न व्यर्थ, त्रकान् गरम् त नकारत्त् त्माल इत । यथा, बच्चास्य देवता बाच्चाम् व्यस्तम्, बाच्चां हृतिः, बाच्चाो च्योषधिः; बच्चा उपास्ते बाच्चाः; बच्चाण इयं बाच्चाो ततः। क्रांठि व्यर्थ इत ना। यथा, बच्चाणोऽपत्यं बाच्चाणः जातिविशेषः।

#### **५२० | नेनन्स्य प्रणि।**

वन्थ्रात रहेता, हेन्डांगां श्व श्वांजिशीमात्त्व नकारत्व लाश रह ना। यथा, वित्तन दुदं वाजिनस्, इत्तिन दुदं इत्तिनम्, भेधाविन दुदं मेधाविनम्, स्वित्वया दुदं स्वान्वियाम्। अश्रा अर्थ रह। यथा, नेधाविनोऽपत्यं मेधावः, मायाविनोऽपत्यं मायावः। गांथिन् প্রভৃতির হয় না। যথা, नाधिनोऽपत्सं नाधिनः, केशिनोऽपत्सं केशिनः। ইন্ সৃৎযুক্ত বর্ণে মিলিড হইলে হয় না। যথা, स्विकार्वे प्राक्तिकाः, तपिस्तिोऽपत्सं तापिस्तिः, चिक्रकाः स्वपत्सं चाक्रिकाः।

## **>२> तस्य भावस्वतन्त्रो ।**.

तस्य भावः, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর আ ও তল্ হয়, ল ই॰,
ত থাকে। অপ্রতায়ায় শব ক্লাবলিক, তল্প্রতায়ায় শব ব্লালিক

য়য়। য়থা, प्रमोर्भावः प्रमुत्तम्, प्रमृताः भीरोर्भावः भीक्तम्,
भीक्ताः मनुष्यस्य भावः मनुष्यतम्, मनुष्यताः खमरस्य भावः
खमरत्तम्, खमरताः प्रशोभीवः प्रमुत्तम्, प्रमृताः न्यूरस्य भावः
न्यूरतम्, खमरताः प्रशोभीवः प्रमुत्तम्, प्रमृताः न्यूरस्य भावः
न्यूरतम्, खमरताः प्रशोभीवः प्रमुत्तम्, कातरताः चपत्रस्य
भावः चपत्रतम्, चपत्रताः नास्तिकस्य भावः नास्तिकत्मः,
नास्तिकताः खस्यस्य भावः खनस्यम्, खलस्यः
भावः खस्यत्म्, अस्यताः मूर्षस्य भावः मूर्षत्वम्, मूर्षताः
मूकस्य भावः स्वत्वम्, स्वताः राज्ञो भावः राज्यतम्, राजताः
यूनो भावः स्वत्वम्, युवताः स्वृतस्य भावः स्वत्वम्, स्वृत्ताः।

### **५२२। वा नीसादेरिमनि:।**

तस भावः, এই অर्थ, नील প্রভৃতি প্রতিপদিকের উত্তর বিকশ্পে ইমনি হয়, ই ইৎ, ইয়ন্ থাকে; পক্ষে প্র ও তল্ হয়। ইয়ন্ প্রভয়াত শব্দ পৃথলিল হয়। য়থা, नीलख भावः नीलिमा, नीलतम्, नीलता; पीतस्थ मावः पीतिमा, पीतत्वम्, पीतता; दुर्तंस्थ भावः दित्तमा, दत्तत्वम्, दक्तता; ग्रुक्तस्य भावः ग्रुक्तिमा, ग्रुक्तसम्, ग्रुक्तता; वक्तस्य भावः विक्रमा, वक्रत्वम्, वक्रता; घीतस्य भावः ग्रीतिमा, ग्रीतत्वम्, ग्रीतता; उष्णस्य भावः दिश्लीमा, उष्णतम्, उष्णता; अष्ट्रस्य भावः विक्रमा, अष्ट्रसम्, अष्ट्रता; मधुरस्य भावः मधुरिमा, मधुरत्वम्, मधुरता।

#### - ५२७। चोर्लीपोऽन्स्यस्य ।

रेमिनिश्रात रहेल, गायत अखिरिष्ठ उतार्त लाल रत (०)।
यथा, बघोमांवः बिमा, बघुत्म, बघुता ; बागोमांवः बिमा, बबुत्मम, खबुता ; तनोभांवः तिनमा, तद्वतम्, तत्ता ; खादोभांवः खादिमा, खादुत्वम्, खादुता ; पटोभांवः पटिमा, पट्तम, पट्ता ; क्ष्णोभांवः क्षणमा, क्ष्णुतम्, क्ष्णुता ।

## ১७८। ऋतो र: प्रयादे:।

रेमिन প्रकार रहेल, शृथू, मृष्, पृष, कृष, जृष, शित्रृष, अहे मकल मास्त्र श्रष्टात्न र रत (३३)। यथा, प्रयोगीयः प्रथिमा, प्रषुत्वम्, प्रषुता; खदोभीयः मदिमा, खदुत्वम्, खद्रता; ढढ्ख भावः द्रृद्धिमा, ढढ्लम्, ढढ्ता; क्रमस्य भावः क्रमिमा, क्रमत्वम्, क्रमता; परिदृद्धः भावः परिवृद्धाः, परिदृद्धः भावः परिवृद्धाः, परिवृद्धः भावः परिवृद्धाः, परिवृद्धः, परिवृद्धः,

## ५२६। प्रिय महतो: प्र मही।

रेयिन প्रकार सरेटल, श्रियसान श्रिष्ठ यहरसान यह रह (०১)। यथा, प्रियस भावः प्रेमा, प्रियतमृ, प्रियताः महतो भावः महिमा, महस्त्रसु, महत्ता।

>> ) गुब क्रस्य दीर्घाणां गर क्रस द्राघाः।

हेगिन প্রত্যর हहेलে, श्रेक्ट्रांटन गत, द्रम्हांटन दुन, ও नीर्घहांटन
मूचि हत (०১)। वशी, ग्रहीभावः गरिमा, गुरूतम्, गुरूता;
स्वास भावः हिसिमा, स्वातम्, स्वाता; दीर्घस भावः
द्राधिमा, दीर्घतम्, दीर्घता।

#### (०১) देश ७ जेवमू ऋलाउ, अदे मूखाद कार्या दव

#### **५२१। स्मा**।

वक्ष मास्त्र खेवत हेगिन हहेल, खूमन् निभाजीन मिस्त हर । यथी, बह्रोमीनः मुमा ।

## **५२५। श्रीपरये बतिच्।**

नामृणा तूथाहरत, श्राजिलमिरकत उठत विक् हत, हे हह, वर श्रोरक। यथी, चन्द्र इत सखं चन्द्रवन्त्रसम्, हिममिन श्रोतसम् हिममत् श्रोतसम्, ससद् इत गम्भीरः ससद्वन्त्रस्थीरः, पर्कत इव छत्ततः पर्कतवद्वताः, नाष्ट्रस्य इव खधीते श्राह्मस्यवद्धीते, बिस्सय इव युध्यति व्यास्त्रयवद्युध्यति, पितरमिन प्जयति पिरत्वत् पूजवस्युपाध्यायम्, प्रसमिन स्तिश्चति इस्तरम् सिस्तिति श्रिष्यम्, स्टिहे इत वस्रति स्टइनद्दस्ति वने, श्रयाद्यामिन वेते श्रयावत् श्रेते भूतसे, देवदत्तस्थेन धवनम् देवदत्तनद्भवनं यस्तरस्थ, रामस्थेन पिरस्तिः रामनत् पिरस्तिस्थरतस्य, राजेन रास्तरम्, खास्नोन खास्त्रम् ।

## ১२৯। तेन वित्तत्रुषु चणौ।

तेन वित्तः, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর চুঞ্ ও চণ হর। यथा, অর্থন বিলাঃ অথানুষ্কুঃ, অর্থনথাঃ বিতাযা বিলাঃ বিত্তানুষ্কুঃ, বিত্তানথাঃ ; স্থানীন বিলাঃ বাংননুষ্কুঃ, বাংননথাঃ ; सायया विलाः सायानुष्कुः, सायानथाः ; अल्लेख वित्तः अल्लानुष्कुः, अल्लानथाः ; कुर्माथा विताः कर्मानुष्कुः, कर्मानथाः ।

১৩०। तहस्याखिन् वा संजातं तारकाहिस्य इतः । तत् बस्य संजातम्, तत् बिस्तिन् संजातम्, ब्ले पूरे अवर्थः, श्रीष्ठिभित्तिकृत् छेहत् रेष्ठ रहा। यथा, तारका बिस्तिन् संजाता तारिकतं नभः, पञ्चना बस्त संजाताः पञ्चनित्वकृतः, फ्रकानि ख्य संभातानि फवितो द्वः, प्रधास्त्रशः संकातानि पुरिवा बता, तर्का खस्याः संजाताः तर्किना नदी, जलका अस्मिन् संजाता उत्कच्छितं मनः, अञ्चकारमस्मिन् संजातम् अञ्च-कारितं जगत्, कनक्कोऽस्य सञ्चातः कलक्कितसन्द्रः, कर्दमोऽस्मिन् संजातः कहमितः पन्याः, पुलकान्यस्मिन् संजातानि पुलकितं गरीरम्, चहुरमस्य संजातम् चहुरितं धान्यम्, व्याधिरस संजातः व्याधितो मतुष्यः, मञ्जरी मञ्जरितः, जुदान जुदानितः, स्तवक स्तवितः, किसलय किसलियतः, स्तुल स्तुलितः, क्षेत्रज्ञ कुवखितः, कोरक कोरकितः, निद्रा निद्रितः, सद्रा सद्रितः, बुभचा बुभृचितः, पिपासा पिपासितः, सुख सुखितः, दुःख दुःखितः, त्रख त्रिंखतः, तिखक तिलक्षितः, गर्व्य गर्व्धितः, इर्ष इर्षितः, जुध् जुधा जुधितः, सीमन्त सीमन्तितः, ज्वर उपरितः, रोग रोगितः, रोमाञ्च रोमाञ्चितः, पग्छा पण्डितः, कट्यास कट्जिनिः, दृष्ट्या दृषितः, कल्लोन कल्लोनितः, गैनन भैन-चितः, कन्द्रच कन्द्चितः, विस्व विस्वितः, प्रतिविस्व प्रतिविस्वितः, मूर्फ्या मूर्च्छितः, दीचा दीचितः।

### ১৩১। प्रमाणे मात्र इन्न हयसट:।

পরিমাণ অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর মাত্রট্, দম্ট্, ও ছরসট্ প্রতার হয়, ট ইং, মাত্র, দম্ম ও ছরসথাকে। যথা, স্বল্ল: प्रमाणमञ्च इल्ल-मात्रम्, इल्लाइसम्, इल्लाइयस् ; जात्तः प्रमाणमञ्च जात्रमात्रम्, जात्तदञ्जम्, जात्तद्वसम् ; जदः प्रमाणमञ्च जहमात्रम्, जद-दञ्जम्, जददयसम् ; शितस्तिः प्रमाणमञ्च शिवतित्तिमात्नं, शिवस्ति-दञ्जम्, विवस्तिद्वसम् ; वाल्पमाणमञ्च वाल्मांत्रम्, वाल्द्यम्, वाल्द्वसम् ; गेलः प्रमाणमञ्च गजमात्रम्, गलद्वम्, गलद्वसम् ।

## ১७२ । यसदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्।

পরিমাণ অর্থে, যদ্, তদ্, এতদ্, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর বতুপু হয়, উ প ইৎ, বত্ থাকে।

#### ५७०। चा दः।

वजू भ् हरेतन, यम्, जम्, अजम्, रेहांतम् व स्वात् आ हरः। यथा, वत् परिमाणमस्य यावान्, तत् परिमाणमस्य तावान्, एतत् परिमाणमस्य एतावान्।

#### ५७८। क्वियदियतौ।

किंग् ७ रेमग् मस्पत खेवत वजूल् रहेश, किंग्र॰, रेग्न॰, এरे मुरे मक निलाजन मिक रत्न। यथा, किं परिमाणमस्य निवान्, इदं परि-माणमस्य द्वान्।

### ১৩৫। किम: संख्यापरिमाणे डित:।

সংখ্যাপরিমাণ বুঝাইলে, কিম্শব্দের উত্তর ডভি হয়, ড ইৎ, অভি থাকে। যথা, কা संख्या परिमायानेयां कति। কভিশন বহু-বচনান্ত।

### ১७७। धानयवे तयट् संख्यायाः।

व्यवस्य व्यर्थ, मः शांवांत्रक श्रांजिशनित्कत् छेहत् छस्ट्रे हत्, हे हेः, उस्थांति । यथी, चत्वादोऽनयवा व्यस्य चतुष्यम्, पञ्च व्यवयवा व्यस्य पञ्चतंयम्, स्तमनयवा व्यस्य स्ततयम्, सहस्तमवयवा व्यस्य सहस्ततयम्।

### ५७१। खबर् वा दित्रिस्याम्।

অবয়ব অর্থে, বি, তি, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর বিকল্পে ডর্ট্ হয়, ড ট ইৎ, অয় থাকে; পক্ষে ডয়ট্। যথা, **রী অবরবী** অন্ত রুখ ব্রিষদ্, নেবীঃব্রবা অন্ত নেব নিক্রম্।

### ১७৮। उभाद् यः।

च्यत्रय चर्ष, उंच এই প্রাতিপদিকের উলর য হয়। यथा, उमी चनवनी खद्ध उमयम।

## ১৩৯। तद्स्विविधिकसिति दशान्ताडुः।

तत् चिसान् अधिकस्, এই অর্থে, দশন্ভাগান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ড হয়, ড ইং, অ থাকে। যথা, एकादश चिका चिसान् एकादशं श्रतस्, द्वादशं श्रतस्, स्वोदशं श्रतस्, चहुर्दशं श्रतस्।

### ५८०। शहन्त विंशतेस।

तत् चिक्षम् चिक्षम्, अरे अर्थः, मध्छाशास्त छ विश्मिष्ठ मध्यत्र উद्धत ए रहा। यथा, लिंगत् चिष्ठका चिक्षम् लिंगं गतम्, चता-दिंगं गतम्, पञ्चागं गतम्, एकलिंगं गतम्, चत्वस्तारिंगं गतम्, पञ्चपञ्चागं गतम्; विंगतिरिधका चिक्षम् विंगं गतम्, एकविंगं गतम्, दाविंगं गतम्।

## **১८८। संख्याया: पूरणे डट्।**

পূরণ অর্থে, সংখ্যাবাচক প্রাভিপদিকের উত্তর ভট্ হয়, ড ট ইৎ অ থাকে। যথা, एकाद्यानां पूर्णः एकाद्यः, हाद्यः, सयी-दयः, चतुर्दमः, पञ्चदमः, षोङ्मः, चप्तदमः, खटादमः।

# **১**8२ । नाम्तादसंख्यादेर्मट्।

পূर्व अर्थ, नकारांख मर्थायां कि श्रीं जिशिंतिकत छेठत महे हर, हे हेर, म श्रीं कि। सथा, पञ्चानां पूरणः पञ्चमः, सप्तानां पूरणः सप्तमः, सप्तानां पूरणः सप्तमः, सप्तानां पूरणः सप्तमः, द्यानां पूरणः द्यमः। अन्य मर्थायां कि नम् शृर्धः श्रीं किल हत्न, न। सथा, एकाद्यानां पूरणः एकाद्यः, हाद्यः, स्वोद्यः।

## **১८७। युट् चतुर् वव् कतिस्य:**।

পূরণ অর্থে, চতুর, বষ্ কভি, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর থুট্ হয়, উ ট ইৎ, থ থাকে। ঘথা, चतुर्यां पूर्याः चतुर्घः, मस्रां पूर्याः षष्टः, कतीतां पूर्याः कतिषः (৩২)।

#### ५८८। हेसीयः।

পূরণ অর্থে, ছিশদের উত্তর তীয় হয়। যথা, হ্বয়াঃ দুহয়াঃ হিনীয়া।

## **58¢। हतीय तुर्ख तुरीया: ।**

পূরণ অর্থে, তৃতীয়, তুর্বায়, নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, ম্বাব্যা দুহবাং ভ্রনীয়া, দ্বব্র্যা দুহবাং রুফাঃ, রহীয়া।

### **১**8७। विंगत्यादेस्तमट् वा।

शृत्व व्यर्थ, विश्वां প্রভৃতি मश्यावां क প্রাতিপদিকের উত্তর विकल्ण उपहे रह, हे रेष, उप थाक ; शक्त उहे । यथा, विद्यतेः पूर्याः विद्यतितमः, विद्याः ; एकविष्याः, दाविद्याः, दाविद्याः, दाविद्याः, दाविद्याः, दाविद्याः, द्वाविद्याः, व्यादिद्याः, व्यादिद्याः, पञ्चाद्याः। ।

## **५८१। नित्यं शता दे:**।

শত প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর নিত্য তম্ট হর। ষথা, মনজ্জ দুবেআ: মননদঃ, सञ्चल्ल पूरवाः सञ्चलकाः, অधुतस्य पूरवाः অধुततमः (৩৩)।

 <sup>(</sup>৩২) কভিপর শব্দের উত্তরও হর। যথা, করে দ্বানা

प্रयाः कतिपवधः।

<sup>(</sup> ७०) यांन, फर्क्यांन, नश्वश्मत, अहे जित्तत छेडत् हरः।
यथा, नासस्य पूरणः नासतमः, सर्वमासस्य पूरणः वर्षमासतमः,
संवस्यरस्य पूरणः संवस्यरतमः।

### **५८४। षद्यारंखादेः ।**

ষষ্ঠি প্রভৃতি সংখ্যাবাচক প্রাতিপদিকের উত্তর নিত্য তম্ট হয়।
যথা, ঘট: पूर्याः बिट्टतमः, सप्ततितमः, खशीतितमः, नवतितमः। অন্য সংখ্যাবাচক শব্দ পূর্বেে থাকিলে হয় না; তথ্ন
১৪৬ সূত্রের অনুযারী কর্ম্য হইবেক। যথা, एकषटेः पूर्याः
एकषटितमः, एकषटः; दिषटितमः, दिषटः।

## ১৪৯। बक्क गण पूग संवेध्यस्तियुक्।

পূরণ অর্থে, বহু গণ, পূগ, मংঘ, এই কর প্রাতিপদিকের উত্তর তিথুক্ ছর, উ ক ইং, তিথ থাকে। যথা, बह्दनां पूर्याः बहु-तियः, गयानां पूर्याः गयतियः, पूगानां पूर्याः पूगतियः, संघानां पूर्याः संघतियः।

### ५००। बतनादिय्क्।

পূর্ণ অর্থে, বতুপ্রতারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ইথুক্ হয়, উ ক ইৎ, ইথ থাকে। যথা, বাবনা দুহ্যাং বাদনিঘা, নাবনিঘা, হ্নাবনিঘা, কিয়নিঘা, হ্যানিঘা।

## ५७५। तदस्याखिन् वास्ति मतुप्।

तत् सस सिन, तत् सिन्धान् सिन, थरे मूरे व्यर्थ, श्रीजिनिम्कित् छेहत् मजून् इत, छे न रेंद, मद शिकः। यथी, मितरसासि मित-मान्, बुद्दिस्सासि बुद्धिमान्, धीरसासि धीमान्, श्रीरसासि, श्रीमान्, संग्रीयस सिन संग्रमान्, पिता ससासि पितमान्, धत्रसासि धतुमान्, वपुरसासि वपुमान्, 'सम्मिरसिन्धिस्ति सिन्मान्, वीयुरसिम्सिक वायुमान्, नद्योऽसिन् सिन नदी-मान् देग्रा, गावीऽस्यां सिन गोमती शावा।

### ३७२। अवर्णीन्तास्रो वः।

অবণীত প্রাতিপদিকের উত্তর বিহিত মতুপের ম স্থানে ব হয়। যথা, স্থানমঞ্জালি স্থানবাৰ, খনমঞ্জালি খনবাৰ, ৰতম্ অক্সালি ৰত্তবাৰ, বিত্যা অক্সালি বিত্যাবাৰ, হয়া অক্সালি হয়াবাৰ, স্থানা অক্সালি স্থাবাৰ,

## ১৫৩। यङ अ य न सर्यान्तात्।

যে সকল প্রাতিপদিকের অস্তে ঙ, ঞ, ণ ন ভিন্ন সপর্শবর্ণ থাকে, তাহাদের উত্তর বিহিত মতুপের ম স্থানে ব হর। যথা, লঙ্কির্ অক্সিল্লালি কড়িকান্, বিহারে অক্সিল্লালি বিহারোন্। গ

## ১৫৪। अवर्णीपधात्।

যে সকল প্রাতিপদিকের উপধান্থলে অবর্ণ থাকে, তাহাদের উত্তর বিহিত মতুপের ম স্থানে ব হয়। যথা, আল্লো অঞাজি আল্লবান্স, মাষ্ট্রীয়ে যদিন মাজান্।

### ५००। सकारोपधाञ्च।

যে সকল প্রাতিপদিকের উপধান্থলে ম থাকে, তাহাদের উত্তর বিহিত মতুপের ম স্থানে ব হয়। যথা, জন্মী হয়োলি জন্মীবাৰু, মনী ক্ষান্ধান্ধান মনীবাৰু।

### **১৫७। न यवादे**:।

यत প্রভৃতি প্রতিপদিকের উত্তর বিহিত মতুপের ম ৰুদনে ব হয় না। যথা, বৰদাবৃ, দুস্তাদাবৃ, वसामावृ, द्राचामावृ, गहलावृ, हरिलावृ, कक्षप्तान्, जिन्धिमावृ, मुसिमावृ, क्रमिमावृ।

## ५८१। चदम्बदादयः संज्ञायाम्।

ম চুপ্প্ৰত্যয় হইলে, এবং সংজ্ঞা বুঝাইলে, উদৰং প্ৰভৃতি শৰ

निशांष्ठत निष्क रहा। यथा, खद्रवस्ति स्वाहित खद्रवान् स्त्रह्रः, खन्यत खद्रवान् ; राजा खिद्यावित राजनान् योभनराजयुक्तो देयः, खन्यत राजनान् ; वक्तं खस्यावित वर्ष्यव्यती
नाम नदी, खम्यत वर्ष्यनती ; खस्य खिद्यावित खणीनान्
जान्द्रसन्धः, खन्यत बस्थिमान् ; चक्रमसास्ति चक्रीनान् नाम
राजा, खन्यत चक्रवान् ; कक्या खस्यास्ति कक्षीनान् नाम
स्विः, खन्यत कच्यानान् ; खन्यमस्ति इसन्वान् नाम
पर्वतः, खन्यत कव्यानान् ।

## ১৫৮। कुसुद् नड वेतस महिषेग्यो डुतुप्।

कूमूम, नफ्, दिलम, यश्वि, अहे ठांति श्रांतिशामितकत छेवत पृष्टूश् एत फ छे श हेर, दर थोरक। यथा, ज्ञसदान्यस्मिन् सन्ति ज्ञसहान्, नष्टान्यस्मिन् सन्ति नष्ट्रान्, वेतसान्यस्मिन् सन्ति वेतस्मान्, महिता श्रसिन् सन्ति महिष्णान्।

## ১৫৯। यस् माया मेघा खन्नो विनिवा ।

ष्णम्णांतास्त, यात्रा, त्यथा, मुद्ध, धरे मकल श्रीकिशिनित्वत् छेवत् विकल्म विनि रहः, हे हे॰, विन् थात्कः; शक्त यजुन्। यथा, वमोऽखालि वम्खी, वम्खान् ; तेन्नोऽखालि सेवसी, तेन-खान् ; पनोऽखा चलि पयिन्नो, पवस्तो घेतः ; माया च्याखि मायानी, मायानान् ; नेधा ख्याखि नेधानी, मेधा-नान् ; सन् चसालि स्वाने, स्वान् ।

#### ५७०। नित्यं तपसः।

ज्ञन् नत्त्व उद्धतं निका विनि रहा। यथा, तपीऽसास्ति तपसी, तपस्ति।

## **५७५। दुन् वा नैकखरादवणीत्।**

अकांधिक ब्रुति शिक्षे व्यर्गीख श्रांठि शिक्षित छे हत विकित्त है स्व हत ; श्रांक यशंग स्व यज्ञ श्रुल् श्रु विति हत । यथा, ज्ञानमस्यास्ति ज्ञानो, ज्ञानवान्; बर्चमस्यास्ति बनी, बर्जवान्; घनमस्यास्ति घनी, घनवान्; चिस्ता स्वसास्ति चिस्ती, शिक्षावान्; चूड़ा स्वसास्ति चुड़ी, चूड़ावान्; माया स्वसास्ति मायो, मात्रावी; साइसम् स्वसास्ति साइसी, साइसवान्; विवेकोऽस्थास्ति विवेकी, विवेक-वान्; स्वसाइः स्वसास्ति स्वसाही, स्वसाइवान्।

### **५७२। नित्यं सुखा है**: ।

मूब প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর নিজ্য ইন্ হর। যথা, सुख्य मृ ख्यांकि सुखी, दुःखमसाक्ति दुःखी, प्रणयोऽसाक्ति प्रणयी, कक्षमसाखि कक्की, सहस्रमसाक्ति सहस्री।

### ১७०। इस कराम्यां जाती।

जां ि तूसिरेल, रह, कत, अरे मूरे श्रीिल मिरकत छेउत निछा रेन् रह। वर्षा, इस्तीऽसास्ति इसी गमः, करोऽस्थासि करी गजः। जनाज, इस्तीऽसास्ति इस्तवानु पुरुषः।

## **५७**८। वर्णान्नस्यारिण।

उक्काती तृसारेल, वर्ग गम्बद छेडत निका रेन् रह। वर्थाः क्यांकि वर्षी नक्स वारी; अनाव, वर्षानान्।

### • ১७৫। पुष्कराहिभ्यो देशे।

 वियो, विसिनी, च्यासिनी, तमासिनी, निस्ती, तरिक्किशी, कल्लोसिनी, तटिनी, प्रवासियी।

## ১৬७। पर्याद् याचने ।

ষাচক বুঝাইলে, অর্থ, এই প্রাতিপদিকের উত্তর নিত্য ইন্ হয়। যথা,, অর্থীয়েহান্দি অর্থী যাবক: ; অন্যত্ত, অর্থবানু।

#### **५७१। चर्चान्तेयस्।**

### ১७৮। मांसादेली विभाषा।

गं९म श्रमृष्ठ श्रीष्ठिशिवरकत खेहत विकल्प न रत। वथी, मांसमस्यास्ति मांसदः, त्रोरस्यास्ति त्रीवः, पत्ता चस्यास्ति पत्तादः, खेहोऽस्यास्ति खेड्ड, ग्रीतो रायोऽस्यास्ति ग्रीतदः, ग्र्यामो रायोऽस्यास्ति ग्र्यामवः, पिङ्गो रायोऽस्यास्ति पिङ्गवः, पित्तसः, पुत्त्वः, प्रशुवः, सदुवः, मञ्जदः, मग्रदः, चटुवः, कपिवः, प्रस्थिवः, कुग्रवः, पांग्रवः, खेन्नवः, पेग्रवः, कुग्रुवः, खंसवः, वस्वः। अटक, मह्य्।

### ১७৯ । फेनाहिल**य**।

ফেন, এই প্রাতিপদিকের উত্তর বিকম্পেল ও ইল হয়। যথা, फोनीऽक्षिद्धक्कि फोनखः फोनिखः ; পক্ষে, फोनवानु ।

### ५१० ! लोमा दे: घ:।

লোমন্ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর শ হয়। বথা, তামান্যঞ্জ ধন্দি ভাষম:, বাদম:, দিহিম:, কর্ম:, ক্মিম:।

#### **>१५। पिच्छा पङ्गाभ्यामितः**।

পিচ্ছা, পঙ্ক, এই দূই প্রাতিপদিকের উত্তর ইল হয়। যথা, দিক্তা অংশ্রাক্ষি দিক্তিব', দাভিতা।

#### **५१२ । इन्तादुर:।**

দম্ব, এই প্রাতিপদিকের উত্তর উর হব। যথা, ভ**ন্নরা হলা:** বল্মা**য় হলার:**।

### ১१७। जब ग्रुषि मुब्ब सधुस्यो र:।

উব, শুবি, মুক্ষ, মধু, এই দকল প্রাতিপদিকের উত্তর র হয়। যথা, জন্ময়ঃ, মুদিয়ঃ কুল্দান, দধুয়ঃ।

#### ५१८। मुखादेश।

মুগ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর র হয়। যথা, सखमस्यास्ति सखरः, कञ्चरः, नगरम्, पायङ्रः।

### ५१৫। नड शाद्यां डुलप्।

নড, শাদ, এই দৃই প্রাতিপদিকের উত্তর ডুলপ**্**হয়, ড প ইৎ, বল থাকে। যথা, ন**ভা অফ্সিন্ ব**িল **নভুল:, মাহা অফ্সিন্** দলি মাহুৱা:।

## ১१७। सम्बादेवल: ।

কৃষি প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বল হয়।

### **५११। दीर्घीउन्यः।**

वन প্रভाग रहेतन, असा स्वतं नीर्घ रतः। यथा, किष्रिस्यास्ति कषीवनः, परिषद्दनः, पृषद्दनः, रजस्वना, जर्कस्वनः, टनावनी इस्ती, शिखावनो असूरः।

## ১१४। केशा देवे: सन्नावास्।

শৎজা বুঝাইলে, কেশ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উঠর ব হয়। যথা,

केशाः सन्यस्य केशवः विष्णुः, मियारस्यान्तिमियाः नागविश्वेषः, स्वजनः सस्यान्ति स्वजनवं पिनाकः, गाविष्ट्रस्यान्ति गाविष्टवस् सन्त्रुनस्य भतः। ইकांद्र मीर्घेश्ड रह्न, माविष्टीवस्।

## **५१३। खादामिन मध्ये**।

अर्था युवाहेल, स्, अहें श्रांडिशिंग्टिक छैडत व्यांगिन् हरः। यथा, सम् ऐसर्थम् स्थास्ति सामी।

## **১৮०। घीतोखाध्यामानुरमञ्जे**।

অসহন অর্থে, শীত, উন্ধ্ন, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর আলু হয়। যথা, মীন ন सञ्चते মীনানুঃ, ভর্মান सञ्चते ভক্মানুঃ।

### ১৮১। वातातीसाराभ्यां रोगे किन्।

रतां त्यारेल, वांड, चडीमांत, अरे मृरे প्रांडिপमित्वत उँवत किन्रतः। यथा, वातोऽस्थास्ति वातकी, चतीसारोऽस्यास्ति चती-सारकी।

## **१५२। बल्यादेर्भः**।

বলি প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ভ হয়। যথা, बत्तवोऽस्मिन् सन्ति बस्तिमम् मध्यम्।

## ১৮७। वर्ष बादेरत्।

यगम् প्रकृषि প्राष्ठिभिष्ठित उँ हत यथ रह, य हो । वर्षा, व

## ১৮८। **चन्न् ग्रुमन्त्र**मं दुः।

অহ্যু, ওত্ত্ব, এই দুই প্রাতিপদিকের উত্তর যু হয়। যথা, অভ্ন

खस्रास्ति चहंयुः चहक्कारनाम्, ग्रुभम् चस्रास्ति ग्रुभंयुः ग्रुभा-न्नितः।

### ५४४। व्योत्सादयः।

ख्या । अञ्चि गम निशांष्ठान मिक्क रहा। यथी, व्योतिरखा सिल क्योत्खा, तमोऽस्था सिल तुमिसा, स्कूनस्थालि स्कूलियाः, मनस्थासि मनिनः, मनोमसः; वर्षांसि स्विम् सिल वर्षांनः ससद्ः।

### ১৮%। वाम्मिन् वाचाल वाचाटा:।

वांश्चित्, वांनांन, वांनांने, तिशांख्य निम्न इत्र। यथा, वाचोऽस्थ सन्ति वास्सी ; यः कुत्सतं बक्क भासंते, स वाचासः, वाचाटः।

### ১৮१। स्ले जाइ: कर्णादे:।

मृत अर्थ, कर्न প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর জাহ হয়। यथा, कर्णस्य मृषं कर्णजास्म, अस्तो मृतम् अधिजास्म, भ्रूजास्म, नस्य-जासम्, केमजास्म, पादजासम्, स्कूजास्म, दन्नजासम्।

#### १ पचात्ति:।

মূল অর্থে, পক্ষ, এই প্রাতিপদিকের উত্তর তি হয়। যথা, দক্ষ স্থা মুক্ত দক্ষরিঃ।

## ১৮৯। मार पित्रस्यां डुल व्यो भातरि।

खुं ज् व्यर्थ, यांज्, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ডুল, এবং পিতৃ, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ব্য হয়, ড ইং, উল থাকে। যথা, मास्रभौता मास्रबः, पिस्कृता पिल्ल्यः।

#### ১৯०। डामइ: पित्रो:।

পিতৃ ও মাতৃ অর্থে, মাতৃ, পিতৃ, এই দুই প্রাতিপর্দিকের উত্তর ডামহ হয়, ড ইৎ, আমহ থাকে। হথা, লারঃ ঘিনা লানালভঃ, पितः पिता वितामस्रः, मातुमीता मातामस्री, पितुमीता पितामस्री।

১৯১। **ত: नन्याय: कुमले।** কুশল অর্থে, কর্মন্, এই প্রাতিপদিকের উত্তর চ হয়। যথা, নন্মীয়ে ক্রমন্ত:।

## ५२१ पूर्वादिनिस्तृतीयार्थे।

ज्जीवात जार्थ, शृद्ध এই প্রাতিপদিকের উক্তর ইনি হয়, ই ইএ, ইন্থাকে। যথা, पूर्व्धमनेन कतं भुक्तं पीतं गतं वा पूर्व्वी, कतं पूर्व्यमनेन कतपूर्वी कटम, भूकं पूर्व्वमनेन भुक्तपूर्वी जोद-नम्, पीतं पूर्व्वमनेन पीतपूर्वी पयः, गतं पूर्व्वमनेन गतपूर्वी स्टक्ष्म।

#### ১৯७। दृष्टादिस्यस् ।

ष्ठिशांत व्यर्थ, इस्ने अकृष्ठि आिष्ठिनितिकत छेवत इति इत् । यथा, इस्मनेन इसी यक्षे, व्यक्षीतमनेन व्यक्षीती याक्षे, व्यवमनेन खती वेहे, स्हीतमनेन स्हीती उपहेंग्रे, व्यक्षातमनेन व्यक्षाती इतिहासे, व्यासितिन व्यक्षिती स्ती, व्यवक्षेणीमनेन व्यक्षिती स्ती, व्यवक्षेणीमनेन व्यक्षीणी वते।

## ১৯৪। अतियायने तमनिष्ठनी।

वक्त मृथ्य अत्कत उथकर्ष तूथाहरल, প্রাভিপদিকের উত্তর তমপ্ ও ইছন্ হয়, তমপের প ইথ, তম থাকে; ইছনের ন ইথ, ইছ থাকে। য়থা, অয়्मेषामतिয়য়য় पटुः पटुतमः, पटिछः; अয়मेषाम् आतिয়য় न चष्ठः चष्ठतमः, खिष्ठः; अয়मेषामतिয়য়ेन राकः ग्रहः-तमः, गरिषः; प्रियतमः, प्रेषः; दोर्घतमः, द्राधिष्ठः; ढढ्तमः, दृद्धिः; ऋदुतमः, खद्दिः; क्रमतमः, ऋषिष्ठः।

#### ১৯৫। हयोस्तरबीयसुनी।

मृत्यत मत्था अत्कत छे कर्स तूथा के ति, श्रीजिभिनित्कत छे वह उत्भू छ क्ष्यमून् क्य, उत्भाव भ के क्ष्य, उत्थाति क्षयम् व्यान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्थान्य स्थान् स्थान्य स्थान्य

## ১৯७। य ज्यो प्रशस्यस्य।

रेकेन् ଓ त्रेयमून् প्रजात रहेता, श्रामाणायत स्राप्त थ छ आ रत्र । यथा, खरामेपामित स्रोम प्रमेखः श्रेष्ठः, ज्येष्ठः; खरामनयो ः खितिस्रोम प्रस्थः श्रेषान् ।

#### **५३१। या ज्यादीरीयसनः।**

জ্ঞা, এই আনদেশের পরবর্টী ঈরসুনের ঈস্থানে আন ছর। বথা, আহাযার ।

## **५**२४। वर्ष च्यो रहस्य।

रेकेन् अ जेशमून् भरत् थोकित्ल, तृक्षणस्यत् खात्न वर्षः अका इत्र । स्था, अध्यमेषामन्योर्वा चतिक्रयेन हक्षः वर्षितः, वर्षीयान् ; ज्योदः, ज्यायान् ।

## ১৯৯। धन्तिक वाद्योनेंद साधी।

অন্তিকশনের স্থানে নেদ ও বাঢ়শনের স্থানে সাধ হয়। যথা, वैदिष्ठः, वेदीयान्; साधिष्ठः, साधीयान्।

#### २००। चल्पस्य कन् विभाषा।

অপেশকের স্থানে বিকণ্পে কন্ হয়। হথা, ক্ষণিভা, ক্ষণীবাৰ্; ক্ষিত্ৰ, অক্ষণিবাৰু।

# २०)। यून: कन् यवी।

द्विष्ठः, द्वीयान्।

यूरम्यास्त्रः स्राप्तं कम् अयर् इत्। यथा, क्षनिष्ठः, कनीयान्; विषष्ठः, यवीयान्।

२०२ । स्थूल दूरवो: स्थव दवी। क्ष्मित इत ६ मृतकात कर ६ मृतकात कर १ मा १ स्थित स्थित

२०७। उद जुद्रयोर्वर जोदौ।

উक्टबात्न वत् ७ कूनुवात्न (काम वत् । यथी, वरिष्ठः, वरीयान् ; कोदिष्ठः, कोदीयान् ।

२०४। जिप्र वस्तवयोः चेप वंदी।

किथ्रहात किथ ଓ रहनहात दश्ह रह। यथा, चेपिनः, चेबी-वान्; पंहिनः, पंहीबान्।

२०४। खिरस खः।

ष्ट्रिमक्खारत स रहा। घथा, स्रोतः, स्रोयान्।

२०७। विनातुपोर्जुन्।

ইষ্ঠন্ও ঈরসুন্পরে থাকিলে, বিন্ও মতুপ্প্রতায়ের লোপ হয়। যথা, অংঘনীলাদনিম্থল নাযালী নাবিচঃ, নাযীবাল্; আম্মনিমাধন ম্থান ৰজ্মানু হবিচঃ, ৰজীবাল্।

## २०१ । स्वोस्रविष्ठी।

বহুশব্দের উত্তর ঈয়সুন্হইলে ভূয়স্চ, ইছন্হইলে ভূয়িছ, নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, আন্ধানকীহালিকখীৰ ৰক্তঃ পুলান্, আন্দীলালনিক্ষীন ৰক্তঃ ধূৰিতঃ।

२०४। किंवत्तहां द्वोरेकस्य निर्दारणे जतरः।

मूराव्यं सर्था এक्ट्र्य निर्द्धांत्रभ दूर्याहेला, किस्, घम्, उम्, अहे जिन श्रीजिপमिक्ट्र्य উद्धृत एउद्य हरू, छ हे॰, अद्ध्य थीक्ट्रा सथी, स्वनयोः सतरो नैस्पनः, सनयोर्यतरो नास्त्रासः ततर स्नामस्द्वतः।

#### २० । बह्नां डतमः।

वर्ङ्क मर्था এक्ट्र्स निर्द्धांत्र तूसांहिल, ७७० २३, ७ ३६, ७०० थांकि । यथा, एवां कतमः चैंवः, एवां यतमः चित्रः ततमः मयातः।

#### २১०। एकान्याभ्याञ्च।

बक, खना, बहे मूहे প्रीिजिभिनित्कत छेवत छठत छ छठम इस । यथा, भवतोरेकतरः पठत, भवता मेकतमः ऋषोतुः तयोरन्य-तरो यातः, तेषामन्यतमो ऋतः।

252। किमेद्ययेथ्योऽद्र्ये चतराम् चतमामेकोत्कर्षे।
मूरे ७ वळ्व मध्या अक्वत छेष्कर्ष वृद्धारेल, किम्, अकावास, ७ व्यवास मध्यत छेछत, ठछताम् ७ ठछमाम् अछात रत, ठ रेष, छताम् ७ छमाम् थाका यथा, किन्तमाम्, प्राक्कितराम् प्राक्कितमाम्, एवक्कितराम् प्राक्कितमाम्, एवकितराम् प्राक्कितमाम्, एवकितराम् प्राक्कितमाम्, एवकितराम्, उद्धारेल रह ना।
यथा, उद्धेक्तरक्तरः।

#### २১२। प्रश्नंसायां रूपः।

প্রশংসা বুঝাইলে, প্রাতিপদিকের উত্তর রূপ প্রতায় হয়। যথা,
प्रमसो वैयाकरणः वैयाकरणहरूपः, वैयायिकहरूपः, खालङ्कारिककूपः, मीमांसकहरूपः।

## २५७। ई्षटूने मस्य देख देशीया:।

हेस मान अरे कर्ष दूसारेल, श्रीजिशनित्कत उठत कन्त्र, तम्मा, उत्तमीत श्रेजात रत। यथा, देवदूनो विद्वान विदेशकासः, विद्व-देखः, विद्वदेशीयः।

### २५८। ति**ज्**न्तात्।

পূर्त्त मृजजात विश्ठि প্রভার मकल ভিडस प्राप्त উতর হর।
यथा, पठतितरास्, पठतितसास्, पठतिक्रम्, पठतिकल्पस्,
पठितिहेस्यस्, पठितिहेसीयस्।

#### २১৫ । वा सपो पक्त: पुरसात्।

ঈষদৃন অর্থে, সুবন্ত পদের উত্তর বিকল্পে বহু প্রতায় হয়; এই প্রতায় সুবন্ত পদের পূর্বে যায়। যথা, ईषदूनः पटुः बद्धपटुः, पटुकत्ताः, पटुदेखाः, पटुदेशोयः।

## २>७। तेन तुल्यः स्थान स्थानीयौ।

तेन तुल्तः, এই অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্থান ও স্থানীয় প্রতায় इत्र । वर्था, पिला तुल्तः पिल्ल्यानः, पिल्ल्यानीयः ; श्वाल्ल्यानः, श्वाल्ल्यानीयः ; माल्ल्याना, माल्ल्यानीया माल्ल्यसा।

#### २८१। जाती जातीय:।

काि कार्थ, श्रीजिशिष्टिक् छेड्द कािजी श्रेष्ठात इत् । यथी, बाह्मायाजातीयः, चाित्त्रयजातीयः, पुरुषजातीयः, ह्लीजातीयः, विष्ण्यातीयः, रजकजातीयः, तािकंकजातीयः, वेयाकर्य-जातीयः।

२>৮। संख्याया: कियास्यावृत्तिगणाने क्रत्सस्य्। कियास्यावृत्तिगणाने क्रत्सस्य्। क्रियां व्याद्यां क्रियां क्रियां क्रियां व्याद्यां क्रियां क्रियां व्याद्यां क्रियां व्याद्यां क्रियां व्याद्यां क्रियां व्याद्यां क्रियां व्याद्यां व्याद्यां क्रियां व्याद्यां व्या

### २५०। हि ति चतुस्यः सच्।

ক্রিয়ার অভ্যাকৃত্তিগণন বুঝাইলে, বি, ত্রি, চতুরু, এই তিন প্রাতি-পদিকের উত্তর সূচ্ হয়, উচ ইং, স থাকে। যথা, दो बारी भुङ्ते दिभुङ्ते, लीन वारान् भुङ्को लिभुङ्को।

#### २२०। लोपोऽन्यस्य चतुरः।

#### २२५। एकस्य सङ्ख् ।

এক, এই প্রাতিপনিকের উত্তর সূচ্ হয় এবং তৎসহিত একস্থানে সকৃং হয়। যথা, एकं वारं भुङ्क्ते सकदुभृङ्के, सकदभीते। এন্থলে অভ্যাবৃতি সম্ভব নহে, গণনমাত্র বুঝাইতেছে।

### २२२। विभाषा बहोरविप्रसप्तकाले धाच्।

क्रियांत अन्तावृहिन्नन, এवर क्रियांनुष्ठीनकात्तव প्रतम्भत नैनकाँ।
वृकारेल, वर्छ अरे श्रांजिপिनिकत उहत विकल्प शिह् रह, ह रेर श्री शीरक; श्रीक कृष्वपूष्ट्। यथी, बद्धभा दिवसस्य भुङ्तो, बद्ध-कालो दिवसस्य भुङ्को। नैकाँगे ना वृकारेल रह ना। बद्धकालो मासस्यागकाति।

## २२७। बह्नल्यायीहा चयस्।

वस्त्र थ अल्लार्थ श्रांजिनितिकत उत्तत विकल्ल हमम् इत, ह है थ, मम् थात्क । यथा, बद्ध ददाति बद्धयो ददाति, भूरि ददाति मुरियो ददाति, खत्यं ददाति अल्ययो ददाति, खोकं ददाति खोकयो ददाति । कांत्रकत उत्तत इत, अनात इत मा । यथा, विक्रमां खामी, व स्टल, बद्धयः खामी, इहेर्यक बा ।

# २२८। संस्थेन देशवचनाच वीपायान्।

वीপ्मा বুঝাইলে, সংখ্যাবাচক ও একদেশবাচক প্রাতিপদিকের উত্তর বিকল্পে চশস্হয়। যথা, সংখ্যাবাচক—হী হী তৃত্যানি बियो ददाति, पञ्च पञ्च ददाति पञ्चयो ददाति; अकटनग-ठाठक-पारं पारं ददाति पार्चो ददाति, अर्द्धमद्भं ददाति अर्द्धयो ददाति।

### २२८। विकारे मयट्।

विकात अर्थ तूराइतन, श्रीष्ठिशनित्कत उत्तत मत्र हर, हे इ॰, मत्र थात्क। यथा, खर्णस विकारः खर्णमयो घटः, खर्णमयो प्रतिमा; स्टरो विकारः स्टल्वयो घटः, स्टल्वयो प्रतिमा।

#### २२७। इिर्ल्सय:।

रित्यात निश्रांज्य मिश्व रत। यथा, हिर्ग्यस्य विकारः हिर्ग्यस्य ।

#### २२१। अवयवे।

च्यवाय यूक्षावेतन, श्रीजिशिनित्वत छेठत महि वह । यथी, दाह्-च्यक्षावयवाः दाह्मयमाचनम्, दर्भाष्यक्षावयवाः दर्भमयो बाह्यक्षः, काष्टान्यक्षावयवाः काष्टमयो हक्ती, जर्का खक्षावयवाः जर्कामयं वासः, खन्नान्यक्षावयवाः खन्नमयो यत्तः, खपूपा खक्ष खनयवाः खपूपमयं श्राहम् ।

### २२৮। याप्ती।

गालि अर्थ तूर्याहरल, श्रीिड शिविष्ठ उत्तर महिए हह। यथा, जर्बन व्याप्त जलमयं जगत् प्रजये, रोगेष व्याप्त रोगमयं गरी-रम्, धूमेन व्याप्त धूममयं स्टब्स्म्।

e

#### २२৯। संसर्ग

म्नार्ग तूबाहित, श्रीिक्षितिक छेवत यह है रहा। यथी, तिबेन संस्टं तिबमटं वर्णसम् छतेन संस्टं छतमयं व्यञ्जनम्, पापेन संस्टं पापमयं सरीरम्।

### २७०। सप्टथग्भावे च।

অপृथन् छात तूसाहत्न, श्रीडिलिमिटक उठत मत्र हत। यथा, विच्छोरप्रधम्भूतं विच्छामयं जगत्, वाम्ध्योऽप्रधम्मूतं वाङ्मयं प्रास्त्रम्, चितोऽप्रधम्भतः चिन्त्रयः पुरुषः।

## २७५। गोस पुरीषे।

পুরীষ বুঝাইলে, গো, এই প্রাতিপদি েকর উত্তর ময়্ট্ ২য়। যথা,
गोः पुरीषं गोमयम् ।

## २७२। स्नेहे तैलन्।

सब वार्थ, श्रां जिनिक्त जेवत रेजन्म् इत, म इर, रेजन शांक। यथा, तिबद्ध खेहः तिबतेबम्, सर्षपद्ध खेहः सर्षपतेबम्, एर- गुड्ख खेहः एरगुडतेबम्।

## २७७। धाच संख्याया विधार्थे।

विधा आर्थ, भरथाविष्ठिक श्रांडिशिनिटकत छेतत धीर् इत, ह हेर, श्रांथीटक। यथा, एका विधा एकथा, दे विधे द्विधा, तिस्तो विधाः विधा, चतस्तो विधाः चतुर्धा, एख्न विधाः पञ्चधा, एकधा दिधा विधा वा भुंड्क्ने।

#### २७८। भावान्तरापादने च।

ভাবাস্তরাপাদন অর্থাৎ অন্যথাভাবসম্পাদন অর্থেও ধাচ্ছয়। যথা, पञ्च राज्ञीन एकधा कुरु, एकं राज्ञिं पञ्चधा कुरु।

### °२७ १। ऐकथाद्यो वा।

अवधा श्रक्ति गन्न. विकास्म निभाजात मिन्न इत्। यथा, एका विधा ऐकध्यम्, दे विभे देधं देधा, तिस्तो विधाः त्रेधं लेखन, मस् विधाः मोडा। भारक, एकधा, दिधा, निधा, चतुर्धा रेजानि।

#### ं २७७। पाय: कुत्यिते।

रूर्धमे त्याहिल, প्राजिभिष्टिक उँ छहत भी में श्रेष्ठात रह। यथी, कुत्सिती वैयाकरणः वैयाकरणपायः, मीमांचकपायः, भिषक्-पायः, वैदिकपायः, वेखकपायः, पाचकपायः।

## २७१। भूतपूर्वे त्ररट्।

জুতপূর্ব্ব অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর চর্ট্ হর, ট ইৎ, চর থাকে। যথা, আত্রী भूतपूर्व्यः আত্রস্বহः, हृष्टी भूतपूर्व्यः हृष्टचरः, অपिती भूतपूर्व्यः अपितचरः, अधीती भूतपूर्व्यः अधीतवरः।

#### २७४। सबसे रूपव।

সমৃদ্ধ বুঝাইলে, ভূতপূর্ব অর্থে, চর্ট্ ও রূপ্য প্রতায় হয়। যথা, देवदत्तस्य भूतपूर्व्य देवदत्तस्यम् देवदत्तसरं वा भवनम्।

#### २७৯। एकादाकिनिरसदाये।

সহাঃশান্য বুঝাইলে, একশন্ধের উত্তর আফিনি প্রত্যর হয়, ই ইৎ আফিন্ থাকে। যথা, एक एव पकाकी।

## २८०। प्राक् टेरक् खार्थे।

স্বার্থ বুঝাইলে, প্রাতিপদিকের টির পূর্বে অক্ হয়। যথা, করা एव করেকা, নাবা एव নাবকা।

### **२**8३। बालादेरिक्।

सार्थ तूसांहरल, ताला প्रकृष्ठि श्राणिभिनित्वत किंद्र शृद्ध है रू इह । यथा, बाला एव वालिका, तरला एव तर्रालका, निष्णा एव निष्णिका, चतुरा एव चतुरिका, चपला एव चपलिका, खता एव लितका, गोधा एव गोधिका।

### २८२। पद्माते कन्।

অজ্ঞাত অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্বার্থে কন্হয়, ন ইৎ, ক থাকে। যথা, ক্রেবেদস্থা অস্ত্রা, তত্ত্বা, দল্লিদনা, গর্হীনকা।

### २८७। कुत्सिते।

কুৎনিত অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্বার্থে কন্হয়। যথা, কুলিয়ানীয়েশ্ব অস্থকঃ, কুলিয়ানী দল্লিয় দল্লিক ।

#### **২**88 । चल्पे।

অপ্প অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্বার্থে কন্ হর। যথা, **অন্তর্** নীবানীবন্দ, বাহনাম, মবিবানাম।

#### २८८। इस्बे।

হুৰ অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর ৰার্থে কন্ হয়। যথা, দ্বজা তবাং তবকঃ, দ্বজঃ দঠঃ দঠকঃ, দ্বজঃ জ্বন্ধাং জন্মকঃ, দ্বজী ব্যক্তঃ ব্যক্তকঃ।

#### २८७। सनुनम्पायाम्।

অনুকল্পা অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্বার্থে কন্ হয়। যথা, অব্তকন্মিন: দুল্লা: দুল্লা:, বন্ধান , দুন্লান:।

### २১१। संजायाम्।

সংজ্ঞা অর্থে, প্রাতিপদিকের উত্তর স্থার্থে কন্ হয়। যথা, ক্ষেকাং, হীস্থিনকাং, মন্থিনকাং।

#### • २८४। स्त्रियामन्यो ऋखः।

खोलिक প্রাতিপদিকের উত্তর কন্ श्रेति, অস্তা সর दुव रहा।
यथा, मालवी मालविका, सागरी सागरिका, खबक्की खबक्किका,
माधनी माधविका, चयली चिक्किका, क्रयली क्रयां क्रिका,
येफाली येफालिका, न्ययाली न्ययां विका, यूषी यूषिका, वदरी

वट्टिका, दूती दूरिका, काली कालिका, घाटी घाटिका, स्त्रची स्त्रचिका।

### **२८०। इस्बे कुटी धमी ग्रुग्हाम्यो र:।**

दुव अर्थ, कृष्टी, मधी, चंधा, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর র रहा। यथा, हुला तुटी 'तुटीरः, हुला धनी धनीरः, हुला युव्हा युव्हारः।

## २०। सम्बोच वसर्वभेश्यसरट्।

दुव अवर्थ, अव, डेकन्, तथ्म, क्षवस्त, এই চারি প্রাতিপদিকের উত্তর তর্ট হয়, ট ইৎ, তর থাকে। যথা, हुस्सोऽयः सम्वतरः, स्वत्तरः, बस्यपरः, ऋषभतरः।

#### २०४। पञ्चस्यास्त्रीसन् वा।

शक्ष्मीविख्यां विकाल जिन्त् रह, हे त्रेष, छम् थांक । यथी, ग्टहात् ग्टहतः, यामात् यामतः, नगरात् नगरतः, सर्व-स्मात् सर्वतः, विश्वसात् विश्वतः, उभवस्मात् उभवतः, भवतः भवतः, एकसात् एकतः, स्वतः, स्वतः, एकसात् एकतः, स्वतः, प्रक्षितः, एकसात् एकतः, स्वतः, प्रक्षितः, रिस्सात् एकतः, स्वतः, प्रक्षितः, उत्तरसात् उत्तरतः, स्वात् प्रतः, दिस्सात् द्वातः, स्वात् स्वतः, इसात् इस्तः, हसात् इस्तः, हसात् इस्तः, हसात् स्वतः, ।

#### २०१ सम्याच।

मर्थमोद्धात विकत्न जिन् रह। यथा, पूर्विद्धान् पूर्वतः, दिवार-द्धान् दिविषातः, उत्तर्दद्धान् उत्तरतः, प्रथमे प्रथमतः, परिद्धान् परतः, अये अपतः आदौ खादितः, मध्ये मध्यतः, अने सन्तः, प्रदेशकार्ययोः पार्वतः, सर्वद्धान् सर्वतः।

## २०७। नित्यं पर्वेभिस्याम्।

পরি ও অভি উপদর্গের উত্তর নিত্য তসিল্ ছয়। যথা, মানির: আদির:।

#### २৫८। न हानवही:

शंक ও কৃষ ধাতুর প্রয়োগে তদিল্ দয় না । যথা, खार्गत् स्तीयते, पञ्चेताटवरोस्टात ।

## २৫৫। सप्तस्याक्तल् वा सर्वनान्तः।

नर्सनाय ( 38 ) गास्त्र मध्योष्ट्रात्न विकाल्य जन् इह, न इर, ज थांकि। यथा, सर्वस्मान् सर्वत, अभयस्मिन् अभवत, एकस्मिन् एकत, अन्यस्मिन् अन्यत, इतर्धिन् इतरत, पूर्वस्मिन् पूर्वत, परस्मिन् परत, अपरस्मिन् अपरत।

### २०४ च य ता एततृ यद् तदाम्।

अभिन् अञ्च स्टेल, अञ्चलकात का यम्यात य, अञ्चलकात अ स्त्र। यथी, एतस्तात् चतः, एतस्तिन् चल्; यस्तात् यतः, यस्तिन् यसः; तस्तात् ततः, तस्तिन् तसः।

२८१। किस: कु:।

किम्खात कू रहा। यथा, कस्तात् कृतः, कस्तिन् कृतः।

२৫৮। क कुड़ी।

क ଓ कृर निপांजन मिक्क रहा। यथा, बिसान का कुरा।

२००। दृद्दिम:!

हुनम्हात्न हे इत्र (००)। यथी, खल्यात् इतः।

२७०। सप्तस्या इ:।

मश्रमी द्वारत इ इंग्रं। यथा, अस्मिन् इह ।

(৩৪) দি, অস্মদ্, যুদ্ধাদ্ ভিন্ন।

( ৩৫ ) मानीम् इश्लिख इत्र।

#### २७५। इतरासामपि दृश्यन्ते।

২৬২। एक सर्व्वयो: कार्ल दा। কাল বুঝাইলে, এক, সর্ব্ধ, এই দুই সর্ব্ধনামশব্দের সপ্তমীস্থানে

२७७। सो वा सर्वस्य।

नं इत्र। यथा, एकस्थिनुका छे एकदा।

का इरेल, मर्खनकश्चात विकल्म म इत्। यथा, सर्वासान् काले सदा, सर्वेदा।

208। स्नन्य किं यदां स्ति च।

राजा, किम्, यम्, এই जिंन गर्यनीय गत्कत मश्रमीसाति, मा छ

हिंत् इत, ल देश, हिं शोरक। यथी, स्वन्यस्तिन् काले स्वन्यस्ति,
स्वन्यदा।

२७८ । किं यदो: क यो ।

मा ७ ईिल् इटेल, किम्इन्ति क, ७ यम्झिति य इहा। यथी,
किसान्काले किस्ति करा, यिखान्काले यिक्ति यदा।

२७७ ! तदो दानीं च। उद्गरकत मश्रमीद्वारत ना, ईिन्, ও नानीम् रह।

२७१ । तस्तदः ।

मा, दिन्, उमानीम् रहेत्त, उम् गक सात् उहाः यथा, तिसान्
काले तदा, तर्हि, तदानीम्।

## २७४। दूदमो दानीम्।

हेन्य्गास्त्र मश्रमीश्वादन नानीम् इतः। यथा, श्वास्तिन् काचे इदानीम्।

## २७৯। **य**धुनैतर्दी।

অধুনা, এতৰ্হি, এই দৃই পদ নিপাতনে • সিদ্ধাহয়। যথা, অফ্লিন্ কাট অধুনা, অভিনন্ ত্ৰকিয়ন্ বা কাট ত্ৰভি:।

## २१०। एद्युस् पूर्व्बा**देरङनि**।

मिन तूथारेतन, शृर्स প्रज्ञि প्राजिशमितकत छेवत अमूगम् रत।
यथा, पूर्व्वास्त्रस्तनि पूर्वेद्युः, खन्यसिस्तस्ति खन्येद्युः, खपर-सिस्तस्ति खपरेद्युः, इतरेद्युः, खन्यतरेद्युः, खपरेद्युः, उत्तरेद्यः, उभयेद्यः (३७)।

### २१५। स्थः सदोध्य छः परेद्यक्यः।

मिन तूथांवेतन, विकासि निश्ठ शूर्ववात कृत्, मर्थानवात महाम्, वेनम्बात कान, अवेद श्रद्धात येम् ७ श्रद्धाति व्हा । यथा, पूक्कासिस्वव्हनि ह्याः, समानेऽइनि सद्यः, क्षासिद्वव्हनि कद्यः, परिस्थानविन वः, परेद्यिन ।

## २१२। ऐषम: परत परारवो वर्षे।

वश्नद्र तुसारेल, विचिक्त महिल रेम्प्साक्त खेवमम्, शृर्कस्थात श्रद्धः, धवः शृर्काद्यस्य श्रदादि हत्। यथा, खिलान् वर्षे ऐवमः, पूर्वास्त्रन् वर्षे पहत्, पूर्वति वर्षे परारि।

### २१७। याल् प्रकारे स्तीयाया:।

<sup>(</sup>৩৬) উভয়শদের উত্তর দ্যুস্ও হয়। যথা, ভদযক্ষিন্ অস্তৃনি ভদযক্ষ্য:।

श्रकांत व्यर्थ, ज्जीवांचात्व थान् रव, न रूथ, था थारक। यथा, वर्जेः प्रकारेः वर्ज्या, चर्चिन प्रकारेण चर्च्या, इतरेण प्रकारेण इतर्या, उभवेन प्रकारेण उभव्या, चपरेण प्रकारेण चप्रया।

## २१८। यतौ यत्तहो:।

थील रहेरल, यम्भक श्वास्त्र य, उ अम्भक श्वास्त अ रहा। यथा, येन प्रकारिया यथा, तेन प्रकारिया तथा।

#### २१६। कथिसत्यमी।

कथेम् ଓ रेश्वम्, अरे पृष्टे श्रम निशांख्यन निष्य रहा। यथा, कीन प्रकारिया कथम्, खनेन यतेन वा प्रकारिया इत्यम्।

२१७। परादेरसात् सप्तमी पञ्चमी प्रथमानाम्।
शत প্রভৃতি প্রতিপদিকের সপ্তমী, পঞ্চমী, ও প্রথমার স্থানে
অক্তাৎ হয়। যথা, परस्किन् परस्कात् परो वा परस्कात्, पश्चिमे
पश्चिमात् पश्चिमे वा पश्चिमस्कात्।

#### २११। पश्चात्।

অস্তোৎ সহিত অপ্রশব স্থানে পশ্চাৎ নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, অমমন্ত্রিকু অমমন্ত্রান্ অমমী বা মন্ত্রান্।

## २१४। उपर्श्वपरिष्टात्।

অস্কাৎ সহিত উৰ্দ্ধণৰ স্থানে উপৰি ও উপৰিষ্টাৎ নিপ:তনে সিদ্ধ হয়। বথা, জৰ্দ্ধী জৰ্দ্ধী বা ভৰ্মানে, ভৰ্মাছোন্।

## २१२ । पूर्वीधरावराणामसिख।

পূর্ব্ব, অধর, অবর, এই তিন প্রাতিপৃদিকের সপ্তমী, পঞ্চমী, ও প্রথমার স্থানে অস্তাৎ ও অসি হর, ই ইৎ, অস্ থাকে।

## २४० । पुराधी पूर्वाधरयोः।

অहा ८ अमि हरेल, পূर्वस्थात भूत, ७ अध्वस्थात अध रह।

यथा, पूर्वित्तान् पूर्वसात् पूर्वो ना प्ररक्तात् पुरः ; अधरिसन् स्वभरकात् सभरो ना सभक्तात्, सभः।

#### २५५। अवो विभाषावरस्य।

खहां ९ अभि इटेल, अवत्रश्वात विकल्ल अव हव। यथा, खबर-स्मिन् खबरस्मात् खबरो वा खबस्तात्, जीवरस्तात्, अवः, खबरः।

### २४२। दिन्देशयोर्दिणाेन्तरयोरतसु:।

मिश्रीष्ठ ७ मिनवाष्ठ मिक्रिंग ७ छेहत मास्त्र मश्रेषी, श्रेश्मेषी, ९ প्रश्मोत म्हांत जजमू इह, छे हैं ९, जजम् थांति। यथा, दिविष्-िक्सिन् दिविष्तातः, उत्तरिस्तान् उत्तरः।

### २৮७। उत्तराधरदिवाणानामाति:।

উত্তর, অধর, দক্ষিণ, ইংাদের সপ্তমী, পঞ্চমী, ও প্রথমার স্থানে আতি হয়, ই ইৎ, আং থাকে। যথা, ভর্মক্ষান্ ভর্মক্ষান্ ভর্মী বা ভর্মান্; অধ্যান্, হ্রিয়ান্।

## २५८। एनप् चादूरेऽपञ्चग्याः।

चमूत चार्थ, अनल् ६ इर, १४ हे॰, अन थोर्क। यथा, उत्तरिकान् उत्तरी वा उत्तरिका; स्वधरेक, दिचकोन। शक्ष्मीस्रोत इर ना।

### २५८। दिचणोत्तरयोराहा च ।

দক্ষিণ ও উত্তর শদের সপ্তমী ও প্রথমার স্থানে আৎ ও আহি
হর, ত ইৎ, আ থাকে। যথা, হাল্লিয়া, হল্মিয়ালি; ভদ্মানে,
ভদ্মানিয়ালি।

### २৮७। भवे कालाव्ययेभ्यक्तनष्।

खब अपर्थ, कांनवांनी अवग्रशास्त्र छेटत उन्द रहा व रे॰, उन शांक। यथा, बाद्य भवस् खाद्यतनम्, प्रातभेवं प्रातस्त्रनस्, सार्यं भवं बायलनम्, दोवातनम्, दिवातनम्, पुरातनम्, विरल्तनम्, सदातनम्, अधुनातनम्, ददानीलनम्, तदानीलनम्।

### २৮१। प्राक्ते प्रगेश्याच्या

প্রাক্নে, প্রবেগ, এই দুই সপ্তম্যন্তের উত্তর ও হয়। যথা, দাল্লিবনন্, দদীবনন্ন।

२४४। विभाषा पूर्व्याक्कापराक्कास्यां सप्तस्याम् । मध्यी विश्वक्तिरु, शृक्षीङ्ग ७ जशताङ्ग मानत छेवत विकाल्य छनय् इत्र । यथा, पूर्व्याक्के भवं पूर्व्याक्केतनम्, पौर्व्याक्किम् ; जपराक्के भवम् जपराक्कितनम्, जापराक्कितम् ।

### २४२। नित्यसङ्ग्रीदेः।

উর্জ প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর নিত্য তনষ্ হয়। যথা, জর্ত্তী भवः জর্ত্তুরন:, ওদহি भवः ওদহিतनः, অবधः भवः অধাননः, দাক্ भवः দাক্ষানः, पूर्वो भवः पूर्व्यतनः।

### २৯०। चादि मध्यास्यां मन्।

সপ্তমী বিভক্তিতে, আদি, মধা, এই দূই প্রাতিপদিকের উত্তর মন্ হয়, ন ইং, ম থাকে। যথা, আহী সবং আহিদঃ, দध्ये भवः দখ্যদঃ।

#### २৯১। स्यान्तपश्चाद्वरो डिम:।

জগ্র, অন্ত, পশ্চাং, এই তিন প্রাতিপদিকের উত্তর ডিম হর, ড ইৎ, ইম থাকে। যথা, অন্ত মবং অনিদ:, অন্ত মবং অন্তিদ:, দস্বার্ মবং দস্বিদ:।

## २৯२ । चिर पदत् परारिध्यस् तः । वित, शक्य, शत्रांति, এই ভিনের উত্তর হন হয়। यथा, चिरतः, पदनुः, परारितः।

# २৯७। दिचिणा पश्चात् पुरोभ्यस्त्वरण् ।

দক্ষিণা, পশ্চাৎ, পুরস্, এই তিনের উত্তর তাণ্ হয়, গ ইৎ, তা থাকে। যথা, दाचियात्यः, पाञ्चान्यः, पौरस्यः।

## २ २ ४ । चमे इ क तिसल् त्रल्थस्त्यः।

অমা, ইহ, ক্ল, এবং তদিল্ও তল্ প্রত্যয়ান্ত, ইহাদের উত্তর ত্য হয়। যথা, অসাল্ডঃ, হুল্লঃ, ক্লান্ডঃ; তদিল্প্রত্যয়ান্ত—ননক্ষঃ, অনক্ষঃ, ক্লানক্ষঃ; তল্প্রত্যয়ান্ত—নদানঃ, আনিলঃ; ক্লানতঃ।

## २৯৫। किमिश्चिचनौ विभक्तान्तात्।

विख्कार किम्भाक्त उठत हि॰ उ हत इत। यथी, काश्चत् काश्चित्, कोनविष्, कस्मोचित्, कश्चाञ्चित्, कस्यचित्, काश्चित्, कृतिश्चित्, काचित्, कुल्लचित् क्षत्वन, किश्चन, कश्चन, कृतस्वन, काचन, कुल्लचन।

## २৯७। स्मृसियोगे स्ततद्वावे चि:।

কৃ, জু, অস্ ধাতুর ঘোগে, অজুততদ্ভাব (৩৭) অর্থে, প্রাতি- । পদিকের উত্তর চি, হয়, চির সমুদয় ইৎ, কিছুই থাকে না।

#### २৯१। दौषीं ज्यः।

অভূততদ্বাব অর্থে প্রতায় श्रेल, প্রাতিপদিকের অন্তব্ধিত হুর বর দার্ম হয়। যথা, অবদু বদু ক্রানি বদুক্রানি, অবদুর্বদুঃ সবনি বদুশ্বনি, অবদুর্বদুঃ স্থান্, বদুস্থান্।

## २৯४। दूरवर्षस्य।

শ্বজুততদ্বাব অর্থে প্রতার হইলে, প্রাতিপদিকের অক্তরিত অবর্ণ স্থানে ঈ হয়। যথা, স্থায়ক যুক্ত কথানি যুক্তা কথানি, স্বয়ক্তঃ যুক্তা শবনি যুক্তা শবনি, স্বয়ক্তঃ যুক্তঃ স্থান যুক্তা আন্।

<sup>(</sup>১৭) অভূতের ডদ্ভাব, অর্থাৎ যে যেরূপ না থাকে, ভাহার সেরূপ হওয়া; যেমন, যে বস্ত শুক্ত না থাকে, ভাহার শুক্ত হওয়া।

#### २৯৯। इतो री:।

অভূততভাব অর্থে প্রত্যয় হইলে, প্রাতিপদিকের অন্তন্তিত থকার স্থানে রী হয়। যথা, অস্মানাত স্থানাত কটোনি স্থানীকটোনি, স্থানীধবনি, স্থানীজ্ঞানু।

### ७००। लोपोऽन्सादेरन्यस्य।

অভূতত हार वर्ष প্রতার श्रेल, व्यक्त, मनम्, हकूम्, हिडम्, दश्न, दलम्, श्रेमित व्यक्त वर्णद लाल हत। यथा, व्यक्त सोति, व्यक्त मवति, व्यक्त खात्; विमनीक सोति, विमनीभवति, विमनीखात्; व्यक्त करोति, व्यक्त स्वाति, व्यक्त स्वाति, व्यक्त स्वाति, व्यक्त स्वाति, विस्ति स्वति। विर्त्तीभवति, विर्त्तीभवति, विर्त्तीभवति, विर्त्तीक सोति, विर्त्तिक सोति, विर्त्ति सोति, विर्त्तिक सोति, विर्त्ति सोति, विर्त्तिक सोति, विर्त्ति सोति, विर्त्ति सोति, विर्त्ति सोति, विर्त्ति सोति, विर्ति सोति, विर्त्ति सोति, विर्ति सोति, विर्त

## ७०५। विभाषा सातिच् कारसेँग।

कां श्र्मी (၁৮) तूसां हेटल, ज्ञ्जूड कां व व्यर्थ, कृ, ज्ञू, ज्ञ्न् थां पूर् यादा. विकल्म मां जित् हर, हे त हे थ, मां थादा। घथा, क्रत्सं नवयां जनं करोति जनसात् करोति, क्रत्सं नवयां जनं भवति जनसङ्ग्वति, क्षत्सं नवयां जनं स्थात् जनसात् स्थात् । भव्यसात् करोति, भव्यसङ्गवति, भव्यसात् स्थात्। भव्यक्ति घथा, जनके करोति, जनोभवति, जनोस्थात् । भव्यकिरोति, भव्यो-भवति, भव्योस्थात्।

## ७०२। चांभविधी सम्पदा च।

অভিবিধি(৩৯) বুঝাইলে, অভূততদ্ধাব অর্থে, হৃ, ভূ, অস্, ও সদ্-পূর্বাক পদ্ ধাতৃর যোগে, বিকম্পে সাতিচ্ হয়। যথা, অফিন্তান্

<sup>(</sup>১৮) एक आ व्यक्तेः सर्वावयवावच्छे देनान्ययाभावः कार्त्स्यम् । (১৯) बङ्गनां व्यक्तीनां किञ्चिद्वयवावच्छे देनान्ययाभावः व्यक्तिविधः।

करोति, चिन्नसाङ्गर्वति, चिन्नसात् स्थात्, चिन्नसात् सम्पद्धते। श्रांक हि,। यथा, सम्मीकरोति, खम्नीभवति, सम्मीस्थात्, सम्मी-सम्पद्धते।

#### ७०७। सधीनतायाञ्च।

अधीन अर्थि इत्। यथा, राज्ञो अधीनं करोति राजसात् करोति, राज्ञोऽधीनं भवति राजसाङ्गवति, राज्ञोऽधीनं खात् राजसात् खात्, राज्ञोऽधीनं सम्मदाते राजसात् सम्मदाते। शक्कि वि। यथा, राज्ञोकरोति, राजीभवति, राज्ञोखात्, राजीसम्मदाते।

### ७०८। देये ताच्चां

प्तत त्याहेल, कृ, खु, अम्, अम्पृर्वक प्रमृ धांजूत वाद्मा पात होति । यथा, बाद्मा पाय देयं करोति बाद्मा पात करोति, बाद्मा पाता करोति ; बाद्मा पाता करोति , बाद्मा पाता स्थात्, बाद्मा पाता स्थात् ; बाद्मा पाता स्थात् ; बाद्मा पाता स्थात् ; बाद्मा पाता सम्मदाते ।

## ७०६। सञा दितीयादे: सषी डाच्।

कृथांजूत र्यारा, विजीत, जृजीत, नम्न, तोक, अहे मकन श्रीजिशित्वत्व खेवत, कर्मन खार्थ, डाठ्हत, उठहेर, खा थारक। यथा,
दितीयानरोति, हतीयानरोति; दितीयं हतीयं कर्मणं करोति
इत्यायः; प्रम्याकरोति खबुवोमकष्टं खेलं प्रतिवोमं कर्मतीत्यर्थः;
वीजाकरोति, वीजेन सह कर्मतीत्ययः।

### ७०७। संख्यायांच गुणान्तायाः।

গুণশন অন্তে থাঁকিলে, সংখ্যাবাচক শনের উত্তর, ভূধাতুযোগে, কর্মণ অর্থে, ডাচ্হয়। যথা, হিন্তবাদানীনি নিন্তবাদানীনি অনন্, হিন্তবা নিন্তবা কর্মনীক্ষম:।

#### ७०१। समयाच्च वापनावास्।

यांश्रेत तुकारेल, मगर मास्कृत छेवत छोठ् रेव। यथा, समया-करोति, समयं यापवतीत्यर्थः।

### ७०৮। सपत निष्यताभ्यां व्यथने।

वाधन अर्थ, मलज, निष्मेज, এই मूहे প্রাতিপদিকের উত্তর ডাচ্ इत्र। यथी, सपताकरोति च्हमं व्याधः, सपतं सरम् अस्य सरीरे प्रवेशयम् व्यययतीत्यर्थः, निष्मताकरोति, सरीरात् सरम् सपरपार्थे निष्मुतमयन् व्यययतीत्यर्थः।

## ७० । निष्कुलास्त्रिकोष्रणे।

निष्कारंग (८०) अर्थ, निस्कृत, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ডাচ্ इत्र। यथी, निम्कुबाकरोति दाङ्गिम्, दाङ्गिस्य चन्द्रवयवान् विक्रिंशार्यतीत्वर्थः।

## ७५०। सुख प्रियाभ्यामानुनोस्ये।

व्यानुलामा व्यर्थ, मूथ, श्रिष्ठ, এই দুই श्रीिष्ठ शिव्यक्त वेठत छोष्ट् इतः यथी, सुखाकरोति प्रियाकरोति निव्यम्, चतुक्वाचरणेन व्यानन्दयतीलार्थः।

## ७১১। दु:खात् प्रातिलोस्ये।

প্রাতিলোম্য বুঝাইলে, দু:খ, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ডাচ্ছর। यथी, दु:खाकरोति स्टत्यः, खामिनं पोड्यतीस्तर्थः।

## ७১२ | न्यूलात् पाने।

পাক অর্থে, শ্ল, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ছাচ্ছর। যথা, পুরোক্যানি নাবন্, পুর্বি দ্বনীক্ষেত্।

#### ( 8 ॰ ) কোষ ছইতে বহিষ্কুর্ণ।

### ७১७। सत्यादशपये।

শপথ ভিন্ন অর্থে, সত্য, এই প্রাতিপদিকের উত্তর ডাচ্ হয়। যথা, सत्याकरोति भार्क्ड विश्वक, क्रेतव्यमिति प्रतिजानोते दृत्यर्थः।

### ७५८। मद्रात् परिवापग्रे।

মুঙন অথের্ মৃদুশবের উত্র ডাচ্হর। যথা, मद्राकारोति, माक्स्यं स्यक्षनं करोतीलार्थः।

# স্ত্রীপ্রত্যয়

### ५। स्त्रियाम्।

এই প্রকরণে যে সকল কার্য্য বিহিত হইতেছে, তাথা ব্রালিক্ষে বুঞ্জি ছইবেক।

#### २। बदनादाप्।

चकातास প्रांजिপ नित्कत उंदत चार्थ् रह, श रेष, वा थांति। विशेष क्षा क्षा, दोन दोना, मिलन मिलना, क्षाया क्षाया, क्रिट क्रूरा, सरल सरला, प्रवल प्रवला, चवल चवला, निपुष्य निपुष्या. चतर चतरा, तरल तरला, चपल चपला, दिच्या दिख्या, उत्तर उत्तरा, पूर्व पूर्वा, पश्चिम पश्चिमा, प्रथम प्रथमा, दितीय दितीया, हतीय हतीया, चतुक् चलुका, प्रतिकृत प्रतिकृता, मनोहर मनोहरा।

## ्र । पापि प्रत्यवकात् पूर्वस्थात दृत्।

आल् इटेल, প্রত্যয়ক গারের পূর্বর বি অকারের স্থানে ইকার इয়। যথা, नायन नायिका, पाचक पाचिका, नाटक नाटिका, पाचक पाचिका, कारक कारिका, बोधक बोधिका, साधक साधिका, बाजक बाजिका।

### 8। नाष्ट्रकादेः।

অফীকা প্রভৃতির ককারের পূর্ব্ববর্তী অকারের স্থানে ইকার হয় না। যথা, অংশকা, মুখনা, কন্মনা, কম্কা, ব্যক্তা, নাম্কা, অধিফালা, ভদক্ষনা।

## ৫। दूप् गौरादिम्थः।

গৌর প্রভৃতি অকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হয়, প ইৎ, ঈ থাকে।

## ७। दूपि लोपोऽवर्णस्य।

केश रहेल, श्रेष्ठिशिव क्या हिंड कार्यात लोश रहा। यथा, गौर गौरी, जुमार नमारी, कियोर कियोरी, सुन्दर सुन्दरी, तस्य तस्यी, पितामह पितामही, मातामह मातामही, नद नदी, तट तटी, नट नटी, पट पटी, नदन कदनी, स्थल, स्थली, काल काली, नाग नागी, मग्डल मग्डली, सल्लक सल्लकी, नेतस -वेतसी, क्यतस क्यतसी, क्यामलक कामलकी, द्वाण द्वाणी, ट्रोण दोषी, वदर वटरी, कवर कवरी।

## १। जाती जातेरहन्ताहीप्।

कां व्यां विद्यां कां विति विद्यां कां विद्यां वि

#### । नाजादेः।

कांडितां होत् मर्था, यक প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হর না।
यथी, खज खजा, को किल को किला, चटक चटका, अश्व खश्चा,
मूषिक मूषिका, एक्सक एक्सिका, बाल बाला, वस वसा, क्येष्ट ख्योचा, कनिष्ठ कनिष्ठा, श्रूट्र श्रुट्रा। महश्यक পূর্বে থাকিলে হয়।
यथी, सहास्ट्री।

## ৯। न योपधात्रवयादिवज्जीत्।

যে সকল জাতিবাচী প্রাতিপদিকের উপধাস্থলে য থাকে, তাহাদের উত্তর ঈপ্ হর না। যথা, বিষয়ে বিষয়া। গবর, হর, মুকর, মংস্যা, মনুষা, ইহাদের উত্তর হব। যথা, সবলী দ্বানী দুকলী।

# ५०। लोपो मत्स्यमनुष्ययोयस्य ।

ক্লপুছইলে, মৎসাও মনুষ্য শকের যলোপ হয়। যথা, सञ्ची सञ्ज्यो।

## **५५ । ऋदन्तादीप्**।

श्रकातांस्त প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপু হয়। যথা, टाह टाली धाह धाली, कर्नृ कली, जनविह जनविली, प्रस्वित प्रस्विली।

### **१२। न खस्रा**देः।

श्रकांतास्त्रत्र मध्या, सम् প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হর না।
যথা, खसा, साता, दृष्टिता, याता, नमान्दा, तिस्तः, परास्तः।

## ५०। नान्तादीप।

नकातास প्राणिभिनित्कत खेलत स्मि इह । यथी, कासिन् कामिनी, मानिन् मानिनी, सायाविन् मावाविनी, सेधाविन् सेधाविनी, तपिखन् तपिखनी, विखासिन् विज्ञासिनी, खिध-कारिन् खिधकारियी, खतुगामिन् खतुगामिनी, उपकारिन् उपकारियी, खतुरामिन् खतुरामियी, प्रिवेदादिन् प्रिय-वादिनी, मनोद्वारिन् मनोद्वारियी।

#### ५८। उपधाया लोपोतनः।

ঈপ্ হইলে, অন্ভাগান্ত প্রাতিপদিকের উপধার লোপ হয়। যথা, যোলন্ যানী। উপধা মসংযুক্ত অথবা বসংযুক্ত বর্ণে মিলিত থাকিলে হয় না।

#### ५८ । न संख्यायाः।

নকারান্তের মধ্যে, সংখ্যাবাচী প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ছয় না। ষ্থা, দক্ষ, স্বয়, অভ, লব, রুগ।

#### ५७। न मनन्तात्।

नकांत्रास्त्रत यथा, यन्छांशास्त्र श्रीिष्ठ प्रितिकृत केत् कृत् कृत् वा । सथी, सीमा, पामा, सुदासा, कृतिसन्तिमा ।

## ५१। नाननाइज्ज्वीही।

বছব্রীহি সমাস হইলে, অন্ভাগান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হয় না। যথা, বহুনি ধন্যজা দলািআ বস্তুদলা বিজ্যতি:।

### **५ विभाषा डाप्**।

बह्यविश्विमान इटेल. অন্ভাগান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর বিকশ্পে ডাপ্ হর, ড প্ ইং, আ থাকে। ঘথা, बह्यपर्का, बहुपर्की, बहु-पर्काः; পক্ষে, बहुपर्का, बहुपर्काणो, बहुपर्काणः।

## ১৯। ईप् चोपधालोपिनो वा।

ষে সকল অনন্ত প্রাতিপদিকের উপধার লোপ হইতে পারে, বছব্রী হি মুমাস হইলে, তাহাদের উত্তর বিকল্পে ডাপ্ ও ঈপ্ হর। যথা, বস্তুব: যাল্যন: বস্তুবালা, বস্তুবালা, বস্তুবালা, বস্তুবালান, বস্তুবালান।

### २०। सुबत्याद्य:।

যুবতি প্ৰভৃতি নিপাতনে নিদ্ধ হয়। যথা, युवन् युवतिः, युवती, युनी; युनी ; नघवन् मधीनी, सघवती।

### २५। उद्दुरामीप्।

उकारतः ७ शकारतः अजारतं वार्ण निकास आंजिलिमिरकतं छेततं केल् इत । यथा, उकारतं — भवतं भवती, द्रयतं द्रयती, निवत् नियती, श्रीमत् श्रीमती, बुद्धिमत् बुद्धिमती, प्रस्नवत् प्रस्नवती, बज्जावत् बज्जावती, बज्जवत् बज्जती, प्रभावत् प्रभावती, कातवत् कतवती, प्रेयस् प्रयसी, श्रेयस् श्रेयसी, गरीयम् गरीयसी, खघी-यस् वधीयसी, कनीयस् कनीयसी। श्रेकारतः — सत् सती, इत्त् करती, ग्रह्मत् श्रूष्ट्यती, दिषत् दिषती, विश्वत् विश्वती, क्रबंत् कृष्ट्यती, गरीयस् गरीयसी, क्रबंत् करती, ग्रह्मत् गरीयसी, क्रवंत्

### १२ । शतुर्नुन् भ्र दिवादिभ्याम् ।

केल् रहेल, ज्रांनि ও निर्वानि शंशेत शंजूत उँ वर्त विश्व गंजू-প্রতায खान नून रह, उँ न हैं , न थांति, न शूर्वतर्वी रहेता जिकादि शिलिंड रह। यथा, ज्रांनिशंशीय—धावत् धावन्ती, गक्कत् गक्कनी, पतत् पतन्ती, तिष्ठत् तिष्ठनी, चलत् चलनी, पद्मत् पद्मनी, कारयत् कारयन्तो, खारयत् सारयनी, स्थापयत् स्थापयन्ती, पालयत् पालयन्ती। निरांनिशंशीय—दोव्यत् दीव्यन्ती, नक्षत् नक्ष्यनी, खावयत् खाल्यनी, जीर्व्यत् नीर्वनी, सञ्चत् सञ्चत् नक्ष्यनी, खाव्यत् खाल्यनी, जीर्व्यत् नीर्वनी, सञ्चत्

## २७। वा तुहाहै:।

जूमानिश्नीसित উতत दिकल्ला। यथा, तदत् तदनी, तदती; रक्तत् रक्तनी, रक्तती; एक्तत् एक्तनी, एक्तती; सम्मत् स्वमनी, स्वमती; विश्वत् विश्वनी, विश्वती।

### २८। बहादेरादनात्।

अमानिश्वीत आंकांतांत्ख्य छेठत विकल्ण। यथी, यात् यान्ती, याती; मात् मान्ती, माती; भात् भानी, भाती; स्नात् स्नानी, स्नाती।

### २८। विभाषा स्वतु:।

में भृष्डरेल, माज्ञे अञ्चल्लास्य विकाल मृत् रहा घर्षा, भविष्यत् भविष्यं न्ती; भविष्यती; करिष्यत् करिष्यन्ती, करिष्यती; दास्यत् हास्यन्ती, टास्यती; यास्यत् वास्यनी, वास्यती।

## ३७। टित् षिद्भग्रामीप्।

हेकादि ९ विकासि १ अजासि स्थान शांजिन निर्मान के कि से हैं । यथी, हेकादि १ अजासि १ विकास नायन गायनी, कर्मा कर कर्मा करी, वर्षकर व्यक्ति, वर्णकर वर्णकरी, निर्माचर निर्माचरी, वर्षकर वर्षकरी, वर्षकर वर्षकरी, निर्माचर निर्माचरी, भयक्वर भयक्वरी, वर्षक चर्री, पञ्चम पञ्चमी, वर्ष चर्मी, प्रमान सप्तमी, व्यस्म वर्षी, वर्षकर वर्षी, वर्षि वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षि वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षाच वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी, वर्षी वर्षी, वर्षी,

## २१। दूपि लोप: व्यक्षो इत:।

ইপ্ হইলে, হলবর্ণের পরবর্তী ষাণ্ প্রভায়ের লোপ হয়। বখা,

गार्ग्य गार्गी, वात्स्य वात्सी, चागस्य चागसी, वाभ्यव्य वास्त्री, माग्डव्य माग्डवी, मौद्गत्य मोद्देशी, कौरिएडन्य कौरिएडनी।

## २४। प्रागादेरीप्

প্রাচ্প্রতিপদিকের উত্র ঈপ্ হর। যথা, प्राच् प्राची, অবাच্ অবাची।

### २२। प्रतीचादय:।

প্রতীচী প্রভৃতি নিপাতনে কিছা হয়। যথা, प्रत्यच् प्रतीची, प्रत्यच्ची ; তবৰ্ তহীची, তবস্থী ; নির্ফাৰ্ নিম্মী, নির্ফান্ধী।

#### ७०। जातेरहन्ताज्यायाम।

कां वा व्यर्थ, कां िवां वि व्यकारां स्था ि अमितक दे हे हे व्र के भ् इत । यथी, बाद्धायस जाया बाद्धायी, म्यूट्स जाया म्यूट्री, गोपस्य जाया गोपी, गयकस जाया गयकी, नापितस्य साया नाविती, निवादस्य जाया निवाटी।

#### ७১। न पालकान्तात्।

পালক অন্তে থাকে, এরপে জাতিবাচী অকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্হয় না। যথা, गोपाचकस्य जाया गोपाचिका, पशु-पाचकस्य जाया पशुपाचिका।

### ७२। भवादेरानीपौ।

काता অর্থে, ভব প্রভৃতি (৪১) প্রাতিপদিকের উত্তর আন্ ও ঈপ্ হর। যথা, भवद्य जाया भवानी, सर्वेद्य जाया सर्वाची, स्ट्य जीया स्ट्राची, म्हज्य जाया म्हजानी, स्न्ट्र्य जाया स्न्ट्राची, मह्माया जाया वर्षानी।

(৪১) ভব, দর্জ, রুদু, মৃড়, ইন্দ্র, বরুণ, ব্রহ্মন্, মাতুল, কব্রিয়, অর্য্য, উপাধ্যায়, আচার্য্য।

### ७७। नलोपो ब्रह्मां गः।

আন্ হইলে, ব্রহ্মন্শব্দের নকারের লোপ হয়। যথা, **সন্মাথী** লাখা সন্মাথী।

### ७८। मातुलादान् विभाषा।

মাতুলশব্দের উত্তর বিকশেপ আন্ হয়। যথা, **साह्यस्य जाया** साह्यवानी साह्यवी।

# ७६। वा चित्तियादेरानीपौ।

কলির প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিকল্পে আন্ ও ঈপ্ হয়। যথা, चলিষভা জাযা चलियाणी चलिया, অভ্নত জায়া অভ্যাণী অভা, ত্যাচ্যায়ভা লায়া ভ্যাচ্যায়ানী ত্যা-ভ্যায়া, ভাষাত্তি লায়া ভাষাত্রানী (৪২) ভাষাত্রা।

## ७७। अर्थविश्वेषे हिमादेः।

অর্থবিশেষে, হিম, অরণ্য, যব, যবন, এই চারি প্রাতিপদিকের উত্তর নিত্য আন্ ও ঈপ্ হয়। যথা, मञ्जल हिमस् हिमानी, मञ्जल অহেঅন্ অহেআনী, দ্বতী যকা ববানী, यवनानां ভিদিঃ यवनानी।

## ७१। वा घोणादेरीप्।

(गांव প্রভৃতি প্রাতিপদিকের উত্তর বিকণ্পে ঈপ্হয়। যথা, মोखो মोखा, चराडी चराडा, चराबी चराचा, कपबी कपबा, कराखो कराखा, पुराबी पुराखा, उदारी उदारा, विकटी विकटा, विभावी विमासा, विसङ्कटी विसङ्कटा।

## ७৮। अवयवाइस्त्रवीही।

বছব্রীথি সমাস হইলে, অবয়ববাচক প্রাতিপদিকের উত্তর বিকম্পে

क्रेश्र्ह्य। यथा, चन्द्रसखी चन्द्रस<mark>खा, सनेग्री सनेग्रा</mark>, तास्त्र-नखी तास्त्रनखा।

## **ిస** । न संन्तायां नख मुखाध्याम् ।

সৎজ্ঞা বুঝাইলে, নখ, মুখ, এই দুই অবয়ববাচক প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্তর না। যথা, সুদ্দল্জা, সীদের্জা।

## 8०। न कोड़ा है: i

ক্রোড় প্রভৃতি অবয়ববাচক প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্তর না। যথা, सुक्रोडा, तो ख्युख्रा, चार्काखा, दीर्घणा।

## 85 । न संयुक्तोपधादङ्गादिवज्जीत्।

रय मकल अवस्ववाहक প্রতিপদিকের উপধাস্তে मংযুক वर्ग थाक, जाशानत উত্তর ঈপু इस ना। यथा, स्टमनेत्रा, चार्यास्मा, नोसिन्द्रा। अत्र প্রভৃতির উত্তর হয়। सथा, समाङ्गी समाङ्गा, स्टुमाली स्टुमात्मा, विस्तोष्ठी विस्तोष्ठा, को निनक्ष्यो को किन्न कर्यहा, कुन्ददनी कुन्ददना, चार्क्यों चार्क्या, दीर्घनङ्की दीर्घनङ्का, सत्युच्छी सत्युच्छा, तीन्यास्टङ्की तीन्यास्टङ्का।

## 82। न द्यधिकखरावासिकोदरवर्जात्।

य मकल खबरवर्वाठक প্রাতিপদিকে দুয়ের অধিক ধ্রবর্ণ থাকে, তাহাদের উত্তর ঈপ্ছয় না। যথা, स्रगनयना, चन्द्रवदना, चास्-दश्चा, ष्ट्रयुज्ञधना, खोखरसना। নাদিকা ও উদরের উত্তর হয়। যথা, स्ट्रक्टनासिकी सङ्कनासिका, क्रशोदरी क्रशोदरा।

## ८७। न सह नञ् विद्यमानपूर्योत्।

সহ, নঞ্, বিদ্যমান পূর্বে থাকিলে, অবয়ববাচক প্রাভিপদিকের উত্তর ঈপুহয় না। যথা, सकोशा, सकीशा, विद्यमानकेशा।

### 88। नित्यस्थसप्टेस नः।

বছব্রীহি স্মাস হইলে, উধস্শব্দের উত্র নিতা ঈপু ও টিস্থানে

नं रहा। यथा, पीनमखा जधः पीनोक्षी, घटनदस्या जघः घटोक्की, दिनिधमस्या छधः दिनिधोक्षी, स्वति स्वस्था जधः स्वस्थित्री।

### 8৫। दामचायनाभ्यां संख्यायाः।

दछ्दीरि ममाम १६८न, म०थाविष्ठिक गर्पत् श्रुत्वी मामन्, शंत्रन्, এই मूरे প্রতিপদিকের উত্তর ঈপ্ হয়। য়থা, हे खद्या दानी हिटानी, तीख्यसा दानानि तिदानी, हावसा हायनी हिहायनी, तिहायणी, चतुर्हायणी गौः। शंत्रनण्य तर्ताविष्ठ ना १३८न, ঈপ্ ও १७०० १য় ना। য়था, हिहायना, तिहायना, चतुर्हायना मासा।

#### 8७। दुस्नादिभाषा ।

हेकातास श्रीिडिशनित्कत उहित विकल्म द्रेश । यथा, श्रेसी श्रीसः, राजी राजि, खानी खानिः, नटी नटिः, रात्नी राजिः, रजनी रजनिः, यारी गारिः, वही यटिः, सही सहिः। नपी निषः, सनी सनिः, यनटी यनटिः।

# ८१। नित्यं संब्युः।

मिथनाद्भत निजा। यथा, सखी।

### ८৮। न ते:।

ক্তিপ্রতায়নিষ্পন্ন ইকারাম্ভ প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ছয় না। যথা, गतिः, স্থিনিং, জনিং, দনিং, মনিং, নৃদ্ধিং।

## ८৯। वा शक्ति पञ्चतिस्थाम्।

শক্তি ও শক্ষতি শব্দের উত্তর বিকম্পে। যথা, মন্ত্রী মন্ত্রি: (৪৯), দৰ্বনী দন্তবি:।

# ৫०। पत्सुनी यन्नसंयोगे।

<sup>(</sup>৪৩) অব্ৰ অর্থে।

যজ্ঞসংযোগ অর্থাৎ যজের ফলভাগিত বুঝাইলে, পতি এই প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ও ইকারস্থানে ন হয়। যথা, बिश्वस्य पत्नी, बिश्वस्य पत्नी, बिश्वस्य पतिरियम्, এ স্থলে পতিশন্দের অর্থ অধিকারিণী, যজ্ঞফলভোক্ত্রী নহে, এজনা ঈপ্ও ন হইল না।

#### ৫১। सपत्नीप्रस्तयः।

मश्रको প্রভৃতি শক निशांत्रत मिक्क रहा। यथी, समानः पतिरखाः सपत्नी, एकः पतिरखाः एकपत्नी साध्नो, नीरः पतिरखाः नोरपत्नी, एकः पतिरखाः एकपत्नी, भट्टः पतिरखाः भट्टपत्नी, पञ्च पतयोऽखाः पञ्चपत्नी द्रौपदी, पतिरक्ष्यखाः पतिनत्नी जीव-द्वर्णका, अन्तरक्षयखाः सन्वेत्नी गर्भियो।

## (१२। पदो बद्धवीसी।

वक्ष विशिष्ट मान श्रेल, भम् এर প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ स्त । यथा, द्वावस्थाः पदौ द्विपदो, लयोऽस्थाः पदः लिपदो, चत्रस्पदी, बक्कपदो, श्रतपदो।

#### ৫७। इतस्र।

বছব্রীথি সমাস হইলে, দং এই প্রাতিপদিকের উত্তর ঈপ্ষয়। ষথা, মুহেনী, चাত্তনী, মুঞ্জহনী, কুল্কুহনী।

## **८८। पाणिग्टहीतात् पत्याम्**।

পक्की अर्थ दूत्राहेल, शािभृहीं गत्कत छेवत केंश्रहा । यथा, वािक्टहीतो पत्नी; अन्यव, पौिक्टहीता नारी।

### ৫৫। বা **ন্যানাবনাবুক্না**ন্। গুণবাচক উকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর বিকম্পে ঈপ**্**ষয়। যথা,

चंदी च्हुः, साध्वी साधुः, पट्टी पटुः, स्वी स्तः, सध्वी समुः, स्वाची ख्रुः, स्वाची ख्रुः, रखी रहः। थळ्णस्य रह मा।

## ৫७। न संयुक्तोपधात्।

যে সকল প্রণবাচক উকারান্ত প্রাতিপদিকের উপধান্থলে সংযুক্ত বর্ণ থাকে, তাহাদের উত্তর ঈপ্হর না। যথা, দাযভু:।

### ৫१। नित्यमिष्यनहुद्भाम्।

অশিশুও অন্তুহ্ শব্দের উত্তর নিতা ঈপ্হয়। বথা, আমিশ্বী, নাক্ষ্যাং মিয়ুহিন্ত্য:; অবজ্দী।

# **৫৮। चन**ड्वाही।

নিপাতনে সিদ্ধ।

### **७३। उदन्तादूप्**।

উকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর উপ্ত্র, প ইৎ, উ থাকে। যথা, ক্লকু:, করু;, ক্লাবু:, কর্কু, কল্লুনন্যু:।

#### ७०। न रज्जाहे:।

রজ্প্রভৃতি উকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্র উপ্ছর না। যথা, হেজ্যুঃ, भेतुः, আংজ্যুঃ, ছরুঃ, কময্তেলুং, ক্রমণাক্রঃ, তুলাক্রঃ, অংশ্রম্ভুঃ।

### ७५। विभाषा तन्वादेः।

তনু প্রভৃতি উকারান্ত প্রাতিপদিকের উত্তর বিকল্পে উপ্ছয়। যথা, तन्: বৃত্ত:, चञ्चः चञ्चः।

## ७२। खत्रु: खंग्रुरस्र।

यज्ञतमक्ष्मात निभाजत्व चट्ट इहा यथा, ब्राईस्य जावा बन्ः।

### ५०। जरोरीपस्ये।

उपमा तूसाहत, छेळ এह প्राडिशमितक छेठत छेप् इत। यथा, रक्षो दवास्या जह रक्षोद्धः, करभाविवास्या जह कर-भोदः, करिकराविवास्या जह करिकरोद्धः।

### ७८। वासादिपूर्वाञ्च।

वांस প্রভৃতি শব্দের প্রবর্তী উক্ত এই প্রাতিপদিকের উক্তর উপ্হর। যথা, बामोक्टः, सहितोक्टः, सहोक्टः, संहितोक्टः, चचयोक्टः, समोक्टः।

# मयोम।

## ) एकपदीभावः समासः।

দুই বা বহু পদের যে একপদীভাব, অ্থাৎ এক পদ হইয়া যাওয়া, ভাহাকে সমাস বলে।

## २। लुक् विभन्ने:।

সমাসের অন্তর্গত পদ সমুদয়ের বিভক্তির লোপ হয়।

# ७। नस्य लोपः पूर्वस्य ।

সমান হইলে, পূর্ব্ব পদের অন্তন্থিত নকারের লোপ হর।

## 8। परस्य खरे।

ষরবর্ণ পরে থাকিলে, পর পদের অন্তদ্থিত নকারের লোপ ইয় (৪৪)।

## तोपोऽवसंवस्योः।

(৪৪) কপ্প্রভার পরে থাকিলেও, পর প্রদের অস্তদ্থিত নকারের লোপ হইরা থাকে। স্বুর্বর্ণ পরে থাকিলে, অর্বণ ও ইবর্ণের লোপ হয়।

### ७। अकारो नओ इलि।

হলবর্ণ পরে থাকিলে, নঞের নঞের স্থানে অনু হয়।

### १। अन्खरे।

স্বর্বর্ণ পরে থাকিলে, নঞ্জের স্থানে অনু হয়।

### **४। टेर्लीपो डिति।**

ডকারেৎ প্রত্যয় পরে থাকিলে, টির লোপ হয়।

### ১। तेवियते:।

বিৎশতিশব্দের তি এই ভাগের লোপ হয়।

## ५०। च्रखावन्ते गोस्त्रियावन्यार्थे।

যে স্থলে অন্য পদার্থের প্রতীতি হয়, তথায় অ**ন্ধন্থিত গোশ**ক ও ব্রীপ্রত্যয় হুর হয়।

#### **५५। स्त्री नेयसुन:।**

ঈয়সুনের পরবর্তী দ্বীপ্রতায় হুম্ব হয় না।

### **५२। समासा: प्रातिपदिकानि ।**

সমাস হইলে, সমস্ত ভাগ প্রাতিপদিক হয়, অর্থাৎ পুনরায় তাহা-দের উত্তর নৃতন বিভক্তি হয়।

## ১७। विश्वेष्य लिक्सनयार्थे।

যে স্থলে অন্য পদার্থের প্রতীতি হয়, তথায় সমস্ভ ভাগ বিশেষ্য-লিক হয়।

## **১8। नपुंसकैकवचने समाचारे।**

সমাহার সমাস হইলে, সমস্ত ভাগ মপুৎসকলিক ও একবচনাস্ত হয়।

#### . ५८। पुंबङ्गाव: सर्वेनाम्न:।

সমাষে ক্রীলিঙ্গ সর্ধনামের পুংবদ্ধাব অর্থাৎ পুংলিঞ্চের ন্যায় আকার হয়।

### **७ । महतो महा विशेषो ।**

বিশেষ্য শব্দ পরে থাকিলে, মহৎশব্দস্থানে মহা হয়।

#### অব্যয়ীভাব সমাস।

## ১। स्रव्यवीभावः।

এই প্রকরণে যে সমাস বিহিত হইতেছে, তাহার নাম অব্যয়ীভাব।

## २। नपुंसकमव्यवीभावे।

অব্যয়ীভাব সমাস হইলে, সমস্ত ভাগ নপুৎসকলিঙ্গ হয়।

### ७। चदन्तादिभक्तेरपञ्चग्या मः।

অকারাম্ভ অব্যরীভাবের পরবর্তী বিভক্তির স্থানে ম হয়, পঞ্চমীর স্থানে হয় না।

## 8। विभाषा त्यतीयासप्तस्योः।

ত্তীয়া ও সপ্তর্মা বিভক্তির স্থানে বিকল্প।

## ৫। जुक्परात्।

অকারান্ত ভিন্ন অব্যরীভাবের পরবর্ত্তী বিভক্তির লোপ হয়।

## ७। सुपाव्ययं समीपादौ।

मभीপ প্রভৃতি (६৫) অর্থে, সুবন্ত পদের সহিত অব্যারের সমাস হর। যথা, সমীপ—ফল্পু समीपम् उपक्रम्, गङ्गायाः समी-पैम् उपगङ्गम्; অভাব্—विज्ञस्याभावः निर्विज्ञम्, मिलाकाणाम्

<sup>(</sup>८६) समीप, खभाव, खल्याय, खलस्मति, पश्चात्, योग्य, वीद्या, खनतिहत्ति, खालुपूर्क्य, विभक्ति, साहय्य, योगपद्य, सांक्या, सस्टिंक् पर्यान दल्यादि।

स्वभावः निर्माचिकम्; अञाद्य-इमस्याख्यः स्राति निर्माम् वास्या स्रत्यः स्राति निर्माम् अगुण्डि—निद्रा सम्पति न युक्यते स्रतिनिद्रम्, प्रोकः सम्पति न युक्यते स्रतिप्रोकम्; श्रुक्यते स्रतिप्रिकम्; श्रुक्यते स्रतिप्रोकम्; श्रुक्य पञ्चात् स्रतु स्रत्य पञ्चात् स्रतु स्रत्य पञ्चात् स्रतु क्रुक्यम्, कृतस्य योग्यम् स्रतु कृतम्; स्रिश्म—दिनं दिनं प्रति प्रतिदिनम्, यद्धं यद्दं प्रति प्रतियद्धम्; स्रतिप्रतियद्धम् स्रानम् तिक्रस्य ययाः प्रति, ज्ञानमनिक्रस्य ययाः ज्ञानम्, अनुशृक्या—क्रिक्य ययाः प्रति, ज्ञानमनिक्रस्य ययाः ज्ञानम्, अनुशृक्या—क्रिक्य स्रति प्रति प्रति प्रविष्टिक्याः स्रति प्रति प्रति प्रविष्टिक्याः स्रति प्रति स्रति प्रति प्रविष्टिक्याः स्रति प्रति स्रति प्रविष्टिक्याः स्रति प्रति प्रति प्रविष्टिक्याः स्रति प्रति स्रति प्रति प्रति प्रविष्टिक्याः स्रति स्रति

#### १। सह: सोऽकाले।

ख्वातीस्रां मथात्म, मश्यक्षात्म म श्रः वर्षा, मामृगा—इरेः सहश्चं सहिद्दः योगेशमा—चक्रेण युगपत् सचक्रस्; मोकला— त्यासस्यपित्त्वस्य सत्यास्; मश्कि—सद्रायां सस्दिः समद्रस्ः शर्यात्र— स्वानियन्यपर्यान्तसभीते सान्ति। कोल तूसोहेल श्रः ना। वर्षा, सहपूर्वाह्मस्, सहापराह्मस्।

### । यावद्वधारणे।

ख्यशांत्र युकाहेत्व, मृत्यस्त्र महिल घांतर अहे मास्त्र मयाम इह। यथा, यावदमलं ब्राह्मणानामन्त्रयस्त, यावन्यमलाणि सन्ति पञ्च षद् वा, तावत् चामन्त्रयस्त्रेः।

## ৯। विभाषा विश्वरादिः पञ्चया।

পঞ্চয়ত্ত পদের সহিত বহিস্প্রভৃতি (৪৬) শদের বিকজ্পে স্থাস হর। ষথা, বল্লিআমি আলাব্রলিঃ, গ্লাযুখবন ভ্রমবনার্ গ্লাক্।

( ४७ ) महिस् प्राच्, खवाच् प्रत्यच्, सप्, परि द्रत्यादि ।

## ५०। बाङ मर्यादाभिविध्यो:।

मर्शामा ७ অভিবিধি ( ८९ ) तूसांहत्न, मृतस প्राम्त महिल खांड् अहे खतारत्नत निकल्म ममाम हत्। यथा, खापाटनिष्ठस्मम्, खा पाम्निष्ठस्मात्, हृष्टो देवः; खान्नमारम्, खानुमारेस्यः, बमः कानिटासस्य।

### **५५। लच्चेणाभि प्रती चाभिसुख्ये।**

আভিমুখ্য বুঝাইলে, লক্ষ্যবাচক সুবন্ধ পদের সহিত অভি, প্রতি, এই দুই অব্যয়ের বিকণ্ণে সমাস হয়। যথা, অধ্যক্তিন, অধিনন্দ্ অসি, সভানা: দবনির; দত্তাবিন, অধিন দিরি।

## ১২। यस चायामस्तेनातु:।

शंशंत रेन्ध्य तूर्यात्र, जाशंत महिल खनू अहे खरारत्रत विकरण्य ममाम हत्र। यथी, खनुमङ्गम्, मङ्गाया खनु, वाराणसी ; मङ्गा-देख्यंसडमदेखींपनचिता इत्सर्यः।

## ১७। पारमध्यो बद्या।

वकात अपन्त मिक्क आत ७ मधा नामत विकाल खराशीस्रोठ मयाम रहा। यथा, ससद्ख्य पारं पारेससुद्म्; मङ्गाया मध्यं मध्येमङ्गम्। निआंकत अकातांगय रहा। आक वकीमयांम।

## 58। संख्या नदीभि: समाचारे।

ममाशंद त्याहेटा, ननीवांठक मृत्य श्राप्त महिल मश्यांवांठरकद ख्वाजीलांव ममाम १३। वर्षा, तिल्लां गङ्गानां समाहारः लिगङ्गम्, पञ्चनदम्, सप्तगोदायरम्।

## ১৫। धन्यपदार्थे च संज्ञावाम्।

(१९) तेन विना मर्योदा, तत्वस्तितोऽभिविधिः।

मः जा तृथारेल, ও অন্য পদার্থ প্রতীয়মান ইইলে, নদীবাচকের সহিত সুবস্ত পদের অব্যয়ীভাব সমাস হয়। মৃথা, ভকালা गङ्गा यक्षिन् ভকালगङ्गम्, लोहितगङ्गम्, तृष्णीङ्गङ्गम्, प्रनेगङ्गम्। इमानि देशविधेषनामानि।

## ১৬। तिष्ठह्रप्रस्तीनि।

অব্যয়ীস্থাব সমাদে, তিছদ্ধ প্রস্তি (৪৮) শব্দ নিপাতনে সিদ্ধ হয়। যথা, নিচলি गावो यख्यिन् काले टोहाय নিচহুত, আয়েলি यख्यिन् काले गावो गोष्ठम् आयतीगवस्।

### ५१। श्ररहादेरन्।

অব্যরীভাব সমাস হইলে, শরদ্ প্রভৃতি (৪৯) শদের উত্তর অন্ হয়, ন ইৎ, অ থাকে। যথা, ভদমহেন্, দানিহিমন্, আছিন-বরন্, অন্ততমন্।

১৮। **অহাযা जरस्।** অনুহ**ইলে, জ**রাশক স্থান জর্ম্হয়। যথা, ভদলহ**বন্**।

## ५५। सरनसोपग्रुने।

<sup>(</sup>८४) तिहर्त, वहद्यु, खायतीगवम्, खलेयवम्, खलेव्यम्, लून्यवम्, लूयमानयवम्, पूत्रवन्य, पूयमानयवम्, संहृतयवम्, संन्धियमाण्यवम्, संहृतयवम्, संन्धियमाण्यवम्, सम्भूमि, सम-पदाति, स्वमम्, विषमम्, दःषमम्, निषमम्, खपसमम्, खायी-समम्, प्रोहम्, पापसमम्, प्रव्यसमम्, प्रान्तम्, प्रदेशम्, प्रदेशम्, अपरदिचिण्म्, सम्भति, स्वप्रमान्, प्रदेशम्, अपरदिचिण्म्, सम्भति, स्वप्रमान्।

<sup>(82)</sup> शरद्, विपाण्, खनस्, सनस्, उपानस्, दिन्, सिम-बत्, स्थिक्, बिहु, सहु, दिण्, हम्, विग्, चतुर, त्यहु, तहु, बहु, कियत्, जरा।

সর্জ্ব ও উপশুন নিপাতনে সিদ্ধ হয়। বথা, হলী চেম্ব হৈ দ্বেল্য सर्जसम्, शुनः सृतीपम् उपशुनम्।

### २०। प्रति परः समनुभ्योऽच्याः।

প্রতি, পর্স, সমৃ, অনু, ইংাদের পরবর্ত্তী অক্ষিশদের উত্তর অন रहा यथी, प्रत्यचन्, परोचन् समचन् **अन्वचन्**।

#### **चनना**त्।

অন্ভাগান্ত শন্ধের উত্তর অনুহয়। ষ্থা, ভুদ্মালন, অধ্যা-त्सम्, प्रत्यध्वम्।

### २२ । वा नपुंसकात् ।

নপুৎসক অনভাগান্ত শব্দের উত্তর বিকল্পে: যথা, ভদবাদ্মন্ **उपचर्मा** ।

## २७। गिरि नदी पौर्णमास्यात्रहायणीभ्यः।

গিরি, নদী, পৌর্ণমাসী, ও আগ্রহায়ণীর উত্তর বিকল্পে অনু হয়। यथा, उपनिरम्, उपनिरि; उपनदम्, उपनदि; उपपौर्ध-मासमः, उपपौर्णमामि ; उपायहायग्रमः, उपायहायाग् ।

## २८। स्पर्धान्ताच्चापञ्चमात्।

পঞ্চম ভিন্ন সপর্শবর্ণান্ত শদের উত্তর বিকল্পে অনু হয়। যথা, उपदृष्ट्य उपदृष्ठत्, अतुस्मिधम् अतुस्मित्।

## २८। प्रतेष्रसः सप्तमीस्थात्।

প্রতিশব্দের পরবর্ত্তী দপ্তমার্থে বর্তমান উরস্পব্দের উত্তর অন • इ.स. यथा, खरसि प्रत्यूरसम्।

### २७ । श्रुगवमायामे ।

रेप्तर्घा तुकारेल, खनुगवस्, এर পদ निপাতনে निक्व रह। यथा, गोः पञ्चात् चतुगवम् ।

### তৎপুরুষ সমাস।

### ५। तत्प्रचयः।

এই প্রকরণে দে সমাস বিহিত হইতেছে, তাহার নাম তৎপুরুষ।

## २। परिवार्क्संतत्पुरुषे।

তৎপুরুষ मমাদ হইলে, দমন্ত ভাগ পর পদের লিক প্রাপ্ত হয়।

#### ा राताङ्गाहाः पुमांसः।

তৎপুত্তর সমাস হইলে, সমস্ত ভাগের অন্তস্থিত রাত্র, অহু, ও অহ, পু৲লিক্স হয়।

# 8। रातं नपुंसकं संख्यापूर्व्वम्।

সংখ্যাবাচক শব্দ পূর্ব্বে থাকিলে, রাত্র নপুৎসক হয়।

#### ৫। पुरवाद्यः।

পুণ্যশব্দের পরবর্ত্তী অহ নপুৎসক হয়।

### ७। द्वितीया त्रितादिभि:।

िंड প्रकृष्ठि मूर्ख श्राप्त महिल दिली बांख श्राप्त मयाम रह। यथी, कर्ष खितः करिश्वतः, दुःखमतीतः दुःखातीतः, कूपं प्रतितः कूपप्रतितः, ख्रहं गतः व्यह्नगतः, त्विह्नमत्यक्तः त्विह्नात्यक्तः, ख्रखं प्राप्तः ख्रुष्टमायः, ख्रुष्टमायः, ख्रुष्टमायः, यामं गामी याम-गामी, खर्वं बुभुकुः खर्वाबुभुकुः, बेदं विद्वान् वेदविद्वान्।

## १। खट्टा क्रेन कुत्यायाम्।

নিন্দা বুঝাইলে, কপ্রতারনিষ্পন্ন সুবস্ত পেদের সহিত বিতীরান্ত শুটাশন্দের সমাস হয়। যথা, অদ্বাদ্ আছের: অদ্বাছর;, ভর্মখ-দক্ষির স্বাহ্ন। নিতা সমাস।

### । काला चत्यन्तसंयोगे।

ष्ठाष्ठ म्राप्तां तूथाहित, मृतस्व शानत् महिन्न विन्नोत्त कानताहरू मृतस्व शानत् म्यांम रहा। यथा, सङ्कतं स्वस् सङ्कतंस्यस्, मासं गम्यः मासगम्यः, वर्षं भोग्यः वर्षभोग्यः ; सङ्कतं मासं वर्षे व्याप्य इत्यर्थः।

## ১। तृतीया पूर्व्वादिभि:।

शृद्ध প্রভৃতি সুবন্ত পদের সহিত তৃতীয়ান্ত পদের সমাস হয়। যথা, मासेन पूर्व्यः मासपूर्व्यः, वर्षेण व्यवरः वर्षोदरः, वाचा कल्हः वाक्कल्हः, गुड़ेन निव्यः गुड़िसित्यः, व्याचारेण ख्लुक्णः व्याचार-ख्लुक्णः, धनेन व्ययः धनार्थः, मात्रा सहणी मात्रसहणी, पिता समः पित्रस्यमः।

### ১०। जनार्थेय।

উनार्थ जूरख পानत मिश्ठ ज्जीवास शानत मगान हर: यथा, एकेन जनः एकोनः, विद्यया चीनः विद्याचीनः, श्रमेण रहितः समरहितः, गर्वेण श्रूत्यः गर्वश्रुत्यः, सङ्गेन विकतः सङ्गविकतः।

## **५) अता कर्नुकरणयोः।**

कृष्या अविकास मूर्य प्राप्त महिल, कही ह ए करा विहिल कुली शिविकास प्राप्त माने हहा। यथी, कही ह — व्याप्ति स्वाप्त हतः व्याप्त्र स्वाप्त हतः व्याप्त हतः, व्याप्ति हतः व्याप्त हतः, व्याप्ति हतः व्याप्त हतः, पाणि निना प्रणीतं पाणि निप्तणीतस्, नारहेन प्रीक्तं कर्वां क्ष्यां क्ष्यां

## ১২। चतुर्थी बलि दित सुखै:।

मृत्य तिन, रिज, ও সুখ শব্दित मरिज চতুর্থান্ত পদের সমাস হয়। যথা, भूताय बिंड: भूतबिंड:, प्रस्नाय हितम् प्रस्नहितम्, खाले स्वयम् खाल्सख्स् ।

#### ১৩। सर्थेन च।

অর্থণদের সহিত চতুর্থান্ত পদের সমাস হয়। সমস্ত ভাগ বিশেষোর লিঙ্গ প্রাপ্ত হয়। হথা, दिलार्घः स्तपः, दिलार्घा यवागुः, दिलार्घं पदः। নিতা সমাস।

## **38 । विकृति: प्रकृत्या ताद्या ।**

তাদর্থ্য বুঝাইলে, প্রকৃতিস্থলীয় সুবন্ত পদের সহিত বিকৃতিস্থলীয় চতুর্থ্যন্ত পদের সমাস হয়। যথা, ক্রব্তেকার স্থিতের ক্রব্তেকার বিশ্বর্থ কর্তিকার বিশ্বর্থ কর্তিকার বিশ্বর্থ কর্তিকার বিশ্বর্থ বিশ্বরথ বি

#### ५८। पञ्चमी भवादिभिः।

, छत প্রভৃতি সুবন্ত পদের সহিত পঞ্চয়ন্ত পদের সমাস হর। यथी,
व्याचात् भयम् व्याचमयम्, व्याचात् भीतः व्याचमीतः, व्याचात्
भीः व्याचमीः, व्याचात् भीतिः व्याचमीतः, व्याचात्
कर्मातः, व्याचात् भीतिः व्याचमीतिः, व्याच्यात् वर्मतः
व्याचितः, व्याचात् चतः व्याचनक्तः, र्यात् पतितः र्यपतितः,
तर्द्वात् व्यावक्तः तर्द्वापत्वः, विदेशात् वागतः विदेशागतः।

# ১७ । षष्ठी समर्थेन ।

ममर्थ मृद् अपात मिरु वकास अपात ममाम रहा। यथी, मङ्गायाः जनम् मङ्गाजनम्, तरोः जावा तक्ष्याया, खन्नेः मिखा खन्नि-मिखा, वायोः नेगः वायुनेगः, जनस्य प्रवाहः जनप्रवाहः, सुख्ख भोगः सुखर्भीगः, प्रयसः पानं प्रयःपानम्, कन्यायाः दानं कन्या-दानम्, गवां दोहः गोदोहः, खाद्यायाः भङ्गः खाद्याभङ्गः, दशावाः खनः दशानः, स्वर्थंख उदयः स्वर्थोदयः, हष्टेः पातः हष्टिपातः, शिरसः क्षेदः शिर्येश्क्कदेः, गवां वधः गोवधः, पितः व्यहं पितः व्यहस्, रात्तः भवनं राजभवनस्, सनोः वचनं सत्तवचनस्, अर्थेख नाशः खर्थनाशः, कूपस्य उदनं कूपोदकस्।

### ५१। न निर्द्वीरणे।

নির্দ্ধারণ অর্থে বিহিত ষষ্ঠীর সমাস হয় না। যথা, **সন্তহ্মান্তা** অবলিয়া সুহে, গৰা জন্তা ৰক্কবীয়ো।

## ১৮। न पूरणार्थै:।

পূরণার্থ পদের সহিত ষষ্ঠান্ত পদের সমাস হয় না। যথা, राज्ञां प्रचमः, प्रच्नयोः द्वितीयः, श्वातृषां हतीयः, शिष्याणां चतुर्घः, काच्याणां पञ्चमः।

### ১৯। न गुणवाचिभि:।

धनवां कर शास्त्र महिल यका स्थान मन्नाम हत्र ना। यथा, पटस् मौक्षाम्, कोकनदस्य नौहित्यम्, खाका ग्रस्य नीतिमा, द्राचायाः माधुर्यम्। कोत्र कांत्र दल हत्र। यथा, खर्यस्य गौरवम् धर्य-गौरवम्, बुद्धेः मान्यम् बहिमान्यम्, खर्यस्य कार्यम् खर्यकार्यम्।

### २०। न सप्तर्यः।

তৃপ্তার্থ পদের সহিত ষষ্ঠান্ত পদের সমাস হর না। যথা, আর্ঘা হয়ে:, फলানা লুল্লিন:, আর্হ্ম আংমিন:।

## • २১। न तजनायां याजनादिवर्ज्जम्।

पृष्ठ अक श्रेष्ठारात योग निक्नित गत्कत महित वर्षात श्रिक्त भाग हा ना। यथी, हन्तानाः स्ट्रा, सुख्य दाताः दुःख्य हत्तीः अन-प्रनानां पालकः, दनायां केदकः, ग्राह्म्यां चातकः। योककंतित हा। यथी, सूद्यानकः, देवपूनकः, राज-

परिचारकः, वेदाध्यापकः, सर्वोद्धान्तकः, देवस्तातकः, जल-परिषेचकः, भुवनभक्ताः, न्वविन्हीता, सुरायन्तीता, सुरायान्तकः।

### २२। सप्तमी गौएडाहिभि:।

(गो७ প्रज्ञि (००) गत्मत महिज मध्यास श्रामत मयांग इत। यथा, दाने गोराङः दानगीराङः, ग्रास्ते प्रवीयाः ग्रास्त्रप्रवीयः, रखे परिष्ठतः रखपरिष्ठतः, क्रीड़ायां क्रग्राङः क्रीड़ाक्याः, कर्मान पर्याः कर्मानिपुषः, ज्ञातमे ग्राष्टः खातपश्च कः। स्थाल्यां पकः स्थालीपकः।

## २०। कत्येक्षे

থণ বুঝাইলে, কৃত্যপ্রতারনিষ্পন্ন শদের সহিত সপ্রমান্ত পদের সমাস হয়। যথা, নান্ত देयं नासदेयम् ऋणम्, वर्षे परिशोध्यं वर्षपरिशोध्यम् ऋणम्।

### **२८। क्रोनाहोरात्रावयवा:।**

क्रिश्रामिक्शित्र गरम्त मश्जि निम अ तांजित व्यवस्तराधक मश्रमाख शरम्त ममाम स्त्र। स्था, पूर्व्वाच्च कर्त पूर्व्वाच्च करम्, चपराच्चे करम् चपराच्चकरम्, पूर्व्वरात्ने कर्त पूर्व्वरात्नकरम्, चपररात्ने करम् चपररात्नकरम्।

#### २८। कुत्सायां काकवाचिना।

নিন্দা বুঝাইলে, কাকবাচক সুবস্ত শদের সহিত সপ্তমান্ত পদের সমাস হয়। যথা, तीर्चे काक दूव तीर्घकाकः, तीर्घवायसः, तीर्घध्याद्धः, अनवस्थित दत्त्वर्षः।

## २७। पूर्व्वाहिरेकदेशिनेकवचने।

<sup>(</sup>৫०) श्रीयक, घूर्त, कितव, प्रवीख, संवीत, पह, पिक्कत, क्रायब, चपक, नियुख, सिंह, ग्रुष्क, पक्ष देशांति।

একবচনান্ত অবয়বীর সহিত পূর্বে, অপর, অধর, উত্তর, ইহাদের
সমাস হয়। য়থা, मूर्व्य कायस्य पूर्व्यकायः, অपरकायः, अधरकायः, उत्तरकायः। একবচন না হইলে হয় না। য়থা, पूर्व्य
काच्याणाम् आमन्त्रयस्त।

# २१। चड्डं नपुंसकम्।

একবচনান্ত অব্যবীর সহিত ক্লীবলিক অর্দ্ধ শব্দের সমাস হয়।
যথা, অত্ত্ব বিদ্দল্যা: অর্দ্ধিদ্দলী। অন্য লিকে হয় না।
যথা, আর্দ্ধ অর্দ্ধি। একবচন না হইলে হয় না। যথা, অর্দ্ধিদ্দলীনার্দ্ধ।

#### **२৮। काला: परिमाणिना।**

পরিচ্ছেদ্রাচক পদের সহিত কালবাচক পদের সমাস হর। যথা, सासी जातस्य मासजातः, वर्षो स्टतस्य वर्षस्तः।

## २ । एक देशवाचिना च।

একদেশবাচক পদের সহিত কালবাচক পদের সমাস হয়।

### ७०। सङ्गोऽङ्ग एकदेशात्।

এक मिन्यां कि अपनित अत्वर्धी अश्न्यक्षां स्व क्षा । यथा, पूर्वम् अक्षः पूर्वाह्वः, मध्यम् अहः मध्याहः, अपरम् अहः अपराक्षः, सायम् अक्षः सायाह्यः।

### ७५। राह्रेरन्।

একদেশবাচক শব্দের প্রবর্গী রাত্রিশব্দের উত্তর অন্ হয়, ন ইৎ, অ থাকে। যথা, पूर्व्वी टालेः पूर्व्वाटालः, नध्यं टालेः नध्य-टालः, অपरं टालेः अपर्रालः।

## ७२। विभाषा दितीय त्रतीय चतुर्ध तुर्व्याणि।

वकास अवस्वीत महिल बिलीन, जुलीत, ठलर्थ, लुक्या, देशांतत विकल्ल मयाम रत। यथा, दितीयं मिचायाः दितीयमिचा, हतीयं भिचायाः हतीयभिचा, चत्रयं भिचायाः चत्रयंभिचा, तुर्थं भिकायाः तुर्थंभिचा। পरक विशेमगोत्र। यथी, भिचायाः दितीयम् भिचादितीयमः भिचाहतीयमः भिचाचतुर्थम्। भिनात्र्यमः

## ७७। यसं चतुर्था पुंबच्च।

চতুর্থান্ত পদের দহিত, অল্লন্, এই অবায়ের দমাদ ও চতুর্থান্ত ब्रीलिक পদের পুংবদ্যাব হয়। यथा, अनं जीविकाये अनञ्-जीविकः।

## ७८। अत्यादयः कान्तादौ दितीयया।

ক্লান্ত প্রভৃতি অর্থে, বিতীয়ান্ত পদের মহিত অতি প্রভৃতির সমাস ও জ্রীলিজ বিতীয়ান্ত পদের পুংবছার হয়। যথা, আং तिक्रानः खटुाम् अतिखटुः, उन्क्रान्तो वेताम् उद्देतः।

## ७৫। अवादय: कुष्टादौ हतीयया।

কুষ্ট প্রভৃতি অর্থে, তৃতীয়ান্ত পদের দহিত অব প্রভৃতির দমাদ ও जी नित्र जुडी बांख अपन्त श्रूर दर्धात इत। यथा, अवक्रुष्टः को कि-लया खबकोकिलः।

## ७७। पर्यादयो खानादौ चतुर्या।

প্লান প্রভৃতি অর্থে, চতুর্থান্ত পদের गश्তি পরি প্রভৃতির সমাস ও জ্রীলিক চর্তুর্যান্ত পদের পুংবদ্ধাব হয়। যথা, परिग्तानः অध्यय-नाय पर्कश्यवनः, परिग्लानः सेवायै परिसेवः।

### ७१। निरादयः कान्तादौ पञ्चस्या। ক্রান্ত প্রভৃতি অর্থে, পঞ্চমান্ত পদের সহিত নিরু প্রভৃতির সমাস

ও জ্রীলিক পঞ্চায় পদের পুংবদ্ধাব হয়। বথা, বিদ্রুলন: কীমান্দ্রা: বিজ্ঞানিক:, ভ জিনৌ বিহ্যায়: ভলিহু:।

## ७৮। सामिखयमौ तेन।

क्ष প্রতায়নিক্সান্ন সুবস্ত পদের সহিত সামি ও স্বর্য, এই দুই অব্য-রের সমাস হয়। বংগ, सामिकतम्, स्टुनिघटितम्; खयङ्कतम्, खयन्द्रत्तम्।

### ७५। नञ् सुपा।

मृत्युः श्राप्तत् मिश्ड नर्धात् मयाम रहा वर्धा, न बाह्यायाः स्वतः -ह्यायाः, न मोघः स्रमोघः, न प्रियः स्वितः, न विक्ततः स्विक्ततः, न सिद्धः स्वसिद्धः, न सुखस् स्रंतुखस् न दर्शनस्, स्वदर्शनस्, न स्पनस्थः स्वतुपत्तस्थः।

### ८०। दूषद्कता।

কুদন্ত ভিন্ন সুবন্ত পদের সহিত ঈষৎ এই অব্যয়ের সমাস হয়। বথা, ইমনোভাহা, ইমনিজুলা, ইমন্তিনবা, ইম্লুলালিনা।

# 8)। चाङीषदर्थे।

क्रेयमर्थ तूथाहरल, मृतस्त श्रामत् महिन चाड् बहे चरारहत् मधाम इह । वथी, चामधुरः, चापिक्वचः, चापाग्ड्रः, चालोहितः।

### 8र्। स्तरी पूजायाम्।

প্রশংসা অর্থ বুঝ।ইলে, সুবন্ত পদের সহিত সু, অতি, এই দুই অব্যারের সমাস হয়। যথা, सुपृष्णः, सुनास्त्राणः; অনিচ্ছ;, বীনিব্যান্তঃ।

# 80 । दुनिन्दायाम्।

निन्ना अर्थ तूथारेल, मृत्स शामत महिल मृत् धरे खुराहात मयाम रत । यथा, दुष्मुलम्, दुर्नीतिः, दुखरितम्, दुष्मुरुषः।

## 88 । कु: पापार्थे

কুৎসিত অর্থ বুঝাইলে, সুবস্ত পদের সহিত কুণএই অব্যাদের স্থাস হয়। যথা, ক্লনাস্ক্রায়াং, ক্লযুদ্ধাং, ক্লয়াজায়েং।

## **१८। धातुभिष्पपदानि**।

थोजूद मिर्छ উপপদের (६১) मर्याम व्यः। यथा, क्रुम्धकारः, प्रभाकरः, नियाकरः, व्हितकरः, प्रीतिकरः, व्ययसरः, जनचरः, पार्श्वचरः, शिनाययः, सरस्जिम्, पङ्कजम्, व्यव्हजः, जनजः।

### ८७। उपसगीय।

थांजुद महिल जेशभार्यद मयाम इयः। यथा, सम्-संस्करोति, संस्कारः, संस्कृत्यः वि-विजयते, विजयः, विजित्यः; स्विभ-स्वभिविञ्जति, स्वभिषेकः, स्वभिविच्यः; स्वा-स्वाःभते. स्वारस्थः, स्वारस्यः।

## 81। जर्यादि चि डाचय।

ধাতুর সহিত, জহী (৫২) প্রভৃতি শব্দের, এবং চি ও ডাচ্ প্রভায়ের, সমাস হয়। যথা, জহী-জহীকহীনি, জফী-কংআবৃ, ভংগীক্রমঃ আবিধ্-আবিক্ষাহীনি, আবিজিমুলা, আবিক্ষামাঃ, দাত্তম্পাত্তমূৰনি, দাত্তমাবঃ, দাত্তমূল। চি—

- (৫১) যে দকল সুবন্ত পদ প্রভৃতির পরবন্তী ধাতুর উত্তর কৃৎপ্রত্যন্ত বিহিত ছয়, উহাদিগকে উপপৃদ বলে। ক্লন্মনাহ:, এ দলে, ক্লন্মন্, এই উপপদের সহিত ল ধাতুর সমাস হইয়া, ক্লন্মন এইরূপ হইলে, স্বায়্ হয়। এইরূপ সর্বাত্ত।
- (१२) ऊरी, उररी, खाविस्, प्राटुस् स्वधा, साहा, वबट्, बौबद् इस्वादि।

खीकरोति, खीकारः, खोकत्यः; भस्तीभवति, भस्तीभावः, भस्तीभूयः, जिल्लाह्मयाकरोति, समयाकरणम्, समयाकत्यः; दुःखाकरोति, दुःखाकत्यः।

### 8b । **अनुकरणञ्चानितिपरम्**।

थांजूर मश्डि जानुकर्वनगत्मर भगम एत । यथी, खात्करोति, खात्करणम्, खात्कृत्य; द्राङ्करोति, द्राङ्क्तिया, द्राङ्क्तय। इंजिनक পर्तर थांकित्न रत्न स्था, खादिति कता निषीवति, द्रामिति कता पत्ति।

### 8 । चादरानादरयो: सदसती।

यथोक्करम, आंतर ७ अनोनर अर्थ, थांजूर महिल सत् ७ असत् भर्म र मान रहा। यथी, सत्करोति, सत्कारः, सत्काय ; ससत्-करोति, सासत्कारः, सत्काय ; ससत्-करोति, सासत्काय ।

### ৫०। चलम् भूषखे।

ভূষণ অর্থ বুঝাইলে, ধাতুর সহিত অ্বরন্ শদের সমাস হয়। যথা, অবস্থানি, অবস্থান, অবস্থান,

### ७)। धनारपरिग्रहे।

थांजूत महिल सम्भार् गास्त्र मयाम हत। यथा, स्नामंवति, स्नामं भीवः, स्नामं वा श्रित्र र्या हता। यथा, स्नामंत्रा गतः, इतं परिक्ञा गत इत्योधः।

## ° ७२ । पुरोज्ययम् ।

थांजूत महिल पुरञ्ज् और खतात गर्कत ममाम रहा। वर्षा, पुरस् करोति, पुरस्कारः, पुरस्कता।

#### ৫७। बसम् व।

धांजूद मध्ि खसास् এই व्यदाह मध्यित स्थान दह। दथी, खसाकुच्छति, खसाकुतः, खसाकुत्य।

## ৫৪। पक् च बदगत्वर्धः।

वनधाज् ७ भजार्थ धाजूद महिज सक्त এই অবার শদের সমাস इत्र। यथा, स्वक्तवद्ति, सक्तीद्य; सक्तमक्ति, सक्तमत्व; स्वित्तविक्तस्यः।

## **((() अन्तर्श्वीतिर:**।

ব্যবধান বুঝাইলে, ধাতুর দহিত নিমন্থ এই অব্যর শব্দের দ্যাস হয়। যথা, নিমাননির, নিমানার:, নিমানুর।

#### **(७। विभाषा क्रजा।**

कृक्षां जूद महिल विकल्ला। यथा, तिरक्कता, तिरः कता।

### **७१। साचात्रस्तीन च।**

কৃধাতুর সথিত साचास् (৫৩) প্রভৃতি শব্দের বিকশ্পে সমাস হর। যথা, साचात्कत्य, साचात् कताः, नमस्कत्य, नमः कताः, वशेकत्य, वशेकताः, मिथ्याकत्य, मिथ्याकता।

## (४। अनुपश्चेष उर्सि मनसी।

कृथांजूद महिल चरित, मनित, এই দুই मश्रमास পদের বিকশ্পে भगम হয়। यथा, चरित्रक्षता, चरित कता, खोकस्तिव्यः। सनित्रक्षता, मनित कता, निश्चित्रक्षयः। উপশ্লেষ অর্থে হয় না। यथा, चरित्र यित्रता।

### **৫৯। अध्ये पदे निवचने च**।

(१०) 'साचात्, मिच्या, नमस्, प्राहुस्, खर्चे, वर्थे, खना, क्या, ख्याम्, श्रीतम्, कार्ट्स्, विक्सने, प्रहसने रेठाामि ।

कृधाजूत गरिज मध्ये, परे, निवचने, এই जिन नश्चमास शामत विकल्ण नमान रहा। रथी, मध्येकत्य, मध्ये कता; परेकत्य, परे कता; निवचनेकत्य, निवचने कता। উপশ্লেষ অর্থে रहनी। यथी, मध्ये ग्रायिता, परे छता।

### ७०। नित्यं इस्ते पाणावुपयनने ।

विवार অর্থ বুঝাইলে, কৃধাতুর সহিত हस्ते, पाया, এই দুই সপ্ত-মান্ত পাদের নিত্য সমাস হয়। যথা, हस्तेतला, पाया तला, टार-कर्मा कलेलार्थः।

৬১। तत्प्रवृष्ठः समानाधिकरणपदः कम्प्रधारयः।

यে তংপুক্ষ সমাদে সমস্যমান পদ সকল সমানাধিকরণ, অর্থাৎ

বিশেষ্যবিশেষণভাবাপন্ন, অথবা অভেদ সমৃদ্ধে একার্থপ্রতিপাদক,
হর, উহাকে ক্রম্মাঘাত্য বলে।

#### ७२ । विश्वेषणां विश्वेष्येणा।

# ७०। पुंवत् पूर्वे भाषितपुंस्कं कमीघारये।

कर्मधात् स्र मान रहेल, स्राविष्ठ भू रह (८८) क्रोनिक भू र्ख भागत भू रहिता सन्दर्ग हिता सन्दरमहिता, क्षणा चस्र देशी क्षणा चस्र देशी क्षणा चस्र देशी क्षणा चस्र प्रमान कर्मी पाचकस्त्री, पञ्चमी कन्या पश्चमकन्या, स्रोकेशी भार्या सक्षणाम्यों, बास्त्रायी भार्या बास्त्रायामार्थी। स्थि श्रुशांस्त्र इस्त्र मा स्थी, वाकोक्स भार्या वामोक्स भार्या।

## ७८। क्रीन नञ्बिश्टिनानञ्।

नक्ति कि कि अज्ञासंस् अति महिक नक्ष्मा कि अज्ञासंस् अति मान मान हता यथा, कतस्य तत् स्वतास कताकतम्, मृतस्य तत् स्थानस्य भृताभृताम्, पीतस्य तत् स्वपीतस्य पीतापीतम्, किष्टस्य तत् स्वकिष्टस्य किष्टाकिष्टम्, पक्षस्य तत् स्वपक्षस्य पका-पक्षम्। म्यान अकृष्ठि स्टलहे हत्, विद्वस्य स्थानस्य, अकृष्ट स्वान्स्य म्यान हरेत्वरु न।

## ७৫। वर्णी वर्णेन।

वर्गवांठक श्राप्त महिल दर्गवांठक श्राप्त मयाम हर। घथा, नी बख स सोव्हितच नी बबोव्हितः, बोव्हितख स शबबश्च बोव्हितश्ववः, प्रोतस स भववस प्रीतभववः।

## ७७। पूर्वित्तरकालयोः तः।

পূর্বকাল ও উত্তরকাল বুঝাইলে, ক্রপ্রতায়ান্ত পদের সমাস হয়। যথা, पूर्वे खातः पञ्चादत्त्विप्तः खातात्त्विप्तः, यातायातः, ম্যোনীজিনः, दत्तापञ्चतम्, भृतोद्गीर्णम्।

<sup>(</sup>৫৪) যে সকল শব্দ ব্রীলিক্ষ পুৎ লিক্স উভয়ই হয়, তাহাদিগকে ভাষিতপুৎ হ্ব বলে; যেমন, সুন্দরশদ ব্রীলিক্স পুঁৎ লিক্স উভয় হয়। যে সকল শব্দ নিতাব্রীলিক্স, উহাদিগকে ভাষিতপুৎ হ্ব বলা যায় না। যেমন আ, লক্ষ্মী প্রভৃতি।

### ७१। उपमानानि साधकीयवचनै:।

উপমান ও উপমেরের সমানধর্মবোধক পদের সহিত উপমান-বাচক পদের সমাস হয়। যথা, घन इत ख्यामः घनध्यामः, खर्याद इत गमीरः खर्णवगभीरः, शैन इत उद्यानः शैनोद्धतः, खनन इत उज्यनः खननोज्यनः, नवनीतिमिव कोमसं नवनीतकोमनस्।

७৮। उपमेयानि व्याघ्रादिभिः साधसाप्राप्रयोगे।
व्याघ्र প্রভৃতি (६६) উপমানবাচক পদের সহিত উপমের পদের
সমাস হর। বথা, पुरुषो व्याघ्र दव पुरुषव्याघः पुरुषः सिंह
दव पुरुषसिंहः, राजा चन्द्र दव राजचन्द्रः, सुखं तमस्त्रम् दव
स्वत्रमस्त्रम्, करः तिसस्यमिन करितस्यथम्, अधरः पञ्चव दव
व्यथरपञ्चवः, वट्नं सुधाकर दव वट्नस्याकरः। উপমান
ও উপমেরের সামান্য ধর্মের প্ররোগ থাকিলে হর না। যথা,
पुरुषो व्याघ्य दव सूरः, सुखं समस्यमिन सुन्दरम्।

৯৯। স্বিয়োহ্য: জ্বাহিনিষ্মূববল্পার । অভূতভদ্ধার অর্থ বুঝাইলে, জ্ব প্রভৃতি (৫৬) শব্দের সহিত ক্রীয়া প্রভৃতি (৫৭) শব্দের সমাস হয়। যথা, অস্থায়ার স্বীয়ার:

<sup>(</sup>ee) व्याघ्न, सिंह, ऋच, ऋषभ, दृष्क, दृष, वराह, कुझर, चन्द्र, कमन, किसनय इन्यादि।

<sup>(</sup>१६) कत, मित, मत, भूत, उक्त, युक्त, समाज्ञात, समा-स्नात, समाख्यात, सम्भावित, संसेवित, व्यवधारित, व्यवकित्यत, निराक्तत, उपक्रत, उपाक्षत, इष्ट, फवित, टवित, उदास्त्र, विश्वत, उदित।

<sup>(</sup>६९) श्रीच, पूग, सकुन्द, राशि, निचयः विशेष, विभान, पर, इन्द्र, देव, सक्छ, भूत, प्रवस्, वदान्य, अध्यापक, श्रीध-

कताः चेषिकताः, खपूनाः पूनाः कताः पूनकताः, खरामयः रामयः कताः रामिकताः, अचेणयः चेणयो भूताः चेणिभूताः, खनिष्ठणा निष्ठणा भूताः निष्ठणभूताः, खन्नम्लाः क्रमला भूताः क्रमलभूताः (८৮)।

## १०। संख्यापूर्व्यो हिंगु:।

বে কর্মধাররে পূর্ব্বপদস্থলে সংখ্যাবাচক শব্দ থাকে, উহাকে দ্বিন্য বলে।

## १)। तिवतार्थीत्तरपद समाहारेषु।

ভদ্ধিভার্থে, উত্তরপদ পরে, ও সমাহার বুঝাইলে, দ্বিন্তু সমাস হয়।

যথা, ভদ্ধিভার্থে—पञ्चभिनौभिः क्षीतः पञ्चरः; উত্তরপদ পরে—

पञ्च স্থলাः प्रमाणमस्य पञ्चस्तामाणः। প্রমাণশদ উত্তর পদ
পরে, पञ्च ও স্থলাः, এই দুই পদের দ্বিপ্ত সমাস হইল।

## १२। चदन्तादीप् समाहारे।

नमाहात दिश्व हरेल, व्यकातांख मास्तत उठत हूंप् हत। यथा, त्रवाणां जोवानां समाहारः त्रिजोकी, चत्रणां पदानां समा-हारः चत्रव्यदी, पञ्जानां नजानां समाहारः पञ्चनजी, सप्तानां स्तानां समाहारः सप्तस्ती।

## १७। न भुवनादेः।

भुवन প্রভৃতির উত্তর ईप् इत ना। यथी, स्रवाणां भुवनानां समा-

रूपक, बास्त्रांण, चित्रिय, विशिष्ट, पटु, पिएडत, कुग्रस, चपस, निष्ठण, क्रमण।

(६४) विश्विष्ठात्र रहेत्त उत्तिरक्षत कार्या मधूमत्र हत्। वथा, नेबीकतः, पूर्णीकतः, रामीकतः, नेब्बीमूतः, निपुचीनूतः, रामीभूतः, क्रमबीभूतः दत्यादि। ह्राटः विभुवनस्, चतुर्णा युगानां समाहारः चतुर्युगम्, पञ्चानां पात्रार्णां समाहारः पञ्चपातम् ।

## १८। मयूरव्यंसकादयः।

मयूरव्यंसक প্রসৃতি निश्नां करति हत। यथा, मयूरो व्यंसकः मयूरव्यंसकः, उदक् च अवाक् च उच्चावचम्, नास्ति किञ्चन यस्य व्यक्तिञ्चनः, नास्ति कृतोऽपि मयं यस्य चक्रतोभयः, क्रान्योऽष्यः स्वर्षान्तरम्, अन्यो देशः देशान्तरम्।

#### १८। आखातमाखातेन कियासातत्वे।

मिंड किशांत अनुष्ठीन तूता है ति, आधांड পদের मिंड आधां-তের मगोम हत्र। পদ নিপতিনে मिक्क। धथी, खन्नीत पिनत दुलेन सततमभिधीयते यखां कियायां सा खन्नीतपिनता, पचत-भुझता, खादतमोदता, खादताचमता।

### १७। सर्वे पुरव संखाव्ययेभ्यो रातेरन्।

मर्ख, भूगा, मर्थातिक, उ खराव मस्त्र भरवहीं तीविमस्तर उत्तर खन् रव। यथा सर्वा रातिः सर्वरातः, प्रखा रातिः प्रखरातः, दिरातम्, तिरातम्, पश्चरातम्, दशरातम्, खित-रातः।

### .११। यङ्गोऽङ्गव।

मर्ख, श्रृण, मर्थातावक, ७ खरात्वत्र श्रृत्वी खहन् गास्त्र छेतत् खन् ७ खरन्यात् खह्न् रत्र । वर्षा, सर्वमहः सर्वाह्नः, ह्योरह्नोः भवः हर्रह्मः, पञ्चस्र खहःस भवः पञ्चाह्नः ।

### १४। न संख्यायाः समाचारे।

সমাহার হইলে, সংখ্যাবাচকের পরবর্তী স্বস্তন স্থান স্বাদ্ধ হয় না। যথা, দ্বথাস্থান স্বদাস্থানে প্রস্তান ক্যান্তঃ।

#### ं१ २ । न पुरुषेकाभ्याम् ।

পুণ্য ও এক শদের পরবর্তী অস্তব্যু স্থানে আলু হয় না। যথা, মুজ্ঞান্তম্, एकान्छः।

#### ৮०। संखाययाभ्यामङ्गते:।

म॰ थाचि ठिक ७ व्यात गर्मत भवतती बङ्गुनि गर्मत छेतत बन् इत। यथा, हे बङ्गुनी प्रमाणमञ्ज हमङ्गुनम्, त्यङ्गुनम्, निर-ङ्गुनम्।

#### **४) । राजाइ:सविभ्यष्ट:।**

राजन्, चहन्, उ सिख गिय्मत छेवत हे इह, हे हैं रे, य थीकि। यथी, चङ्गानां राजा चङ्गराजः, महान् राजा महाराजः, परममहः परमाहः, उत्तममहः उत्तमाहः; राज्ञः सखा राज-सखः, प्रियः सखा प्रियसखः।

#### ৮२। गोरतिद्वतार्थे।

गो नात्कत छेडत ट रहा। यथी, राज्ञो गौः राजगवः, परमो गौः परमगवः, दश गावो धनमस्य दशगवधनः, पञ्चानां गवां समा-हारः पञ्चगवस्। छिक्किडोटर्थ रहाना। यथी, पञ्चभिगौभिः क्रीतः पञ्चगुः।

#### **५०। मुखार्यादुरस:**।

सुद्ध এই অর্থের বাচক ভর্ন শব্দের উত্তর ट হয়। যথা, স্বস্থা-নাম্ ভর: ९व সংস্থাইম্মন্, सुद्धोऽস্ব হুন্দ্র ।

#### ৮८। अनोऽस्मायः सरसां जाति संस्रयोः।

कां ि ও म॰ जः। तृथां रेल, चनम्, चाइसन्, चयम्, ७ सरम् मस्म् व উত্তর ट रयः। यथा, कां जि—उपानसम्, चम्दताइसः, कालायसम्, मण्डूनसरसम् ; म॰ जा-महानसम्, पिय्छाय्सः, बोहितायसम्, जनसरसम्।

#### ৮৫। ग्राम कौटाभ्यां तच्याः।

पाम ७ कौट मास्त्र প्रवर्शी तचान् मास्त्र छेछत् ट इत् । यथा, पामतचाः, साधारण इत्यवः; कौटतचाः, खतन्त्र इत्यवैः। अन्यज्ञ, राजतचा।

#### ৮७। सते: शुनः।

অতি শব্বে প্রবর্তী স্থান শব্দের উত্তর ত হয়। যথা, অবি-ক্যাল: স্থানন্ অবিস্থা বিষয়ে, অবিস্থা বিষয়।

#### ५१। उपमानादप्राणिषु।

উপমানবাচক স্বৰু শৰের উত্তর ट হয়। যথা, আলের্চ: श्वेष আলের্চসুঃ।প্রাণী বুঝাইলে হয়না।যথা,বাৰহ: श्वेष पानरऋषा।

#### ৮৮। उत्तर छग पूर्वीपमानेभ्यः सक्यः।

উত্তর, মৃগ, পূর্ব্ব, ও উপমানবাচকের পরবর্ত্তী **सक्तिया শব্দের উত্তর** ट হর। যথা, ভক্ষমে **কমেন্, ভ্যমনম্যন্, দুর্জ্ন ক্যন্**; 'উপ-যান— দাৰক দিব স্ববিধ্য দাৰক মক্ষম।

#### ৮৯। नावो द्विगोरतद्वितार्थे।

हिश्चनमां मिक्क नो गर्मा उत्तर ठ इत । यथी ह्योनी नोः समा-हारः दिनावम्, मञ्जूनानो धनमस्य पञ्चनावधनः। उद्गिर्छा द इत्र मा। यथी, प्रश्चमिनौभिः क्रीतः पञ्चनौः। दिशे लिह्न ऋत्ल, राज्ञो नौः राजनौः, नवीना नौः नवीननौः।

#### २०। यहींच।

আर्क्सगल्बत शत्तवहीं नी गल्बत উठत ट इत्र। यथा, खर्ड नावः खर्जनावस्। शत्तिक स्टेल ना।

#### ৯১। खार्ची विभाषा।

ष्टि मयाम रहेल, अथवा अर्द्ध मक शृद्धं थांकिल, खारी मास्त्र উत्तर विकल्प ट रहा। यथा, दे खार्खी प्रमाणमस्य दिखारम्, दिखारि; अर्द्धे खार्खाः चर्डखारम्, अर्डखारी।

#### ৯২। हि तिभ्यामञ्जले:।

बिष्ठ मयाम श्हेल, दि ९ लि শব্দের প্রবর্তী স্মন্ত্রালি শব্দের উত্তর বিকম্পে ट হয়। যথা दे অञ্जवी प्रमाणमस्य द्वाञ्चवम्, द्वाञ्चवि ; लाञ्जवम् लाञ्जवि। অনাত্র, द्वोरञ्जविः दाञ्जविः।

#### ৯৩। जनपदाद्वस्यायः।

अनशमरोठक गर्फात श्रत्वहीं बच्चान् गर्फात् উত্त ट ह्य । वर्धाः, स्वराष्ट्रस्य बच्चाः स्वराष्ट्रबच्चाः, खवन्तिबच्चाः, कविष्कृबच्चाः। खनाज, देवबच्चाः नारदः।

# ৯৪। विभाषा कु महद्भ्राम्।

कु अ सहत् गास्त्र शर्वा हहेल विकाल्य। घणा, कुत्वितो बच्चा कुबच्चाः, कुबच्चाः, सहाबच्चाः, सहाबच्चाः।

# ৯৫। अन्त्योऽचन्तुषि।

অবি শদের উত্তর চহয়। যথা गनामचीन गनाचः। চকু বুঝাইলে হয়ুনা। যথা, बालकस्य অবি बालकाचि।

#### ৯७। वृद्ध महज्जातेभ्य उत्त्याः।

हब्द, महत्, ए जात गत्मत् श्रवहीं उच्चन् गत्मत् छेडत् ट इत्र। यथा, हद्यः उद्या हब्रोचः, महान् उच्चा महोचः, आतः उच्चा जितोचः।

#### ৯৭। नि:श्रेयस पुरुषायुषे।

निःश्चेयस ଓ पुरुषायुष निश्रोज्ञान मिन्न रहा। यथी, निश्चितं श्चेयः निःश्चेयसस्, पुरुषस्यायुः प्ररुषायुषस् ।

# ৯৮। विभाषा छायादि नपुंसकम्।

ক্কাষা (৫৯) প্রভৃতি শব্দ বিকল্পে নপুৎসক হয়। যথা, तद्-আহাষম্ বহুজ্ঞাযা, गोমালম্ गोমালা।

#### ৯৯। नित्यं द्याया बाइल्ये।

পূর্ব পদার্থের বাহুলা বুঝাইলে, ক্সাথা শব্দ নিভা নপুৎসক হয়। যথা, इকুয়া ক্সাথা হক্তক্ষাথন্, মহায়া ক্সাথা মহক্ষাথন্।

# ५००। सभा प्रभुपव्यीयपूर्जी।

প্রভূপর্যার শব্দ পূর্বে থাকিলে, सभा শব্দ নিত্য নপুৎসক হয়। যথা, प्रमुसमम्, ईञ्चरसमम्। राजसमा প্রভৃতিস্থলে হয় না।

#### ১०১। रचः पिशाचा दिपूर्वी च।

रचस्, पिशाच প্রভৃতি শব পূর্বে থাকিলে, सभा শব নিতা নপুৎসক হয়। যথা, रचःसमस्, पिशाचसमस्। অন্যত্র, महत्यसमा, देवदत्तसभा।

#### ५०२। स्यालाच।

गानान्ति मार्थवाठक सभा गक निका नशूरमक इत्र । यथा स्त्रीसभस्, स्त्रीयां समूचः इत्यर्थः द्विश्वसभस्, शिम्यूनां समवाय इत्यर्थः ।

#### ১००। पुंबत् कुजुटीपसतीनामग्हादी ।

<sup>(</sup>६२) छावा, शासा, सेना, सुरा, निशा।

অবতে প্রভৃতি শব্দ পরে থাকিলে ক্সক্স্টী প্রভৃতির পুংবভাব হয়। रथी, कुक्का खबरं कुकुटाराइम्, इंखा खराउं हंसाराइम् कुकुषाः भावः कुकुटमावः, इंखाः भावः इंसमावः, व्यायाः परं क्रमपद्रम्, क्रायाः चीरं क्रमचीरम्।

#### বন্থবীহি।

#### ५। बद्धवीहिः।

এই প্রকরণে যে সমাদের বিধান হইতেছে, তাহার নাম बদ্ভদ্রীদ্ধি।

#### २। अनेकमन्यपदाय ।

একাধিক প্রথমান্ত পদ অন্য পদার্থে বিদ্যমান হইলে, বল্কলীল্পি नयांन इत । यथा, खाइड्डो वानरी यम् खाइड्डानरी दृष्टी, खबं कर्मा येन क्षतकमा पुरुषः, दत्तं धनं यसी दत्तधनो दरिट्रः, छद्व-तम् उदकं बस्तात् उद्गतोदकः कृषः, दीर्घी बाह्र बस्य दीर्घवाद्यः दुर्यः, प्रकृत्वानि कमलानि यस्मिन् प्रकृत्वकमलं सरः।

#### संखाभिरव्ययासनादूराधिनसंखाः।

সংখ্যাবাচক শব্দের দহিত অবায়, আদল্ল, অধিক, ও সংখ্যাবাচকের বছবীহি সমাস হর।

#### संख्याया चनहोर्डः।

म् शावाहक नास्त्र छेवत ह इत्र। यथी, द्यानां समीये वे ते उपद्याः, विंग्रतेरासदाः वासद्वविंगः, विंग्रतोऽदूरे खदूर-बिंगाः, चतारिंगतोऽधिका अधिक्यतारिंगः, दौ वा वर्वो वा दिलाः, पञ्च वा घड् वा पञ्चणः। तक्षणस्त्र छेटत् रहं ना। श्था, बद्धनां समीपे छमनहतः।

#### ६। दिङ्नामान्यन्तराते।

अख्दांन तूराहेरल, किशीव्य पूर्व প्रजृष्ठि मासद वस्त्रीहि मयांम इत्र । यथी, पूर्व्यक्षा उत्तरस्थास दिशोरनरानं पूर्वेतिरा, दिवागस्थाः पूर्वस्थास दिशोरनरानं दिवागपूर्वी, उत्तरस्थाः पित्रमायास दिशोरनरानम् उत्तरस्थिमा ।

# ७। सहसृतीयया।

তৃতীয়ান্ত পদের সহিত सत्त শদের বহুব্রীহি সমাস হয়।

#### १। सह: सो विभाषा।

वह्यीरि नगारन, नश्यक्षारन विकल्पिन श्रा श्या, पुत्नेण सह सपुत्तः, सहयुत्तः; अनुजेन सह सातुत्रः, सहातुत्रः; बान्धवेन सह सवान्ध्रवः, सहवान्ध्रवः ; स्ट्रायेन सह सस्ट्रायः, सहस्ट्रायः।

#### ৮। रण्ञ्यतिहारे हतीयासप्तस्योः सङ्पयोः। পরসপর যুদ্ধ বুঝাইলে, সমানকূপ তৃতীয়াম ও সপ্তমান্ত পদের বহুব্রীহি সমাস হয়।

# ১। दीर्घीऽन्त्यः पूर्वस्य।

রণব্যতিহারে সমাস হইলে, পূর্ব্ব পদের অন্তা স্বর দীর্ঘ হয়।

#### ५०। दुच् परात्।

त्ववाजिशांत्र गयांग श्रेतन, शत श्रामत छेवत द्रच् शत, ह रेश व्यवाश श्यः , रेह् शत् व्यक्त छेवर्गत् थेव श्यः । यथा, क्षेत्रेषु क्षेत्रेषु स्ट्लीता द्रदं युद्धं महत्तं केमाकेमि, द्रव्येश्व द्रव्येश्व महत्व द्रदं युद्धं महत्तं द्रव्यहादिक्ति, स्टीसिटि, बाह्मवाह्नवि (७०), स्वस्यसि ।

<sup>(</sup> ७० ) वांश्रानवसर्छ, शृद्धं श्रान्त अञ्चयत्सात विकाल्य आ रहा। सथा, सल्लास्टि, सलीसिट, बास्ताबास्ति बाह्मबास्ति। सत्तर्वश्राद्धं थांकिल रहाना। सथा, स्रस्यसि।

# ५५। स्त्रियाः पुंबद्गाषितपुंस्तायाः स्त्रियाम्।

वस्त्रोहि नमारम, खोलिक नम भरत थाकित्म, स्रिष्ठभू९ खोलिक नम्म भरत थाकित्म, स्रिष्ठभू९ खोलिक नम्म भरत थ्रांकित्म, स्रिष्ठ भू९ वहां वहां । यथा, स्थिरा बुद्धि स्थरपुद्धिः, महती . मितरस्थ महामितः, चित्रा गितरस्थ चित्रमार्थः, होता गौरस्थ स्थर हद्दमक्तिः, पिया आर्थास्य प्रियमार्थः, शोता गौरस्थ शीतरः।

#### ५२। नोबन्तस्य।

वस्त्रीहि ममारम, উপ্প্রভারান্ত স্ত্রীলিঙ্গের পুৎবদ্ধাব হর না। यथा, वामोकः भार्यास्य वामोक्समार्थः।

#### ५७। न कोपधस्य।

যে ক্রীলিঙ্গ শদের উপপাদ্ধলে তদ্ধিতের কিংবা অকপ্রতায়ের ক থাকে, তাহার পুংবদ্ধাব হর না। যথা, তদ্ধিত—হবিদা দার্ম্বাদ্ধ হবিদাদার্ম্বা: অকপ্রতায়—দাবিকা দার্ম্বাদ্ধ দাবিদাদার্ম্বা:। অন্যত্র হয়। যথা, एका দার্ম্বান্ধ एकमाর্ম্বা:।

#### ५८। न संज्ञा पूरव्यो:।

मिश्कातिक ७ शृत्वविक जीनित्मत श्रूश्वकांव एव ना। यथा, मिश्काविक ट्ता भार्याख दत्ताभार्यः, गङ्गा भार्याख गङ्गा-भार्यः, रोहिषी भार्याख रोहिषीभार्यः, रेवती भार्याख रेवतीभार्यः ; शृत्वविक हितीया भार्याख दितीयाभार्यः, पञ्चमीभार्याख पञ्चमीभार्यः।

#### ১৫। °न जाति खाङ्गयोः।

काि विराह्ण अ स्रोक्षवाहरू द्वीनिक गाम्बर श्रूष्ट हा वा । यथा, क्रां विवाहरू—हास्त्राणी भाव्यास्त्र नास्त्राणीभाव्याः, सैस्त्रिया भाव्यास्त्र सस्त्रियाभाव्याः; साक्ष्याहरू स्वेगी भाव्यास्त स्वेगी-भाव्याः, क्रमाङ्गी भाव्यास्त क्रमाङ्गीभाव्याः।

#### ८७। न प्रियादि पूरच्यो:।

বছব্রী ই সমাসে, প্রিয়া (৬১) প্রভৃতি ও পূর্ণবাচক শদ পরে থাকিলে, পূর্ববর্তী ব্রীলিক শদের পুংবদ্ধাব হয় না। যথা, ছ্যীমনা দিযায় ছালানায়ে দুলীবনানালা।

#### ५१। अप् पूरची प्रमाचीभ्याम् ।

পূরণবাচক ও প্রমাণী শব্দের উত্তর অংদ্ হয়; প ইং, অ থাকে।
যথা, कल्लायो पञ्चमी यासां रात्नीयां ताः कल्लायोपञ्चमा रात्रयः (৬২), स्त्री प्रमायी येषां ते स्त्रीप्रमायाः क्वट्स्वनः।

# ১৮। नञ् स वि तुर्यस्य यतुरः।

(৬১) पिया, मनोत्ता, बल्हाची, सुभगा, दुर्भगा, सविवा, स्वा, कान्ता, चान्ता, समा, चपना, वामना। भिक्त, तनया, द्विता, এই তিন শব্দও প্রিয়াদিগণে পঠিত হইরা থাকে, কিন্তু সর্ব্বতই বিপরীত প্রয়োগ দেখিতে পাওরা যার; এজনা, গণমধ্যে নিবেশিত হইল না।

नञ्, सु, वि, त्नि, उप, अरे मकरनत श्रवहीं चतुर्गरकत छेहत चप्रत। यथा, चिवद्यमानानि चतार्थस्य ऋचत्वरः, सुचत्वरः, विचत्वरः, त्निचत्वरः, उपचत्वरः।

# ১৯। नेतुर्नचत्रात्।

नक्रज्यकिक मस्मित शहरकी नेह्न मस्मित छेउत स्वप् इत। स्था, स्मानेलाः, प्रव्यनेलाः रालयः।

#### २०। नाभेः संज्ञायाम्।

म् अ। दूर्वाहरल, नामि गर्कत छेहत सम् इत। यथा, उन्नाभः, पञ्चनाभः।

#### २५। अन्तर्वहिस्या लोन्नः।

कानर् ७ विहिस् मध्यत পরবর্তী बोसन् मध्यत উতর অধ্ছর। यथी, ज्ञनर्जीमानि यस चनर्जीमः, विह्निजीमानि यस विहर् लोमः।

#### २२। नञ् दु: स्थः सक्यो वा।

नक्, दुर् सः. এই जित्तित शत्रवहीं सिक्य गामित छेहत विकाल्य स्मप्रतः। यथी, स्मस्त्रव्यः, स्मस्त्रियः; दुःसक्यः, दुःसिक्यः; सुसक्यः, सुसक्यिः।

#### २७। सक्यचिभ्यां वः खाङ्गे।

वाक तूथाहेता, सक्षि ও चाचि गत्न छेउत प्र हर, य हैं ए, ज्र शांति। राष्ट्री, दीर्घ सक्षिनी चास दीर्घसक्षः प्रकाः, हरो सक्षिनी चासाः हत्तसक्षी नारी, दीर्घ चाचियी चासान् दीर्घाच बदनम्, विशाले चाचियी चासाः विशालाची देवी। स्रोक ना तूथाहेता हर ना। यथा, दीर्घसक्सि श्वटम्, स्यूलाचिः इ.सुद्राहः।

#### **२८। यङ्गलेदीविण**।

দাৰু বুঝাইলে, অন্ধীৰ শদের উত্তর দ হয়। যথা, দল্লাজুৰা হা**ৰ ৷** দাৰুভিন্ন স্থলে, দল্লাজুৰি <del>হ</del>ুলিং।

#### २८। दितिभ्यां मृद्धः।

हि ଓ लि मत्मत প्रवर्शी मूर्जन् मत्मित छेठत घरत। यथी, ही मूर्जानावस्य हिमूर्जः, लयो भूर्जानोऽस्य लिमूर्जः। अतात रहता। यथी, पञ्च मूर्जानोऽस्य पञ्चमूर्जा।

#### २७। अस् नञ् दु: सुभ्य: प्रजाया:।

নজ্, রুদ্, স্তু, এই তিনের পরবর্তী দলা শব্দের উত্তর অন্তু হয়। যথা, অদলাং, রুদ্দলাং, স্তুদলাং।

#### २१। मन्दाल्पाभ्याच्च मेधायाः।

नञ्, दुर् सु, मन्द्, खला, এই मकलात शत्रवर्धी मेघा मस्त्र **উढत्र** स्रम् रत्न। यथी, समिषाः, दुर्मेधाः, समिषाः, मन्द्मेधाः, सल्समेषाः।

#### २৮। धमादिन् केवलात्।

धर्मा गत्नित উত্তর অনৃ হয়। যথা, सुधन्मां, ग्रुमधन्मां, खर्कित-धन्मां। ধর্মাশন অন্য শন্দের সহিত মিনিত থাকিলে হয় না। যথা, परमञ्जधन्मीः।

# २ । दिचणादीमाबि अयोगे।

वाधिममुक तूथाहेल, दिच्चिण गाम्ब श्रत्वी दे मी गाम्ब छैड त खुन हत । यथा, दिचिणे दे मी वर्ण यस दिच यो मी कार, व्याधिन दिचिणे पार्थि कतवण द्रव्यक्षः।

## ७०। प्र सम्बर्गा जातुनो ज्ञु:।

म, सस्, এই দুই অব্যয়ের পরবর্তী जातु শব্দের व्यक्ति चु रह। यथा, मजुः, संज्ञः।

#### ७১। जद्धीद्वभाषा।

জদ্ধ শব্দের পরবর্ত্তার বিকম্পে। যথা, জদ্ধিল্ন:, জদ্ধিলার:।

# ७२। नसो नासिकायाः संज्ञायाम्।

मिश्लो दूर्याहरलं, नासिका मेक्झांटन नस रहा। यथी, द्वृदिव नासिका ख्यस द्वृत्यसः, वार्जीव नासिकास्य वार्जीवासः, गौरिव नासिकास्य गोनसः। स्वृत्याद्वतः উद्धतं रहा ना यथी, स्थूता नासिकास्य स्थूतनासिकः। मिश्लो नो दूर्याहरल रहा ना यथी, तुङ्का नासिका स्थूतनासिकः। मिश्लो नो दूर्याहरल रहा ना यथी, तुङ्का नासिका स्थस तुङ्कानासिकः प्रसृषः।

#### ७७। डपसम्मीच्च।

উপদর্গের পরবর্তী नासिका শব্দের স্থানে नस रह। यथी, प्रयासः, ভল্নसः, भाषनसः।

#### ७८। खर खुराभ्यां नस्च।

खर ७ खुर माम्बर পরবর্তী नासिका माम्बर स्राप्त नस ७ नस् रहा। यथी, खरणसः, खरणाः; खुरणसः, खुरणाः।

#### ७६। विम्नाइयः।

বি উপেদর্গের পরবর্তী নায়িকা শক্ষের স্থানে বিফল, বিহ্নু, বিক্স্তু, বিষ্টু, নিপাতনে সিদ্ধ হয়।

#### ७७। जानिजीयायाः।

जाबा मस्बद्ध हार्य जानि रहा। यथी, युवति जीयास्य युवजानिः, प्रिया जाबास्य प्रियजानिः, सुन्द्री जावास्य सुन्द्रजानिः।

# ७१। दूर्गन्धादुत् सु पूति सुरभिथ्यः।

उत्, सु, पूर्ति, सुरिभि, देशामित श्रविद्धी गर्म्य गामित छैहत हू इत्। वशी, उत्तिम्यः, सुगिन्दः, पूर्तिगन्दिः, सुरिभिगन्दिः। वास्तित्त् शक्तम्यक इत्र ना। वशी, सुगन्दः प्रवनः।

#### ७৮। चल्पसंयोगे।

ज्ञल्भम९ स्योগ दूर्कारेटल, गश्च गस्कद छेठद दूर्य। यथा, छत-गस्कि, दक्षिमस्त्रि, स्त्रपगस्त्रि भोजनम्।

#### ७ । उपमानाच्च।

উপমানবাচক পদের পরবর্তী मञ्च শক্ষের উত্তর হু হয়। यथा, पद्माञ्चीय मञ्जोऽख पद्ममन्त्रिः, करीषमन्त्रिः (७०)।

#### ८०। पादस्य पादुपमानादहस्यादेः।

উপযানবাচক পদের পরবর্তী पाद শব্দস্থানে पाद रয়। यथा, व्याम्रखेन पादानस्य व्यामपात्।.इस्तिन् (७८) প্রস্তির পরবর্তীর रয় না। यथा, इस्तिन इव पादानस्य इस्तिपादः।

# 8)। संखास पूर्वस्य च।

সংখ্যাবাচক ও সু পূর্ব্বে থাকিলে, पाट শব্দ স্থানে पाटु ছয়। वर्था, दिपात्, त्रिपात्, चत्राष्पात्, सुपात्।

#### 8२। स्त्रियां कुम्मादेः पद् ।

জীলিকে, जुन्म (৬৫) প্রভৃতির পরবর্তী पाद्र শব্দয়ানে पहु হয়।
যথা, जुन्मपदी, एकपदी, द्विपदी, विष्णुपदी,
আর্দুদ্বী।

# 80। समृद् दुईदी मितामितयोः।

नित, चनित, अरे नूरे अर्थ, यथाक्तरम, सुदृहु, दुईहु, अरे मूरे

 <sup>(</sup>৬৩) বোপদেবনতে বিকশ্পে।

<sup>(</sup>७४) इस्तिन्, कुँहान, श्रम्भ, श्रम, कपोत, नान, गर्ब, गर्बोन, कुसूर्व राखादि।

<sup>(</sup>७६) जुन्म, एक, द्वि, ति, भ्रत, भून, जाते, सुनि, स्या, स्ता, गोधा, त्या, विष्णु, स्रार्ट्, क्वण, श्रुचि, स्थ्याः इत्सादि ।

मक निशांज्य निक्ष रत्र। यथा, शोभनं सृदयमस्य सुसृत् निम्म, इष्टं सृदयमस्य दुर्स्वत् समितः।

#### 88 । उरः प्रस्तिभ्यः कप्।

खरम् (७७) প্রভৃতি শদের উত্তর कप् इश, প ই॰, क থাকে।
यथा, ब्यूट्डरिख ब्यूट्टरिखः, खपानद्भागं सम्ह सोपानतः,
भाषितः पुमाननेन भाषितपुंख्तः, न विद्यते खर्थोऽस्मिन् निर्धे-कस्, खनधंकस्।

#### 8¢। दूनन्तात् स्त्रियाम्।

खीलिक, देन्नांशास मस्मित खेळत कम् रह। यथा, बह्नोऽखां धनिनः बह्धधनिका नगरी,बह्दवोऽखां वाग्मिनः बह्हवाग्मिका सभा।

#### ८७। चरन्त नदीभ्याच्य।

श्रकातास अनिमर्किक मास्त्र छेवत सम् इत। यथां, श्रमस्य यकपित्वकः, समात्वकः, स्तमर्ज्ञकाः, निमर्किक-स्तपत्नीकः, बक्ककुमारीकः।

#### 89। श्रेषादिभाषा।

পূর্বোক ভিয়ের উত্তর বিকল্পে কদ্ হয়। যথা, धृतधत्तुष्कः, धृतधतुः; बञ्चयग्रकः लक्षयगाः; सुविद्धतग्रिर्द्धः, सुविद्धत-ग्रिराः; खर्ज्जितधनकः, खर्ज्जितधनः।

#### ८४। नेयसुन:।

ईयसन् প্রতায়ান্ত শবের উত্তর कण् হর না। যথা, बह्कप्रेयान्, बह्कप्रेयसी।

#### ৪৯। न प्रशंसायां भ्वातु:।

<sup>(</sup>७७) उरस्, उपानह, प्रमृष्, पयम्, दक्षि, मधु, घाति, सर्विम्, अन्तर्ह्, नौ, निर् ଓ नञ्पर्याक स्र थे।

প্রশৎসা বুঝাইলে, श्वास्ट শদের উত্তর ক্ষম্ হর না। যথা, सुश्वासा, परिद्यतश्वाता, साधुश्वाता। অন্যত্ত, মুর্জনাত্তক:, बद्धश्वास्टक:।

#### (७। न नाड़ीतन्त्र्यो: खाङ्गे।

त्रांक तूथांदेल, नाड़ी उतन्त्री मध्यत उठत कप् रत्न ना यथा, बद्धनाडिः कायः, बद्धतन्त्रीयीवा। अश्रीक ना तृथांदेल, बद्ध-नाडीकः स्तम्भः, बद्धतन्त्रीका वीया।

#### १५० । सुप्राताइय:।

वस्त्रविश्विमारम्, सुमातः अञ्जि मक निश्वाञ्चतः मिन्न रहः। यथा, शोभनं प्रातरस्य सुमातः, शोभनं दिवास्य सुद्विः, चतस्त्रोऽत्रयः सस्य चतरत्रः।

#### षम्य ।

#### ५। दन्दः।

এই প্রকরণে বে সমাস বিধিত হইতেছে, তাহার নাম दन्द।

#### २। परलिङ्गं हन्हे।

चन्द्र मर्गाम হইলে, ममस्र ভাগ পর পদের লিঙ্গ প্রাপ্ত হয়।

#### ७। इतरेतरयोगे।

भित्रभित विशेष तृत्वाहित, इन्ह मयाम इत । यथी, हिर्च हरस्य हिरहरो, रामस बन्धाय रामबन्धायो, भीमस अर्जुनस भीमार्जुनो, धनस खिर्द्र पंचायस धनखिर्प्यायाः, कन्द्र स्नुत्व फानस्र कन्द्र स्वायस धनखिर्प्यायाः, कन्द्र स्नुत्व फानस्र कन्द्र स्वायस्य कृपस्र रेमस गन्ध्र स्वस्य कृपस्र रेमस गन्ध्र स्वस्य कृपस्र रेमस गन्ध्र स्वस्य कृपस्र रेमस्य गन्ध्र स्वस्य कृपस्र रेमस्य गन्ध्र स्वस्य कृपस्य कृपस्य

#### 8। समाद्यारेच।

দুই বা বহু পদার্থের সমাহার বুঝাইলে, ह्वन्ह সমাস হয়।

#### ৫। प्राणि द्वर्थ सेनाङ्गानाम्।

वक्षमशांत्र श्रीगृत्र, वृद्यांत्र, व तमात्र दोठक श्राप्त समाहार श्र।
यथी, श्रीगृत्र—पाणिय पादय पाणिपादम्, कर्य चरण्य
करचरणम्, दन्य कोष्ठ्य दनौष्ठम्, कर्णय नामिका च कर्णनामिकम्, श्रुवौ च नजारौ च श्रूबनारम्, पृष्ठञ्च छर्दञ्च प्रशोदरम्; वृद्यांत्र—पण्यवय स्टरङ्ग्य पण्यवस्टरङ्गम्, प्रङ्गय इन्दुभिद्य प्रङ्गदुन्ति, भेरी च पट्रह्य भेरीपट्रम्, स्वमय गान्यास्य स्वमगान्धारम्, धैवतय पञ्चमय धैवतपञ्चमम्, पर्वज्ञय
मध्यमय वड्जमध्यमम्; त्रमात्र—रिषकाय चञ्चारोत्राय रिषकाश्वारोह्नम्, गाक्वीकाय याश्वीकाय गाक्वीक्वयाश्विकम्, परग्रवय करवानाय परग्रकरनानम्, धनंषि च ग्रराय धनुःग्ररम्,
-ग्रराय द्वणीराय ग्रह्मश्वीरम् (७१)।

#### ७। नदीवाचिनां लिङ्गभेदे।

निष्मत रूप थिकित्न, निर्मातिक शिष्तत समाहार रहा। यथी, गङ्गा च घोषास गङ्गाशेषम्, उद्यस्त इरावती च उद्योगित, बद्धापुत्मस चन्द्रभागा च बद्धापुत्मसन्द्रभागम्। निष्मरूप नी थिकित्न रहा। यथी, गङ्गा च यसना च गङ्गायसने, सरस्ती च हबद्दती च सरस्ति विद्यह्मी।

#### १। देशवाचिनाञ्च।

লিঙ্গভেদ থাকিলে, দেশবাচক পদের समाञ्चार হয়। যথা, ক্সবেস্ব

( ৬৭ ) সেনাঙ্গবাচক পদের কেবল বহুবচনে সমাহার হয়, আন্যাবচনে হয় না। যথা, মহস্ত্র দ্রেতীহস্ত্র মহদ্রেতীহী, মিলিস্ত মহয়স্ত্র কহৰাত্তস্থানি মহয়কহৰাতাঃ। कुर्चे मञ्च क्रव्यक्त चे तम्, क्राय्य जाङ्ग जञ्च क्ष्य काङ्ग जम्, मयुरा च पाट जिए च्या समुरापाट जिए च्यम्। लिश्ग स्टम् ना थां कित्ल रह ना। यथी, मद्राय जो कयाय मद्रे के कयाः, विदे हास्य कि जिङ्गास्य विदे हक्ष जिङ्गाः। श्रीयवीठक श्राप्त मर्याशेद रह ना। यथी, जाम्ब वञ्च पालू किनी च जाम्ब व पाल किन्यो।

४। वा पशु शकुनि चुद्रजन्तुवाचिनां बद्धवचने।
वह्य वहत्त, शर्ष्ठविष्ठ, गकुनियोठक, छ क्रूपु कर्ष्ठविष्ठ अस्त विकल्भ
समाहार रव। यथां, शर्ष्याठक—गावस महिषास गोमहिषम्,
गोमहिषाः; इनास कुर कुः स दनकुर कुम्, इनकुर कुःः; गोमायवस्र
गईभास गोमायुगईभम्, गोमायुगईभाः; गकृनियोठक—हं सास
सारसास हं ससारसम्, हं ससारसाः; वनास चन्नवानास वनचन्नवानम्, वन चन्नवानाः; वो निलास मयूरास नो निलमयूरम्,
को निलमयूराः; क्रूपु कर्ष्ठविष्ठ—दं शास मयनास दं शमसनम्,
दं शमसनाः; यूनास मिन्नवास यूनमचिनम्, यूनमचिनाः।
मन्नु पास पिपी चिनास मन्नु पापि चिनम्, मन्नु पापि पी चिनाः।

#### भल त्या तर्वाचनानाञ्च।

वहर्यकात, कनर्याकक, जुनवाकक, अ जल्रवाकक श्रास्त विकाल्य समाः हार रत। यथा, कनर्याकक—बदराणि च खामजकानि च बदरा-मजकम्, बदरामजकानि ; खर्जुराणि च नारिकेजानि च खर्जुर-नारिकेजम्, खर्ज्जुरनारिकेजानि ; बीह्रयस्य यथास्य बीह्रियवस्, ब्रीह्रियवाः ; सहास मामास सहमामम्, सहमामाः ; जुनवाकक— क्रास्य कामास्य क्रमकामम्, क्रमकामाः ; जरूवीकक—बन्नस्यास्य न्ययोधास्य सन्नस्ययोधम्, सन्नस्ययोधाः ।

## ३०। नित्यं नित्यविरोधिनाम्।

যে সকল জন্ত পরস্পর নিতাবিরোধী, বহুইচনে, তদাচক পদের

निष्ण समाहार रह। यथी, खहयब नक्षकाश्च खहिनकुषम्, काकाश्च खबूकाश्च काकोलूकम्, मार्ज्जोराञ्च मृषिकाञ्च मार्ज्जोरमृषिकम्।

#### **५५। गवाखप्रस्तीनाञ्च।**

गवात्र (७৮) প্রভৃতির নিতা समाहार হয়। यथी, गावस अत्राक्ष गवात्रम्, अजात्र अविकास अजाविकम्, एन्त्रास पौचास पुत्रपौच्चम्।

#### **५२। विभाषा पूर्व्यापरादीनाम्।**

पूर्व्यापर প্রভৃতির বিকশ্পে समाहार रह। यथी, पूर्व्यञ्च सपरञ्च पूर्व्यापरस्, पूर्व्यापरं, ज्यधरं च उत्तरं च खधरोत्तरस्, खधरो-तरे; द्या च ष्टतं च द्याष्ट्रतस्, द्याष्ट्रते।

#### ১৩ । विबद्धानामविशेषणानाञ्च।

भ्रतम्भरतिकृषः भनार्थित विकत्म समाहार हत। यथा, भीतञ्च उषाञ्च भीनोष्णम्, भीतोष्णे; सुखञ्च दुःखञ्च सुखदुःखम्, सुख-दुःखे; आजोकष्य अन्वकार्य धालोकान्यकारम्, आजोकान्य-कारे। वित्यविष हहेत्व हत्र ना। यथा, भीतोष्णे प्रयमी।

# 58। स्ट्राणामनिरवसितानां नित्यम्। मुमुरोही পদের নিত্য समाञ्चार হয়। হথা, गोपाञ्च नापिताञ्च

(७৮) गवात्रम्, गवाविकम्, गवेडकम्, खजाविकम्, अजै-डकम्, कुखवामनम्, कुछिकिरातम्, पुत्रपौत्तम्, त्रवण्डावम्, स्तीक्षमारम्, टासीमाणवकम्, शाटीपटीरम्, शाटीपच्छाटम्, शाटीपष्टिकम्, खद्रखरम्, खद्रश्यम्, मृत्रशक्तत्, मृत्रपुरीषम्, यक्तमेटम्, मांस्शीिणतम्, दर्भश्ररम्, दर्भपूतीकम्, खळ्निशिरी-षम्, खळ्निपुर्क्षम्, द्रशीपतम्, दासीदासम्, कुटीकुटम्, भाग-वतीभागवतम्। गोपनापितम्, कस्ताराच क्रमाकाराच कर्मारक्रमाकारम्, ताम्बूलिकाच तन्त्रदायाच ताम्बूलिकतन्त्रवायम्। निर्दिशिष्ठ (७৯) मृष्ट्रुद इय्र न। यथी, चम्बालाच च्यतपाञ्च चम्बालच्यतपाः।

#### ১৫। न द्धिपय:प्रस्तीनाम्। दाध्ययस् (१०) প্রভৃতির সমাহার হয় না। ষথা, दिध्यवसी, सर्पिमधनी, गुक्तकणी, दीचातपसी, उनुखनसम्बे।

# 5% । सञ्चवर्ग दषहान्तात् समाहारे । गर्याशत्रवान्त्र, प्रवर्गाञ्च, प्रकाताञ्च, यकाताञ्च, अ शञ्च माम्बद छठत स्व हत्र। यथा, वाक्तवम्, श्रीस्त्रज्ञम्, समिद्हपदम्, सम्पद्विपदम्, वाक्तियम्, वाग्विपुषम्, स्रतोपानह्रम्, धेतुगोहृह्णम् । मर्याशतः वा हहेत्व हत्र वा । यथा, श्रीस्त्रज्ञी, प्राहृद्यरही ।

# 59 । ऋद्न्ताहद्न्ते डा विद्यागोत्रसम्बन्धे । विनागम्ब ७ शांजमम्ब थोकित्न, এवर श्रकातां अन्न श्रवहीं रहेत्न, श्रकातां अन्यत्न छेवत डा रह, ७ हेर, आ थोकि । यथा, विनागम्बक्त होता च पोता च होतापोतारी, नेष्टा च चहाता च नेष्टोहातारी; शांजमम्बक्त माता च पिता च मातापितरी, याता च ननान्दा च याताननान्दारी ।

#### ১৮। पुत्तेच।

(७२) ये मुक्ते पात्नं संस्कारिणापि न गुद्धाति ते निद्धवसिताः ।
(१०) दिधिपयस् • सिर्मिधु, मधुसिंग, बद्धाप्रजापित,
यिववेश्वयण, स्कन्दिविशास, परिवादकौधिक, प्रवाद्यीपसद,
युक्तकण, द्रभावर्तिम्, दीखातपस्, श्रद्धातपस्, मेधातपस्,
सध्ययनतपस्, चनुखनससन्, साद्यवसान, श्रद्धानेधा।

পুजाम शत थोकिता, श्रमस गत्मत छेठत सा रहा। यथी, मिता च पुत्रस पितासुत्री, माता च पुत्रस मातासुत्री।

#### **३३। देवतावाचिनां पूर्व्यात् ।**

मित्र हिंदि प्राप्त हिंद्य हिंदिल, शूर्व श्राप्त है हिंद हा हह। यथा, इत्द्र्य वहण्य इन्द्रावहकी, मिल्ल्य वहण्य मिलावहणी, स्टब्य चन्द्रमाख स्टब्यांचन्द्रमसी।

#### २०। न ब्रह्मप्रजापत्या दे:।

मस्मामजापति প্রভৃতির উত্তর ভাষর না। যথা, मस्मा च प्रजा-पतिस मस्मामजापती, कन्निस वायुस सम्मिवायू, वायुस सम्मिस वायुम्नी।

#### २५ । दूदग्ने: सोमवक्णयो: ।

सोम ଓ वहणा भक्त श्राद्ध शोकित्स, खन्नि माम्बद छेठत देत् इत त द्रत्। यथा, खन्तिय सोमय खन्नीयोमी, खन्निय वहणाय खन्नीयक्णी।

#### २२। दिवो द्यावा।

পূर्वव ों दिव् खादन खावा हत । घर्षा, खौस भूमिस खावाभूमी, खौस समा च खावासमे ।

#### २७। दिवस् च प्रधियाम्।

शृथितीयक शरत थांकित्ल, दिव् सात्त द्यावा ও दिवस् रह। यथा, द्यौत्र प्रथिवी च द्यावाप्रथियौ दिवस्त्रवियौ।

#### २८।, मातरपितरौ।

निशांज्य मिक्क इस । यथी, माता च पिशा च मातरपितरी ।

#### २৫। दम्पती जन्मती वा।

जावा ও प्रति गंद्ध नमान रहेल, विकल्म दस्यती ও जम्मती रहा। यथी, जावाप्य प्रतिस्र जावापती, दस्यती, जस्पती।

# २७। नित्यं स्नीपुंसादव: I

वक्तमान रहेरल, स्त्रीपंत्री (१०) প্রভৃতি নিপাতনে निक्ष रह। यथा, स्त्री च पुनांच स्त्रीपंत्री, नाक्च मनच नास्त्रनसे, नतस्त्र दिना च नतन्दिनस्, राह्री च दिना च राह्रिन्दिनस्, खहरिन च दिना च सहिन्दिनस्, खहरिन च दिना च सहिन्दिनस्, खहरिनस्, बहर्ष राह्रिक चहरिनस्,

#### २१। सरूपाणासेकशेष एकविभक्ती।

একবিভক্তি হইলে, সমানাকার অনেক পদের একমাত্র অবশিষ্ট থাকে। বি পদের একশেষ হইলে, অবশিষ্ট পদ বিবচনান্ত, বহু পদের একশেষ হইলে, অবশিষ্ট পদ বহুবচনান্ত হয়। যথা, নহস্ত্র নহস্ত্র নহস্ত্র নহস্ত্র নহস্ত্র নহস্ত্র দেৱস্তু দেৱস্তু দেৱস্তু দেৱস্তু দেৱস্তু দেৱস্তু দেৱস্ত্র দেৱস্তু দেৱস্তু

#### २४। पुमान् स्मिया।

ममानाकांत खीरांठक পদের महिंछ ममांम श्रेल, পুরুষবাঁচক পদ অবশিষ্ট থাকে। যথা, नाञ्चाणञ्च माञ्चाणो च नाञ्चाणो, कुकुटश्व । कुकुटो च कुकुटो। खीलिन्ननिमित्ठक खाए रूप् প্রভৃতি বিশেষ ব্যতিরিক্ত অন্যান্য অংশে ममानाकांत श्वरा আবশ্যক, শদ্দের বরপণত বৈলক্ষণ্য থাকিলে হর না। যথা, ভ্রম্ভ বার্থী ভ

# २३। न व्यक्तिसंज्ञानाम्।

वाकिविरणस्वत्र म्रेजावाठक श्रामत् अकरणव रह ना । यथा, इन्द्रव क्ट्राबी च इन्द्रेन्द्राब्खी, अवस्र भवानी च भवभवान्धी ।

<sup>(</sup>१२) स्त्रीपंत्री, धेन्यनसुहस्, स्टक्सामे, बास्प्रनसे, सर्वि-श्रुवस्, दारगवस्, अर्वेशीयस्, पदशीवस्, नक्षत्थिस्, राहि-न्दियस्, सहर्दिवस्, सत्रयज्ञवस्, सहोराहः।

# ७०। स्नात पुत्नी खर दुष्टितस्थाम् । रम्त महिल जुल्त ७ पृहिल्त महिल शूल्तत मंगाम हहेला, जुल् ७

शूक व्यविके थोरक। यथी, श्वाता च खसा च श्वातरी, प्रस्रव इहिता च प्रस्रो ।

#### ७५। विभाषा पिता माता।

মাতৃশব্দের সহিত নমাস হইলে, পিতৃশব্দ বিকল্পে অবশিষ্ট থাকে। যথা, সানা च पिता च पितरी, সানাঘিনয়ী।

# ७२। स्रग्नुर: स्रम्नु।

শ্বশ্রণদের সহিত সমাস হইলে, শ্বরণদ বিকল্পে অবশিষ্ট থাকে। যথা, স্বস্থ স্বয়ব্য স্বয়্বী।

# ७७। नपुंसकमनपुंसकेनैकवचनं वा।

নপুৎসক ভিলের সহিত নপুৎসকের সমাস হইলে, নপুৎসকশন্ধ অবশিষ্ট থাকে, এবং ডদুপলকে বিকণ্পে একবচন হয়। যথা, যুক্তাৰ যুক্তা ৰ যুক্তাৰু যুক্তান্, যুক্তানি। নপুৎসকের সহিত হইলে, একবচন হয় না। যথা, যুক্তাৰু যুক্তাৰু যুক্তাৰু যুক্তানি।

#### সর্বাদ্যাদ্যাধারণ বিধি।

#### ১। पथो ड: समासे।

मयाम हरेल, मयरखर अखिक पियन भर्कर छेउर ड हर, ७ रे॰,
आ शारक। यथा, पयः समीपम् उपपयम्, जले पन्याः जलपयः,
दिच्चाय्यां दिशि पन्याः दिच्चापयः, महान् पन्याः महापयः,
स्थायां ध्यां समाहारः सिपयम्, चतुर्यां पयां समाहारः
चतुष्पयम्, रस्यः पन्याः चिद्यान् रस्थपर्यं नगरम्, चेत्रञ्च पन्यास्
चित्रप्यो। अरादार अर्द्रश्चे हरेल म्लूर्भक हर्। यथा,
विक्षः पन्याः विषयम्, गर्हितः पन्याः उत्पयम्, चप्रकः
पन्याः चप्रयम्।

#### २। अनपः।

नमान रहेल, नमर्दं त व्यवस्थि चप् णायत छेतत चन् रह, न हेर, व्य शोर्क। यथी, निमवा चापोऽस्मिन् निमवापं सरः, उबृता चापोऽस्मात् उषृतापः नूपः, नूपस्मापः नूपापः, निर्माता चापः निर्मावापाः।

#### ७। श्वन्तरपसर्गेस्योत्प र्:।

बि, ज्यस्त्, ও উপमर्शित পরবर्शी खाष् गाम्बत ज्यकात स्राप्त दे रहा यथा, ह्योर्दिशोः खाषोऽख हीषम्, खन्तरीषम्, भीषम्, समीषम्, प्रतीषम्, खन्तीषम् ।

#### ८। अवग्रीहिभाषा।

व्यवशिष छेलमार्गत लातवहीं हरेला, विकाल्ला। यथा, प्रेषस्, प्रापस्; परेपस्, परापस्; वागं समीपस् उपेपस्, उपापस्।

## ৫। समापानूषौ।

समाप ७ चनुप निर्णाज्य निश्व रह। यथा, समापं देवनयनम्, चनुषो देशः।

#### ७। धुरोऽनचे।

नमान रहेल, नमस्तुत अवस्ति धुर् मस्ति छैठत सन् रह, न हेर, अ थोल् । यथी, राची धूः राजधुरा, महती धूः महाधुरा, धता धूरनेन धतधुरः । अक मस्ति नमुक्त थोक्लि रह ना । यथी, समस्य धूः सम्बुरः, हता धूरस्थिन हृदधूः समः ।

#### १। ऋचव!

नगरस्त्र अस्ति चे स्टच् माम्य छेडत् सन् इत्। वशी, साईस् स्टचः सर्दे देः (१२), स्विधिता स्टक् सनेन स्विधितर्देः।

<sup>(</sup>१२) श्रुशिक रहा।

#### ৮। नजो माणवके।

माणावक त्यांदेल, नत्यः त्र शत्य वीं ऋष्णाकत उठत अन् रह। घथी, अन्य को माणावकः। अन्य ज, अन्य क्षाम।

#### २। बहोसरणे।

चर्षा तूथारेतन, वहात शतवहीं स्टच् गत्मत छेहत सन् रह। घथा, बह्नचक्षरयः। अगाज, बह्नक् स्त्रतम्।

#### ५०। प्रत्यन्ववेभ्यो लोन्नः।

प्रति, चतु, चन, अरे जित्तद शृहदशी खोमन् माम्बद छेउद चन् रहा यथा, प्रतिजोमन्, चतुजोमम्, चन्जोमम्।

#### ১১। साम्बस

प्रति, चतु, अत्र , এই ডिনের প্রবর্ଣী सामनृ শদের উত্তর अतनृ एत । यथी, प्रतिसामम्, अतुसामम्, अवसामम्।

# **५२। क्षणोदक पाग्ड्संखाम्यो स्ते:।**

कन्त, उटक, पान्यु, ও সংখ্যাবাচতের পরবর্তী মুলি শব্দের উত্তর অনৃ হয়। যথা, कन्त्रभूमः, उदस्प्रभूमः, पान्युङ्गूमः, हिम्मः, चत्रभूमः।

# अह्म इसि पत्य राज्यो वर्चेषः।

ब्रह्मन्, इस्तिन्, पत्य, राजन्, इशाम्त शरवर्शी वर्षम् गत्मत উत्तर अन्धित । यथा, ब्रह्मवर्षम्, इस्तिवर्षमम्, पत्यवर्षसम्, राजवर्षसम्।

#### **58। या समन्येभ्यसमसः।**

खन, सम्, खीम, देशामित शत्वती तमस् भाष्यत छेतत सन् एस । स्था, समतमसम्, चेनाससम्, सम्याससम् ।

#### ১৫। अन्वव सप्तेभ्यो रहसः।

चातु, चाव, तप्न, देशीप्तत পরবর্তী रहास गर्कत উত্তর चान स्त्र। यथी, खनुरहरून, खनरहरून, तप्नरहरून्।

#### ১७। उपसर्गादधनः।

উপদর্গের পরবর্তী অঞ্জন শব্দের উত্তর্গ অনু হয়। যথা, प्रमतः षधानम् प्राध्वो रयः, षध्वनोऽभावः निरध्वम, षध्वानं प्रति प्रत्यक्षमः। अग्रज, उत्तमोऽक्षा उत्तमाधाः।

#### ५१। खसोऽवसीय:श्रेयोभ्याम्।

श्वम् गत्मत् পात्रवीं व्यवसीयस्' ७ स्त्रेयस् गत्मत् छेडत् चान् इतः। यथा, श्वीवसीयसम्, श्रःश्रेयसम्।

#### ১৮। न प्रशंसायां खतिभ्यास ।

প্রশংসাবাচী स্তু জ্বনি শব্দ পূর্বে থাকিলে, সমাসান্ত বিধি হয় ना। यथा, श्रोभनो राजा सुराजा, श्रोभनो राजा चस्तिन. सराजा देशः, चतिमयेन राजा चतिराजा, सुसखा, चतिसखा, सगीः, चतिगौः, सपन्याः, खध्या।

#### ১৯। न किम: कुत्यायाम्।

कुथ्मावां की किस गर्क शृद्ध थांकित्न, मर्थामां छ विधि रह ना । यथा, कुतिसतो राजा, किंराजा, कुतिसतः सखा किंसखा, कुतिसतः पन्याः चरित्रन किम्पन्याः देशः।

#### र् २०। न नञस्तत्पुरुषे।

তৎপুক্ত সমাদে, नज् भृत्व थाविता, मरामास विधि दत्र ना, यथा, खराजा, खरखा, खगौः।

#### २५। प्रयो विभाषा।

ঘথিনু শব্দের উত্তর বিকল্পে। সমাসাম্ভ পক্ষে নপুৎসক লিছ হয়। যথা, অঘযম্য, অধন্যা:।

#### २२ । सः समानस्य गोतादौ ।

नमारन नोत्न প्रकृष्ठि गम श्राद शिकित्त, समान गम्हार्त सं रहा। यथा, समानं नोत्नमस्य सगोतः, सक्ष्यः, सर्वाः, सपचः, सनाभिः, सिव्युः, सनामा, सरवाः, सतीर्षः, सस्यानः, सबन्तुः, सन्वनः, सरातिः, सन्त्राः, सन्वनः, सरातिः, सन्त्रातिः, सन्त्रारः, सन्त्राः, सन्त्रातिः, सन्तिः, सन्तिः,

#### २७। विभाषा धन्मोद्दे जातीवेषु ।

धर्मा, उदके, ও जातीय मक श्रांत धाकित, विकाली। यथी, सधम्मा, समानधन्मी; मोदका, समानोदका; सजातीया, समानजातीयः।

#### २८। दुरन्यादाघीरादिषु।

#### २८। न हतीया षद्योः।

जुडीहास अ. वर्षारखद रह ना। यथा, खन्येन आर्थाः सन्यायीः, सन्यसाधीः सन्यामीः।

#### २७। अर्थे विभाषा।

व्यर्थगम পরে, থাকিলে বিকপ্পে। रथा, खन्मसार्थः खन्मदर्थः, खन्मार्थः।

#### २१। को: कत् खरे तत्पृक्षे।

उर्भुक्य मर्याम, ब्रेंतर्गभरत शोकित्ल, कु मक्सीत कत् रह। यथी, कुत्सितोऽसः कदसः, कुत्सित एकः कटुष्टः, कुत्सितमन् कदन्नम्, कुत्सित साचारः कटाचारः, कुत्सितसदकं कटुरकम्।

#### २४। तिर्घ बदेषु।

ति, रष, ও वद मक পर्द्ध थोकित्त, कुमक्खार्यक्त् रहा। यथी, कालितास्त्रयः कल्लयः, कुलिस्तो रघः कट्ट्यः, कुलिस्तं वदति कहदः।

#### २२ । का पथ्यच्यो:।

पथिनृ ଓ कि चिन भिन्न शर्द शीकित्न, का रहा। यथी, कुलिस्तः, पन्याः कामयः, कुलिस्तमिक्त कास्य काचः।

#### ७०। दूषदर्थे च।

र्द्रमत् অर्थतृक्षांदेलन, कुगकचानि का इ.स. यथी, का**मधुरस्**। द्रेषन्मधुरमित्यर्थः; कःचत्रया**म्, द्रेषस्वत्रया**मित्यर्थः।

#### ७५। विभाषा पुरुषे।

पुक्ष गम भारत थांकिल, तिकान्म। यथा, कापुक्षः, कुपुक्षः।

# , ७२ । का कर्त्कवान्य को ।

चन्ण मक भरत थोकिरल, कुमक्चीरिन का, कत्, अ कव रह। यथी, कोन्णम्, कटुम्णम्, कवोन्णम्।

## ७७। विद्यासिंद्राद्य:।

विश्वासित् প্রভৃতি শব নিপাতনে সিদ্ধ হয়। यथा, विश्वख सित्नं विश्वासितः, विश्वावतुः, विश्वानरः, खटावतः, खटापट्स्, खटा-गवस्, श्वादन्तः, श्वादंद्वा, श्वाद्वर्षः, श्वाप्रकैः, श्वापदः।

#### ७८। समोध्न्यकोपः काम मनमोः।

काम ଓ मनस् गक পर्ति थोकिल, समृ এই खरासित खरा वर्णत् लोभ इस। स्था, सकामः, समनाः।

#### ०६। तुमुनय।

কান ও ননত্শক পরে থাকিলে, ত্তরনূপ্রতারের অস্তা বর্ণের লোপ হয়। মুথা, দলুকান:, দলুমনা:।

#### ७७। चवश्वमः सत्ये।

কৃত্য প্রতার পরে থাকিলে, স্ববহ্মন্ শব্দের অস্তা বর্ণের লোপ হয়। যথা, স্ববহ্মইয়ন্, স্ববহ্মন্ত্রন্, স্ববহ্মনত্রন্

#### অলুক্ সমাস।

#### चलुगुत्तरपदे।

সমাস হইলে, কোনও কোনও স্থলে, উত্তর পদ পরে বিভক্তির লোপ হয় না।

# २। पञ्चम्याः सोकान्तिक टूरार्घ क्रक्रेभ्यः।

खाकार्थ, खखिकार्थ, मृदार्थ, उ कृष्टु मास्तर পरवर्शी पश्चमी विकक्षित लाभ इस ना। यथा, स्तोकान्युक्तः, खन्यान्युक्तः, खन्तिकादागतः, समीपादागतः, दूरादागतः, विप्रक्रष्टादागतः, क्रम्बान्युक्तः।

# पोजबाहोश्यसमोऽस्त्रससृतीयाया:।

क्षोज्ञस्, सहस्र, अस्त्रस्, तमस्, अः कञ्जस् माम्बरः शरदवीं स्तीया विक्रक्तिःद (तांशे रहेना। यथा, क्षोजसाक्षतम्, सहसाक्षतम्, काम्यसाकतम्, तमसोकतस्, व्यञ्जसाकतम्।

#### ८। पुंसीःतुजे।

श्वतुज শব পরে থাঁকিলে, पुस्स् শব্বের পর্বর্তী দ্রবীয়া বিভক্তির লোপ হর না। যথা, पुंसातुजः।

#### ৫। जनुषोऽसे।

स्था गम পर्त थांकिल, ससुस् गम्बर अत्रवहों स्तीया विस्कित लाभ इत्र ना। वथा, ससुसान्यः।

#### ७। चात्मनः पूर्यो।

পূর্ণবাচক শব্দ পরে থাকিলে, আন্তান্ত্র পরেবর্তী হারীয়া বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, আন্তান্তম্মনা, আন্তান্তম্মনা।

#### १। वैयाकरणाख्यायां चतुर्थाः।

ব্যাকরণের সংজ্ঞা বুঝাইলে, আনানেন শব্দের পরবর্তী বর্রভী বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, আনানেন্দর্ম, আনাননালা।

#### ४। पराच।

পরশব্দের উত্তরও হয় না। যথা, परस्तीपदम्, परसीभाषा।

#### ১। इबदन्तात् सप्तस्याः संचायाम्।

সৎজ্ঞা বুঝাইলে, হলবণীন্ত ও অকারান্ত শদের পরবর্তী सप्तमी বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, সুধিচিত:, বেৰিমাত:, অত্যাত্তী বিৰকাঃ, বনীন্ধিয়ুকা, কুটিচিয়াৰকাঃ।

#### **३०। चन्त मध्याभ्यां गुरौ**।

गुक् শব্দ পরে থাকিলে, আংল ও মধ্য শব্দের পরবর্তী सम्मी বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, আংল নুক:, মধ্যযুক্:।

#### >>। **चानुर्द्वमस्तकात् स्वाक्तादकामे ।** व वाक्रवाठक मस्त्र अत्रवहीं बन्नकी विकक्ति ताल क्या मा। वर्षा,

कब्रहेकार्तः, उरसिर्वोमा, शिरसिशिखः। काम गय शर्दा शिक्टिल इत्र । यथा, सुखकामः। मूर्द्धन् अमत्तक गरमद উठत् इत्र । यथा, मूर्द्वशिखः, मत्तकशिखः।

5२ । विभाषा बन्धे । बन्ध गम भरत विकल्म । यथा, इस्तेबन्धः, इस्तबन्धः, पदेबन्धः, पदबन्धः।

#### ১७। तत्पुरुषे क्रति बद्धलम्।

तत्मुक्ष मर्गारम, क्वत् প्रष्ठाव्यविष्णेव भिष्न भरत थीकित्न, सप्तमी विख्यित लूटक्द निव्यम नार्षे, अर्थीष, कान्य कांन्य कांन्य हाल क्व ना, कांन्य कां

#### ১৪। षद्याचाकोशे।

भर्त्सना त्याहरू, वची विचिक्तित सुक् इत्र ना। यथा, चौरस्य-कुतम्, दासस्यतनयः।

#### ১৫। पुत्रे विभाषा।

भर्त्वना तूर्याहेल, ও पुत्त गर्भ श्राद शांकिल, षष्ठी विश्वकित विकल्शि बुक् रत्र ना। यथा, दाखाःपुत्तः, दाबीपुत्तः; दृषक्याः-पुत्तः, दृषकीपुत्तः।

১७। वाच् दिश् पश्चद्धतो युक्ति दग्ल हरेषु। युक्ति, दग्ल, उ हर मन भरत थोकित्त, वथोक्किर्स, वाच् दिश्, उ पश्चत् माम्बर्ग छेठत्वर्शी षष्ठी विचिक्तित नुक् रह ना। यथी, वाचोयुक्तिः, दिशोदग्लः, पश्चतोहरः।

#### ५१। देवात् प्रिये।

দিব শব্দ পরে থাকিলে, ইব শব্দের পরবর্তী বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, ইবালাক্সিব:।

১৮ । शुन: शेफ पुच्छ लाष्ट्रलेषु संज्ञायाम् । संज्ञा तूकाहेत्त, এव९ शेफ, पुच्छ, ও खाष्ट्रल गक পরে থাকিলে, यन् गत्कित পরবর্তী বিভক্তির লোপ হয় না। যথা, शुनःशेफः, शुनःशुच्छः, शुनोलाङ्गलम्।

#### ५२। दिवस दासे।

संज्ञा বুঝাইলে, হান শব্দ পরে, হিন্ শব্দের পরবর্তী বিশুক্তির লোপ হর না। যথা, হিবীহান:।

#### २०। ऋतो विद्या गोत्रसब्बन्धात्।

विमानमृक्षवां छ । । अथा, क्षेत्रः पुक्रः, क्षेत्रद्वां विकित्रः । यथा, क्षेत्रः पुक्रः, क्षेत्रद्वेवासी; विद्याप्त्रः, पित्रद्वेवासी।

#### २५। विभाषा खरू पत्यो:।

खद्ध अपित नक् श्राद्ध विकाल्याः। यथा, मातः व्यक्ताः, मात्रव्यक्ताः; विद्याव्यक्ताः, विकाल्यक्ताः, विकाल्यक्ताः, विकाल्यक्ताः, वनान्युः-पतिः, ननान्युपतिः।

# २२। पात्रेसमिताद्यः कुत्यायाम्।

त्वा तूथाইলে, पालेसमित(१०) প্রভৃতির सप्तमी বিভক্তির লোপ

<sup>(99)</sup> पालेबिनताः, पालेबक्कवाः, गेड्रेन्यूरः, गेड्रेनहीं, गेड्रे-क्केडी, गेड्रेबिनिती, गेड्रेडप्रः, गेड्रेप्टः, गर्भेद्वग्रः, गोडेन्यूरः, नोडेपदुः, गोडेपब्डितः, गोडेप्रक्याः इत्वादिः।

हर ना। यथा, पालेसिनताः, भोजनकाले पाले एव सङ्गताः, नत कार्यकाले इत्सर्थः, गेहेम्बरः, गेहे एव मुरः, नत स्रन्यम इत्सर्थः।

#### মধ্যপদলোপী সমাস।

#### ১। बोप: कचिनाध्यस्य।

সমাস হইলে, কোনও কোনও স্থলে, মধ্য পদের লোপ হয়। যথা, ष्टतिस्यम् खोदनम् प्टतौदनम्, पनिस्यम् खन्नं पतानम्, शाक-प्रियः पार्षिवः शाकपार्थिवः, गत एव प्रत्यागतः गतप्रत्यागतः, कर्छे स्थितः कानोऽस्य कर्छकानः, उरिन स्थितानि नोमान्यस् उरिकोमा, शिर्वि स्थिता शिखास्य शिर्विशिखः. प्रपतितानि पर्यात्यसात् प्रपर्याः, चपगतः शोकोऽख चपशोकः, निर्गतं नसम् श्वस्मात् निमेत्तः, श्वभुक्तानि पर्णान्यनया खपर्णा, विगतीऽर्यः चस्मात् व्यर्धः, चतुनतोऽयौऽस्मिन् चन्दर्धः, ययाभूतोऽयौऽस्मिन् ययार्थः, प्रतिगतमत्त्रमस्मिन् प्रत्यत्तः, उद्मिनं सखमनेन उन्नसः, क्षधः इतं सुख्मनेन क्षधोसुखः, निर्मष्टं धनमस्य निर्द्धनः, विविधितं मनोऽख विमनाः, उत्काखितं मनोऽख उन्मनाः, मुखितं मनोऽख सुमनाः, सुवर्णविकारोऽलङ्घारोऽस्य सुवर्णालङ्कारः, स्वविद्यमानः पुन्तोऽख चपुन्नः, चविद्यमानः क्रोधोऽख चक्रोधः, एकाधिका विंग्रतिः एकविंग्रतिः, एकाधिका विंग्रत् एकविंग्रत्, चतुरिविका दम् चतुर्देम्, पञ्चाधिका दम् पञ्चटम्, पञ्चाधिका विंम्रतिः पञ्च-विंगतिः, पञ्चाधिका विंगत् पञ्चविंगत्।

#### २। एकस्यैका दशन।

द्यम् गब পরে থাকিলে, एक गब सान एका दत। यथा, एका-धिका दय एकादय।

#### ७। द्वारनोद्दीरा संख्यायाम्।

संख्यावाचक गफ शरत थोकित्न, दि स्रांत दा उ खष्टन् स्रांत खष्टा रत्न । यथा, दाधिका द्य दादय, दाधिका विंयतिः दाविंयतिः, दाधिका विंयत् दाविंयत्; खष्टाधिका दय खष्टादय, खष्टा-धिका विंयतिः खष्टाविंयतिः, खष्टाधिका विंयत् खष्टाविंयत्।

#### ८। वेद्वयस्।

ति चांत्न त्रयम् रहा यथा, त्राधिका दम त्रयोदम, त्राधिका विमितः त्रयोविमातिः, त्राधिका तिमन् त्रयस्त्रिमन्।

#### ৫। विभाषा चलारिं शत्रसतौ सर्वेषाम्।

चतारिंगत् প্रভৃতি (१६) शरंत थाकित्त, द्विश्वान द्वाः, विश्वान व्याः, अष्टन् श्वान स्थाः, विकत्त्रं द्वाः। यथा, द्वाधिका चताः रिंगत् दाचतारिंगत्, दिवतारिंगत्; द्वाधिका पञ्चामत् दाः पञ्चामत्, दिपञ्चामत्; व्ययञ्चतारिंगत्, विचतारिंगत्; व्याः पञ्चामत्, विपञ्चामत्; अष्टाचतारिंगत्, स्वय्वतारिंगत्; स्वष्टापञ्चामत्, अष्टपञ्चामत्।

#### ७। नाशीत शतादी बक्क बीही।

चगीति ও মন প্রভৃতি সংখ্যাবাচক শব পরে, বহুব্রীছি সমাসে, পূর্বোক্ত কার্যা হয় না। ষথা, ভ্রামীনিঃ, ল্যেমীনিঃ, ভ্রিমনন্, লিবস্কুন্, ভ্রিলাঃ, লিবরুবাঃ।

# १। एकोनस्वैकान्त्री विभाषा।

एकोन स्राप्त বিকপ্পে एकाच्न ও एकाच्न रहा। यथी, एकोनविंग्रतिः एकाच्नविंग्रतिः, एकाद्रविंग्रतिः।

( 98 ) चलादिंशत्, पञ्चाशत्, विन्तु, सप्तात, नरति ।

# পূর্ব্বনিপা<del>ত</del> ।

# ১। उपसर्जनं पूर्वम्।

मयात्म उपसर्ज्ञन अल्वत शृक्तिशां इह ।

#### २। प्रथमानिर्दिष्टं, समास उपसर्जनम्।

সমাসসূত্রে প্রথমা বিভক্তির সহঘোগে যাহার নির্দ্দেশ থাকে, তাহাকে ভবদর্কন কছে। অব্যরীভাবে অব্যয় প্রভৃতি পদ, তৎপুক্ষে দ্বিতীয়াদিবিভক্তাম্ব পদ, কর্মধার্টে বিশেষণ প্রভৃতি পদ, দ্বিপ্ততে সংখ্যাবাচক পদ, ভব্দজন। যথা, অব্যাঘীভাবে-কুল্ল समी-पस् उपनुत्तस्, ज्ञानमन्तिक्रस्य यथाज्ञानम्, वर्णानामानुपूर्वेत्रण चतुवर्गाम्, त्वरामधापरित्यच्य सत्वराम्, यामादिष्टः विहर्यामम् पार्टालपुत्रात् चा जापारिलिपुत्रस्, ससुद्रस् पारे पारेससुद्रम्। ज्थ्प्रकृत्य-सुखं प्राप्तः सुख्याप्ताः, चर्चं ब्रुचुः चन्नुभृचुः, वर्षे भोग्यः वर्षभोग्यः, पित्रा सनः पिष्टममः, खङ्गेन विक्ततः अङ्ग-विकलः, पाणिनिना प्रणीतम पाणिनिप्रणीतम्, भताय विदः भूतवितः, पुत्राय हितम् पुत्रहितम्, व्याच्चात् भयम् व्याच्चभयम्, ग्टहात् निर्मतः ग्टहनिर्मतः तरोः क्वाया तक्काया, अग्नेः शिखा च्यन्तिशिखा, शास्त्रे प्रवीगः जास्त्रप्रवीगः, पृब्वीह्यं कतम् पुर्व्योद्धकतम्। कर्म्यशंद्राय—नीखं उत्पत्तम् नीलोत्पत्तम्, नवः पञ्चवः नवपञ्चवः, सन् पुरुषः सत्युरुषः । विश्रटङ—पञ्चभिः गोभिः क्रीतः पञ्चगुः, त्रवाणां स्रोकानां समाद्वारः तिस्रोकी, त्रवाणां भुवनानां समान्तारः त्रिभुवनम्।

#### राजदन्तादिषु परम्।

राजदन প্রভৃতি ছলে ভদর্জন পদের প্রনিপাত হয়। যথা दनानां राजा राजहनः, वनस्य खये खयेवनस्।

#### 8 । वा कडारादर्यः कर्माधार्ये।

কর্মধারর সমাদে, জভাত প্রভৃতি (৭৫) পদের বিকপ্পে পূর্বনিপাত হয়। যথা, লভাত্যভাঃ, গললভাতঃ; অস্ত্রমিয়াঃ, মিয়াঅস্ত্রঃ; হত্ত্বপুদ্দঃ, যুদ্দহতঃ।

#### ৫। सप्तमीविश्रेषणे बद्धवीसी।

रक्त्वीकि मर्यास, सप्तस्यन्त ७ विशेषण পদের পূর্কনিপাত হর। यथा, मश्रमाख-कारोकालः, उरसिकोमा ; विश्विश-दीर्घवाद्धः, महाबकः।

#### ७। विभाषा प्रियस्य।

দিয় শন্দের বিকম্পে পূর্কনিপাত হয়। যথা, ক্রভ্রিয়া, দিয়া ক্যভঃ।

# १। सप्तमी परा गडुाहै:।

गङ् প্রভৃতির যোগে, सप्तस्यान পদের পরনিপাত হয়। যথা, गङ्घः करादे यस गङ्करादः, गङ्घः धिरसि यस गङ्घिराः।

#### ৮। प्रहर्णाययः।

प्रहर्णकाचक शत्त्र व्याति, सप्रस्यन शत्त्र श्रामिशे कर। यथी, प्रक्रं पाणी यस क्रस्त्रपाणिः, दण्डः पाणी यस टण्ड-पाणिः, खड्रः करेयस खडूकरः, धनुईस्तेयस धनुईसः।

#### ৯। निष्ठा पूर्वी।

निष्ठनिक्शन श्राप्त शृक्तिशां इत्र । यथा, सतकद्वां, ऋधीत-व्याकरणः, भिक्तितेवनः, धतायुधः, उड्डतदण्डः, भग्नर्धः, पक्रकेषः ।

(१८) कडार, खञ्ज, काय, कुग्छ, गौर, एइन, भिन्नुक, पिङ्क, पिङ्कल, ततु, जठर, विधर, वर्षर इत्यप्रदि।

#### ५०। वाहिताम्यादिषु।

चाहिताम्न প्रवृष्ठि युल निकांनिक्शत श्रमत विकल्भ शूर्स-निश्रीठ रत्न। यथी, चाहिताम्बः, चम्ब्राहितः; नातसुद्धः, सुखजातः; नातपुच्चः, प्रस्नजातः; नातदन्तः, दन्नजातः; नातस्मत्रः, युत्रजातः; तैनपीतः, पीततैनः; प्रतपीतः, पीतप्ततः; मदापीतः, पीतमद्यः; सुरापीतः, पीतसुरः: भाव्यौढः, जङ्भाव्यः; चर्षगतः, गतार्थः; प्राप्तकानः, कानप्राप्तः; सुद्धादानः, उद्यतासिः।

#### **३३। अल्पखरं इन्हे**।

हम्प्रमात्म,, ज्ञाल कांकृष्ठ ज्ञाल्यवर्ति भिष्ठे यथा, ताचतमानी, गजतरङ्गी, मञ्चद्वन्दुभी, स्नाहभिनिन्दी, गोमहिषी, दंगमम्बी, इंससारसी, काकको किली, व्यस्तमधुरी, तिक्तकषायी।

#### . ১१। खराद्यदनं साम्ये।

यतमायान्द्रत्त, यत्नि व्यकातास श्राप्त शृक्षिमशां हत। यथा, व्यन्तमानी, व्यन्तिती, व्यनसम्बन्धी, व्यन्तसम्बन्धी, व्यनसम्बन्धी, इन्द्रबङ्की, ईश्वभवी, उडुखरी, ऊईनिका।

#### ५७। दुदल्ला ।

बदमायाद्यतः, देकादांष्ठ ७ উकादांख भागतः भृविनिभाउ दः। यथा, हरिसरो, रविबुधी, पटुग्रुक्ती, स्टुडढो।

# **58। 'बश्यक्तिश्च।**

चा भ्यक्ति (वांधक পদের পূর্বনিপাত হয়। यशा, मातापितरी, तापस्याचकी।

٤

# ५८। जम्बर्धा

लद्दर्गिक श्रिक्त श्रृ किन्शिष्ठ इतः। यथा, क्रामकामम्, नव-नीजी, वज्यक्रेयुर्दे।

#### ১७। भाता च जायान्।

রোগভুণত্বাচক পদের পূর্মনিপাত হয়। যথা, युधिविराज्युनी, স্থানাম্ব্যায়ত্ত্ব, বলইবজন্মী।

#### ५१। ऋतु नचत्राणामानुपूर्व्याण।

श्रुवाठक छ नक्कववाठक পদের, আনুপূর্ব্ব্য অনুসারে, পৌর্ব্বাপর্য-নিয়ম। যথা, श्रुवाठक—इसनिशिधरी, शिशिदवसनी, वसन-निदाधी; नक्कववाठक—खिन्नीभरखी, क्रसिकारोहिख्यी। अक्कवमांगाइल এই নিয়ম।

#### ১৮। वर्णानाञ्च।

ব্রাহ্মণাদিবর্ণবাচক পদেব, আনুপূর্ব্ব্য অনুসারে, পৌর্ব্বাপর্য্যনির্ব্য । যথা, রাস্ক্রায়ান্তানিয়বীয়াসমূহাঃ।

#### ১৯। अनियमो धमादी।

धर्मा श्रृहित श्राह्मा (भोकां भाषात्र निवय नाहे। यथा, धन्मां धर्में खर्ष धन्मों), कामायों, कर्य कामों; प्रदायों, कर्य प्रद्यों, वर्य क्यों, वर्ष प्रदी; वर्ष क्यों, वर्ष क्यां, वर्ष क्यों, वर्ष क्यां, वर्ष क्यों, वर्ष क्यां, वर्ष क्यों, वर्ष क्यां, वर्यं, वर्ष क्यां, वर्यं, वर्यं, वर्यं, वर्ष क्यां, वर्यं, वर्यं, वर्यं, वर्यं, वर्यं, वर्यं,

#### সর্ব্যমানশেষ।

# . ১। समासवतुर्विध:।

পাণিনিমতে স্মাস অন্ত্ৰীধাৰ, বন্যুক্ষ, বন্ধনীদি, হৃদ্ধ, এই চতুৰ্বিধ; কৰ্মাধাৰে ও হ্বিয় বতর স্মাস বলিয়া পরিগণিত নচে, উহারা তৎপুক্ষের অন্তর্ভূত। কোনও কোনও মতে, কৰ্মাধাৰে ও হ্বিয়, বতর স্মাস বলিয়া নির্দিষ্ট; তর্মতে স্মাস যড়্বিধ।

# पूर्णपदायप्रधानोऽव्ययोभाव: ।

অবাগীভাব সমাসে, পূর্বাপদার্থ প্রধানরূপে প্রভীয়মান হয়। ত্র্য-ফ্রেন্, যথামারি, ইত্যাদি ছলে, ত্র্য, যথা, প্রভৃতি পূর্বা পদার্থ প্রধান ভাবে প্রতাগমান ফুলা থাকে।

#### ७। उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः।

তংপুক্র নমানে, উত্তর পদার্থ প্রধান ভাবে প্রতীয়মান হয়। **নছ-**ক্সাযা, **নত্নাললন্,** ইত্যাদি স্থলে, ক্সাযা, লল্প, প্রভৃতি প্রপদার্থ প্রধান ভাবে প্রতীয়মান ইইয়া থাকে।

#### 8 । अन्यपदार्धप्रधानो ब्झ्वीहि:।

বহুব্রীহি সমাদে, সমস্যামন কোনও পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভারমান না হইরা, তদুপ্রক্তি অন্য পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভারমান হয়। बद्धधनः, दीर्घनाद्धः, ইত্যাদি ছলে, বদ্ধ, ঘদ, दीर्घ, बाह्य, প্রভৃতি কোনও পদার্থই প্রধান ভাবে প্রভীরমান হয় না; কিন্তু বহু ধন এ দীর্ঘ বাহু বিশিষ্ট ব্যক্তিরপ অন্য পদার্থ প্রধান ভাবে প্রভীরমান হইরা থাকে।

#### ৫। उभयपदार्घप्रधानो दन्दः।

দ্বন্ধ সমাদে, দমদ্যমান উভর প্রার্থই প্রধান ভাবে প্রতীয়মান হর। অস্বদলী, বালবদালী, ইত্যাদি স্থলে, অস্ব, দল, বাল, বদাল, প্রভৃতি যাবতীর প্রদার্থই প্রধান ভাবে প্রতীয়মান হইয়া থাকে।

কিন্তু, সকল স্থলে এই সকল লক্ষণের নমাবেশ হয় না, স্থলবিশেষে বাভিচার লক্ষিত হইরা থাকে। सমনীবাৰহন্, ভক্মন্;
লক্ষ্ম্, ইত্যানি অব্যরীভাবে, পূর্ব্ব পদার্থ প্রধান ভাবে প্রতীয়মান
না হইয়া, অন্য পদার্থ প্রধান ভাবে প্রতীয়মান হইয়া থাকে। জক্ষিস্থল: আ্যামল সমিনিক্ষ: ইত্যানি তংপুক্ষে, উত্তর পদার্থ প্রধান ভাবে
প্রতীয়মান না হইয়া, অন্য পদার্থ প্রধান ভাবে প্রতীয়মান হয়।

हिलाः, पञ्चवः, इंडांनि र्रष्ट्योहिएड, ख्या लनार्थ প्रशांत छारत প্रভीयमान ना इहेगा, उंड्य लनार्थ भ्रेशन डार श्रेडीयमान हत । इंससारसम्, दंधमध्यकम्, हेडांनि हृत्यः, उंड्य लनार्थ श्रेशन डार्य श्रेडीयमान ना इहेगा, उदम्माहादक्षण खना लनार्थ श्रेशन डार्य श्रेडीयमान इत्र। मृज्तार, श्रृर्व्वाक लक्षण मकल श्रेष्टिक खिलशास निर्मिष्ठे; खर्थार, श्रीय मकल स्टल उत्तर लक्षण्य म्यार्थण ह्य, कान्य कार्य स्टल इत्र ना, अहे जार्थणां, अखना, खानक, पायेण पृद्धपटार्धप्रधानो इद्ययोगायः, प्रायेणोत्तरपटार्धप्रधानः तत्सुक्यः, पायेणात्यपटार्धप्रधानो बद्धश्रीहिः, प्रायेणोमयपदार्धम् प्रधानो हृद्यः, अहे क्रल, ख्यायोखायश्रुं उत् लक्ष्यण प्रायेण अहे लक्ष्य राखना कृद्धिश थः रुक्त ।

বন্ধতন্ত, ততৎসমাদের অধিকারে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, দেই সমুদর ততৎসমাসসংজ্ঞাভাজন; অর্থাৎ অব্যায়ী-ভাবপ্রকরণে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, উহাদের নাম অব্যায়ীভাব; তৎপুক্ষপ্রকরণে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, উহাদের নাম তৎপুক্ষ; বছব্রীইপ্রকরণে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, উহাদের নাম বহুব্রীই; দক্ষপ্রকরণে যে সমস্ত সমাস বিহিত ছইয়াছে, উহাদের নাম বহুব্রীই;

ভাষমান আছিল দানী হবং, এই লক্ষণে উভর শব্দ সমাক্ সংলগ্ন নহে। উভর পদে থেকপ ছব্দ সমাস হয়, বহু পদেও সেইক্লপ হইরা থাকে। ফলতঃ, কেবল অব্যারীভাব সমাস দুই পদে হয়, দ্বন্ধ ও বছাব্রীহি দুই পদে ও বছুপদে, ভংপুক্রম প্রায় সকল স্থলে দুই পদে হইরা থাকৈ, কোনও কোনও স্থলে বহু পদেও দেখিতে পাওরা যার। বস্তুভঃ, ছব্দক্ষণে উভর্শক্ষ্লে অনেকশ্বনিবেশ আবশ্যক।

# % । वक्तवीहिदिवधसातु गरीवचानोऽततु गरीवचा-

ৰক্তরীক্তি দিবিধ, নত্যুবাষ্ট্রিরান ও অনত্যুবাম্ট্রিরান। যে স্থলে, সমাসবাধিত অন্য পদার্থের ন্যায়, সমস্যমান পদার্থেরও পরস্পরার ক্রিরাপ্রভৃতির সহিত অন্থর হয়, উহাকে নত্যুবার্থ-বিরান, আর বে স্থলে সমস্যমান পদার্থের ক্রিরার সহিত অন্থয় হয় না, উহাকে অনত্যুবার্থবিরান বলে। অন্তন্মরানান্য ইতা দি স্থলে, আনমনক্রিরাতে লমুকর্ণবিশিষ্ট ব্যক্তির অন্যর হইতেছে, কিন্তু লমু কর্ণেরও পরস্পরায় অন্ধর আছে, এজনা উহা নত্যুবার্ম-বিরান; আর, ত্রুমন্ত্র্মান্য, ইত্যাদি স্থলে, আনমনক্রিরাতে দৃষ্টসমুদ্র ব্যক্তির অন্ধর আছে, কিন্তু সমুদ্রের নাই, এজনা উহা অনত্যুবার্মবিরান।

#### १। समानाधिकरणपद्घटितो व्यधिकरणपद्घटि-'तस्र|

बद्धवीहि श्रेकांतांखरत विविध्त समानाधिकरणपटघटित ७ व्यधि-करणपटघटित । विराधित ७ विराधित श्राप्त व्यक्ति विक्र, छैश समानाधिकरणपटघटित ; यथा, नीलाम्बरः, दोर्घबाद्धः, कृष्ण-कायः रेठाांति ; य क्राल खनाविध्व श्राप्त वस्त्रुवीरि रह, छैशांक व्यधिकरणपटघटित वरल; यथा, टब्हुपाणिः, धनुह्मेनः रेठाांति।

# তদ্ধিত—পরিশিষ্ট

১। पुर्वस्तिकादिषु भाषितपुंस्कस्य । तिवन्, त्वन्, चरङ्, जातीय, देशीय, ও माद्य প্রতায় পরে, छाविष्ठ शृश्क खीलिक नास्त्र न्यं क्षाव रहा। यथी, खत्तरस्था दियः छत्तरतः, छत्तरस्यां दिशि छत्तरतः, मर्कस्यां दिशि सकेत्र, अपिता भूतपृष्ट्यो सपितचरी, जात्या बाह्यायी बाह्यायजातीया, देषदूना परिखता परिखतदेशीया, कुत्सिता पाचिका पाचक-पाशा।

#### २। कल्यादिषुच।

कत्य, रूप, तर, अ तम প্रভाइ शद शिवल्यू रह खीलिक मद्भव पुंवद्वाव रह। यथी, देवदूना पिर्देशता परिस्तित स्था, प्रयत्ता गायिका गायकरूपा, द्रयमनकोर्तिस्थेन निषुणा निषुणतरा, द्रयमासामितिस्थेन चपना चपनतमा ।

# ७। दूबूपोविभाषा।

कल्प श्रम् अरुठि शरत, स्विष्ट्र श्रीतिस्त्र विकारण पुंत्रहाव रत्न। यथी, क्षेत्रहूना विद्वा विद्या विद्वा विद्या व

(१७) বৈরাকরণেবা উবস্তের পুংবভাব নিথেশ করিরা বিকম্পে উপের হুষ্বিধান করেন; আর, পুংবভাবের অভাবপক্ষে ঈপের, ছলবিশেষে বিকম্পে ও বলবিশেষে নিভা, হুষ্বিধান করিয়া থাকেন; তদনুসারে, বিহুদ্মিন্দা, বিহুদ্মীন্দ্দা, বিহুদ্ ক্রন্থা এবং সাল্ধাত্যক্ষা, সাল্ধাত্যক্ষা এইরপ ইইতে পারে।

#### 8। शसि बहुए

यम् প্রতার পরে, বস্থর্থ ও অপ্পার্থ ভানিতপুৎস্ক ব্রীলিজির, पुंबद्गाव হর। যথা, बङ्गीभ्यो देहि बङ्क्यो देहि, जलाभ्य देहि अल्यमो देहि।

# ৫। त्वतनोर्गणक्वनस्य।

त ଓ तन् श्रेष्ठात भरत, श्रेष्ठाठक स्विष्ठभू के ब्रीनिस्त्र पुंष् द्वान रत्र। यथी, निपुणाया भावः निपुणातम्, निपुणाताः चपनाः भावः चपनतम्, चपनताः नेधाविन्या भावः नेधावित्सः, मेणः विताः, प्रियमाहिन्या भावः प्रियमाहित्सः, प्रियमाहित्सं ।

B2461!

मञ्जूर्ग

PRINTED BY YAJNESWARA MUKHOPADHYAYA,

AT THE SANSKRIT PRESS,

NO. 62, AMHERST STREET, CALCUTTA.

1888.